छायाचित्र:-१

अध्याय - ५

<u>मंज़ूर एहतेशाम की कहानियों मे सामाजिक सद्भावना</u>

मंज़ूर एहतेशाम जी की कहानियों में सामाजिक सद्भावनाओं को निरूपित करने से पूर्व इनकी कहानियों के परिचय को जानना आवश्यक है । इनके कहानी संग्रहों की प्रत्येक कहानी अपने आपमें एक सफल कहानी सिद्ध हुई है। इनकी कहानियों में सद्भावनाओं के सभी तत्व विद्यमान हैं। प्रत्येक कहानी अपने आपमें एक न एक सद्भाव को संजोए हुए है चाहे वो पारिवारिक सद्भाव हो या सामाजिक सद्भाव हो। इन्होंने अपनी कहानियों में धार्मिक और सांस्कृतिक सद्भावनाओं को भी स्थान दिया है जिससे इनकी कहानियाँ मनोरम और रोचक लगने लगती है।

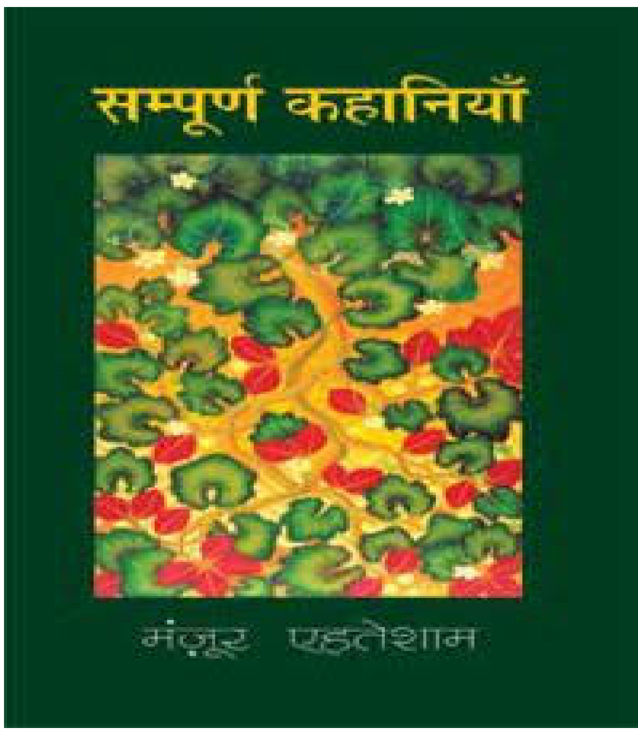

<u>छायाचित्र:-२</u>

भाषा के आधार पर तो इन्होंने अपनी कहानियों में पाश्चात्य भाषा का खुल कर प्रयोग किया है तथा कई स्थानों पर इन्होंने मुहावरेदार भाषा का प्रयोग करने के साथ - साथ विचारात्मक भावों का भी प्रयोग किया है। इन सभी सद्भावनाओं के साथ - साथ एहतेशाम जी ने अपनी रचनाओं में राष्ट्र के प्रति सद्भावना को भी बहुत ही सुन्दर रूप प्रदान किया है। जिनको पढ़ते ही पाठक के अन्दर राष्ट्र प्रेम की भावना जागृत हो जाती है । इनकी सम्पूर्ण कहानियों का परिचय इस प्रकार है :-

-: कहानियों का संक्षिप्त परिचय :-

रमज़ान में मौत :-

यह कहानी एक ऐसी कहानी है जो कि मुस्लिम रीति-रिवाजों को दर्शाती है। इसमें लेखक पाठकों को यह बताना चाहते है कि रमज़ान एक ऐसा पाक महीना होता है जिसमे जो भी व्यक्ति रोज़ा और नमाज़ पूरे नियम के साथ अता फरमाता है उसका सम्पूर्ण जीवन खुशहाल जीवन बन जाता है।

एहतेशाम जी ने इस कहानी की रचना करते वक़्त पारिवारिक सद्भावना का ध्यान रखा है । इसमें एक ऐसा परिवार है जो कि रमज़ान में एक दूसरे का सामान्य दिनों से ज्यादा ख़्याल रखते हैं और ज़फर मियाँ जब शहनाज़ से खाना तैयार होने का पूछते हैं तो रियाज़ का ख़्याल भी उनको आता है और वह कहते हैं कि रियाज़ का तो आज रोज़ा था वह तो सूख गया होगा। इससे पारिवारिक सद्भावना का तत्व प्रत्यक्ष रूप से उभरकर पाठक के सामने प्रस्तुत हो जाता है कि एक परिवार में सब कैसे एक दूसरे की परवाह करते हैं।

इस आलोच्य कहानी में एहतेशाम जी ने रमज़ान के दिनों को इतना पाक और पवित्र माना है कि यदि इन दिनों में किसी भी व्यक्ति का इंतकाल हो जाता है तो वह व्यक्ति अल्लाह की पनाह पाता है और उसकी मौत को एक सफल जीवन जीने वाले व्यक्ति की तरह समझा जाता है। उस व्यक्ति के लिए समाज के लोग ये कहते हैं कि इसकी मृत्यु रमज़ान में हुई है यह बहुत ही अच्छा व्यक्ति था।

इस प्रकार इस कहानी में धार्मिक, सामाजिक एवम् पारिवारिक सद्भावनाओं का बहुत ही सुंदरतम चित्र पाठकों के सामने प्रस्तुत किया गया है। जिससे पाठक इनकी यह कहानी पढ़कर मुस्लिम धर्म की महत्ता को जान सकता है तथा सामाजिक और पारिवारिक सद्भावना से रूबरू हो सकता है। इन सभी सद्भावनाओं की पुष्टि हम अग्रिम अनुच्छेदों में करेंगे।

खेल :-

यह एक ऐसी कहानी है जिसमें मंज़ूर एहतेशाम जी ने सम्पूर्ण रूप से पारिवारिक सद्भावना का वर्णन किया है। इस कहानी में एकल परिवार में रह रहे बेटी एवं पत्नी के प्रेम को दर्शाया गया है जिससे शरीफ और पम्मों के पारिवारिक प्रेम का साफ पता चलता है एवम् पम्मों जब शरीफ को उसके पिता बनने की खुशखबरी देती है तो शरीफ बहुत ही उत्सुकता में होने वाले बच्चे का नाम सोचने लगता है।

पारिवारिक सद्भावना के साथ - साथ एहतेशाम जी ने समाज में रह रहे लोगों के साथ आपस में एक व्यवहारिक सद्भाव समाहित किया है जो कि पारिवारिक सद्भावना का रूप लिए हुए है इसमें कई स्थानों पर एहतेशाम जी ने यह दर्शाने का प्रयास किया है कि समाज में रह रहे लोग एक दूसरे के संग चाहे वह सुख के क्षण हो या दुख के पल सभी में साथ देते हैं।

एहतेशाम जी ने इस कहानी की रचना करते हुए दो सद्भावनाओं को मुख्य रूप से ध्यान में रखा है एक तो सामाजिक सद्भावना और दूसरी पारिवारिक सद्भावना जिनके पुष्टि तथ्य आगे के अनुच्छेदों में प्रस्तुत किए जाएंगे।

छोटी - छोटी चीजें :-

छोटी-छोटी चीजें मंज़ूर एहतेशाम जी की एक ऐसी रचना है जिसमें छोटी छोटी चीजों को महत्व प्रदान किया गया इनके द्वारा इस कहानी में एक पारिवारिक परिदृश्य को दर्शाया गया है जिसमें नायक के द्वारा किए गए प्रत्येक छोटे- बड़े कामों का विवरण दिया गया है।

मंज़ूर एहतेशाम जी ने इस कहानी में पारिवारिक परिदृश्य अथवा पारिवारिक सद्भावना को प्रस्तुत किया है जोकि नायक एवं नायिका के द्वारा फलीभूत होता रहता है एवं यह पता चलता है कि इस कहानी के पात्र किस तरह से एक दूसरे के प्रति सद्भाव रखते हैं तथा अपने पुत्र संजू के लिए दोनों का सद्भाव दिखलाई पड़ता है।

छोटी छोटी चीजें नामक शीर्षक कहानी एक ऐसी पारिवारिक कहानी है जो कि पति और पत्नी के बीच कभी - कभी हो रहे द्वेष को दर्शाती हुई प्रतीत होती है तो कभी रोमा और संजू, मुख्य पात्रों के द्वारा इनके एक दूसरे के प्रति प्रेम को व्यक्त करती है।

इस कहानी में लेखक ने अपनी आदतों या कहें अपने व्यवहारिक स्वभाव को इस कहानी में डालने का प्रयास किया है जिसमें उन्होंने पाश्चात्य भाषा की शब्दावली का प्रयोग किया है और कहीं - कहीं पर इन्होंने सामाजिक सद्भावना के पुट भी समाहित किए हैं और इनकी 'छोटी - छोटी चीजें' कहानी के शीर्षक का यह अभिप्राय है की परिवार एवं समाज में कई सारी छोटी छोटी चीजें कहानी रूपी समस्याएं लोगों के जीवन में अक्सर आती जाती रहती हैं परन्तु व्यक्ति को उसका डट कर मुकाबला करना चाहिए ना की उससे दूर भागना चाहिए।

एहतेशाम जी ने इस प्रसिद्ध कहानी में पाठक के मन को आकर्षित करने के लिए कई तरह के तत्वों को डाला है तथा इसकी रचना करते हुए इन्होंने सामाजिक सद्भावना, पारिवारिक सद्भावना एवम् भाषाई सद्भावना का प्रयोग किया है।

लेखक ने इस कहानी के परिवार में जिस तरह से आर्थिक तंगी आती है और उस स्थिति में व्यक्ति अपना जीवन जिस परेशानियों में गुजारता है, उस परिस्थिति को इस कहानी के द्वारा पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इस में व्याप्त पारिवारिक सद्भावना की पुष्टि तथ्यों का हम आगे विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे।

पुल पुख्ता :-

यह कहानी एक ऐसे देशकाल वातावरण का निर्माण करती है जो कि प्रकृति के प्रकोप को दर्शाती है तथा इसमें एक परिवार की परिस्थिति को दर्शाया गया है कि उस परिवार में कितने लोग है जो आपसी प्रेम-भाव तथा अन्य परेशानियों का कैसे मिलके सामना करते हैं।

इस कहानी में एहतेशाम जी ने पारिवारिक सद्भावना के साथ - साथ कुछेक स्थान पर भाषाई सद्भावना का भी भरपूर प्रयोग किया है जिसमें उन्होंने कहानी के पात्रों के बीच आम बोलचाल के व्यवहार में अंग्रेजी शब्दावली का बहुत ही व्यवहारिक प्रस्तुतीकरण किया है। जिसके पुष्टि तथ्य सद्भावना के बिंदुओं में आगे देखने को मिलेंगे।

बावड़ी :-

एहतेशाम जी ने इस कहानी में नायक के द्वारा यह दर्शाने का प्रयास किया है की समाज में रह रहे लोगों में कितना अंधविश्वास है जिसके कारण कल्लू पहलवान को अधिक महत्व दिया जाता है क्योंकि वह एक ऐसा व्यक्ति है जिसे तैरना आता है और उसे भूतों से डर नहीं लगता।

इस कहानी में नायक एक सामान्य जीवन यापन करता है तथा समाज में रह रहे लोगों के साथ सामाजिक व्यवहार भी करता है जिसमें समाज के लोगों पर आ रही समस्याओं का समाधान निकालने के लिए पीछे नहीं आता हमेंशा उनकी समस्याओं का समाधान करने के लिए जद्दोजहद में लगा रहता है परंतु राजनीतिक सत्ता के कमजोर होने के कारण समस्याएं जो समाज में उत्पन्न हो रही है उन्हें जैसे का तैसा छोड़ने पर मजबूर हो जाता है तथा वहाँ के परिवेश को स्वीकार कर लेता है।

एहतेशाम जी ने इस कहानी में सामाजिक सद्भावना का भरपूर प्रयोग किया है जिसमें नायक के द्वारा समाज में रह रहे लोगों पर आपत्ति आने के पश्चात् नायक उस समस्या का समाधान निकालने के लिए समाज में रह रहे लोगों की मदद करने के लिए तत्पर रहता है तथा सबके मना करने के बावजूद भी की बावड़ी में भूत है उसके अंदर जाने के लिए तैयार हो जाता है। इसे देख समाज में रह रहे लोग उसे मना करते हैं और कल्लू पहलवान के आने का इंतजार करने के लिए क्या है। तथा कल्लू पहलवान की समाज के लोगों को डराने में कसर नहीं छोड़ता।

इस कहानी के सामाजिक एवं धार्मिक सद्भावनाओं की पुष्टि तथ्यों का वर्णन आगे विस्तार पूर्वक किया गया है जिसमें इस कहानी में व्याप्त सामाजिक एवं धार्मिक सद्भावना कि तथ्यों के माध्यम से पुष्टि की जाएगी।

बशीर खां, मालिक मॉडर्न केनिंग आर्ट :-

इस कहानी में एहतेशाम जी ने बशीर खां द्वारा एक सामाजिक व्यक्ति को दर्शाने का प्रयास किया है जिसमें बशीर खां एक ऐसा पात्र है जो समाज में रह रहे लोगों के साथ ऐसा व्यवहार करता है जैसे कोई व्यक्ति अपने परिवार के सदस्यों के साथ करता है।

बशीर खां इस कहानी का एक ऐसा पात्र है जिसके कोई औलाद नहीं परन्तु वह समाज में रह रहे लोगों के बच्चों से बहुत प्रेम एवम् सद्भावना रखता है तथा त्योहारों पर सबको घुमाने ले जाता है और आए दिन बच्चों को कुछ न कुछ खिलाता -पिलाता रहता है।

यह कहानी एक ऐसी कहानी है जिसमें जानवर के साथ भी सद्भाव को दर्शाया गया है जिसमें साहू से बशीर खां को लगाव हो जाता है और इतना लगाव हो जाता है कि वह उसकी कुर्बानी देने की मंशा छोड़ देता है।

सद्भावना के आधार पर इस कहानी में पारिवारिक सद्भावना के साथ - साथ धार्मिक एवम् सामाजिक सद्भावना का भरपूर प्रयोग किया गया है जिनकी पुष्टि तथ्यों की पंक्तियों का विस्तार आगे सभी पुष्टि तथ्यों सहित व्याख्यायित किया जाएगा।

स. हरिश्चंद्र के जीवन की वह शाम :-

इस कहानी में एहतेशाम जी ने एक पिता के पुत्र प्राप्ति की खुशी को दर्शाया है जिसमें 'हरिश्चंद्र' की चार पुत्रियों के पश्चात् अब एक पुत्र हुआ है और उसकी खुशी इस पिता को इतनी है कि उसे अपनी उम्र और कम लगने लगी है।

एहतेशाम जी ने इस पात्र की आर्थिक स्थिति को भी दर्शाया है कि इस कहानी का पात्र हरिश्चंद्र कितना सबल है जिसके घर में अधिकतम वस्तुएं ब्रांड का नाम लिए हुए हैं। और इनकी इस खुशी को बांटने के लिए इनके सभी मित्र सिद्दीकी, माथुर, जैन, शर्मा जी, गुप्ता साहब, बर्मानी एवम् दफ्तर का चपरासी भी इनके घर इस खुशी में शामिल होने के लिए पहुंच चुके हैं। इससे यह पता चलता है कि हरिश्चंद्र का सामाजिक व्यवहार कैसा है।

इनकी इस पुत्र प्राप्ति की खुशी में हमें सामाजिक सद्भावना देखते ही प्राप्त होती है जब हरिश्चंद्र बाज़ार में जाकर खरीदारी करते हैं और मित्तल नमकीन भंडार वाला सेठ उनकी इस खुशी को अपने घर की खुशी मानते हुए उनसे किसी भी चीज के पैसे नहीं लेता।

एक फिल्म पोस्टर के हवाले से:-

यह कहानी एक ऐसी कहानी है जो कि हमें इसके मुख्य पात्र के कॉलेज के दिनों में ले जाती है जिसमें वह पात्र अपने आप को उस जगह पाता है जहाँ वह कुछ सालों पहले था। सिनेमाघरों के उन पोस्टरों को देखकर वह अपने बीते हुए दिनों को याद करता है तथा उसका एक मित्र जिसका नाम कर्नल होता है उसकी दी हुई सलाह को मानता और गहराई से समझता भी है। इस कहानी में कर्नल एक ऐसा विद्यार्थी है जिससे सभी लोग घुले मिले हुए हैं तथा कर्नल की मृत्यु के बाद लेखक 15 साल के पश्चात् उस दृश्य को दोबारा देखने का प्रयास करता है जोकि उसके स्कूल तथा कॉलेज के दिनों में हुआ करते थे यह दृश्य उसके सामने तब उभरता है जब वह रास्ते में चलते हुए सिनेमाघरों पर लगे हुए फिल्म के पोस्टर्स देखता है तथा वह पोस्टर्स उसके बीते हुए स्कूलों तथा कॉलेजों के दिन याद दिलाते हैं।

लेखक को सिनेमा घर पर एक फिल्म का पोस्टर ऐसा दिखलाई देता है जोकि 15 साल पहले उसने कर्नल के साथ एक शाम तपती धूप में देखा था। यह सोचकर लेखक यह कहता है कि जब भी गर्मियाँ आएंगी मैं हमेंशा कर्नल को याद करता रहूँगा इस आधार पर यह प्रतीत होता है कि इस कहानी में लेखक ने एक सामाजिक सद्भाव स्थापित करने का प्रयास किया है तथा भाषाई सद्भाव को भी विशेष स्थान दिया है।

<u>अंधेरे में:-</u>

यह कहानी अपने आप में एक फैंटेसी को लिए हुए है जिसमें ऐसा प्रतीत होता है कि इसका मुख्य पात्र एक अलग ही दुनिया में खोया हुआ है जो कि एक ऐसी दुनिया है जिसमें अपनी जिंदगी से निराश और उदास लोग हैं तथा वह रोज़ रात में एक जलसे की तरह निकलते हैं और अंधेरे में कहीं गायब हो जाते हैं जलसा निकलते समय हमेंशा केवल मुख्य पात्र को ही दिखलाई पड़ता है उसकी पत्नी रेहाना को नहीं जोकि उसके बगल में ही सोई होती है।

इस कहानी में रेहाना के द्वारा पारिवारिक सद्भावना को दर्शाया गया है जोकि अपने पति का ख्याल रखती है और रात में जब वह उस जलसे को देखकर उठ जाता है तो वह अपने पति को डॉक्टर के पास भी लेकर जाती है। ऐसा उसके साथ रोज़ होता है जिससे यह सिलसिला उसकी पत्नी के लिए आम हो जाता है और वह अपने पति पर ध्यान देना कम कर देती है जिसका परिणाम यह होता है कि एक दिन उसका पति सोई हुई रेहाना तथा बेटे बिट्टू को छोड़ कर उस जलसे में जाकर शामिल हो जाता है और कभी वापस नही आता।

एक जगह तो लेखक ने यह दर्शाने का प्रयास किया है कि रेहाना के पति के ऊपर कोई ऊपरी साया है जिस को दूर करने के लिए कुरान की तरकीबें आजमाइश की जाती हैं जिससे कि उसे वह जलसा ना दिखाई दे जो कि उसे हर रात ढ़ोल नगाड़े बजाता हुआ घर के बाहर से जाते हुए दिखता है। इससे यह प्रतीत होता है कि इस कहानी में धार्मिक सद्भावना के साथ-साथ पारिवारिक सद्भाव का भी भरपूर प्रयोग किया गया है।

<u>जश्न :-</u>

इस कहानी में जश्न एक ऐसा जश्न है जो कि मनुष्य की मृत्यु के बाद मनाया जाता है जब लोग मृत्यु के पश्चात् एक मुर्दे को शमशान घाट तक ले जाते हैं उस परिस्थिति का वर्णन यहाँ लेखक ने किया है तथा हिंदी के व्यंजन वर्णों का इस प्रकार से प्रयोग किया है जैसे कि वे केवल वर्ण नहीं एक पात्र हों।

इस कहानी में एक मृत शरीर को किस तरह से संदूक में बंद किया जाता है तथा उसे जब दफनाया जाता है तो क्या-क्या विचारधाराएं लोगों में होती हैं उसको दर्शाया गया है और साथ ही साथ यह भी दिखलाया गया है कि किस तरह से कब्रिस्तान में लोग एक मृत शरीर के साथ किस-किस तरह की क्रियाएं करते हैं एवं उन क्रियाओं को समाप्त करने के पश्चात् जब वह सब घर लौटते हैं तो वही अपना साधारण जीवन जीने लगते हैं। इस कहानी में भाषाई सद्भावना का बहुत ही सुंदरतम रूप हिंदी वर्णो के माध्यम से दर्शाया गया है।

घेरा :-

मंज़ूर एहतेशाम जी की इस कहानी में शब्बो पात्र एक ऐसी पात्र है जो कि आधुनिक नारी का रूप लिए हुए हैं जो बहुत ही चंचल मन की है तथा उसके पति रहीम साब एक साधारण और सामान्य व्यक्ति हैं जोकि अपनी पत्नी से बहुत प्रेम करते हैं इनके आधार पर यहाँ पारिवारिक सद्भावना हमें देखने को मिलती है।

इस कहानी में भाषाई सौंदर्य के साथ-साथ पारिवारिक विडंबना को भी व्यक्त किया गया है। जो कि इस बात को दर्शाती है कि इस कहानी के पात्र शब्बो तथा रहीम साहब जो कि पति-पत्नी होते हुए भी एक दूसरे से खुश नही हैं और एक काले गोले ने सफेद आकृति को जिस प्रकार कैद किया हुआ था उसकी तुलना रहीम साब तथा शब्बो के संबंध से की गई है।

यहाँ पर मंज़ूर एहतेशाम जी ने सामाजिक सद्भावना के साथ-साथ भाषाई एवं पारिवारिक सद्भावना का बहुत ही सुंदरतम रूप प्रस्तुत किया है, भाषाई सद्भावना में इन्होंने पाश्चात्य शब्दावली का प्रयोग किया है। जो कि इनके पात्रों की व्यवहारिक भाषा में दर्शाई गई है।

उदास चाँदनी:-

इस कहानी में मंज़ूर एहतेशाम जी ने ऐसा समा बांधा है की इस कहानी के पात्र पाठक से बात कर रहे हों और इसमें लेखक ने अपनी आपबीती को व्यक्त करने का प्रयास किया है कुछेक जगह पर इन्होंने अपनी आपबीती को दर्शाया है।

इस कहानी में जिस प्रकार से समाज में रह रहे लोगों के परिवारों में मतभेद होते हैं उसी तरह से इस कहानी में भी एहतेशाम जी ने पारिवारिक मतभेदों को व्यक्त किया है परंतु इनकी कहानी का मुख्य पात्र एक ऐसा पात्र है जिसकी सोचने समझने की क्षमता बहुत ही कम हो जाती है तथा वह पारिवारिक द्वेष में अपनी पत्नी की मृत्यु कर देता है और जब उसे पछतावा होता है तो उसे ऐसा लगता है कि रात की चांदनी में एक उदासी छा गई है।

यहाँ पर इन्होंने सामाजिक सद्भावना के साथ - साथ सांस्कृतिक सद्भावना का भी ध्यान रखा है तथा कई जगह पर इन्होंने पारिवारिक सद्भावना को बहुत अधिक महत्व दिया है जिनके उदाहरण हम आगे व्याख्यायित करेंगे।

लौटते हुए:-

'लौटते हुए' शीर्षक कहानी मंज़ूर एहतेशाम जी की एक ऐसी कहानी है जो की कल्पनाशीलता पर आधारित है। इस कहानी में एहतेशाम जी ने एक काल्पनिक परिवेश की रचना की है तथा कल्पनाशीलता के साथ-साथ इन्होंने पात्रों के अंदर प्रेम एवं सद्भाव को भी दर्शाया है।

इस कहानी में पात्र के दफ्तर से वापस घर लौटते हुए सफर को दर्शाया गया है जिसमे वह सड़क पर चलते हुए बीते वर्षों को याद करता है तथा दफ्तर में सीनियर ऑफिसर, सिंह साहब आदि पात्रों से मिलता हुआ जाता है। उसे रास्ते में कई प्राकृतिक चीजें मिलती हैं वह उनका अनुभव करता हुआ जाता है। जिनमें लेखक की भाषाई सद्भावना की कल्पना को देखा जा सकता है।

धुन :-

यहाँ पर एहतेशाम जी ने एक अलग ही प्रकार की धुन को ताराशने का प्रयास किया है। इस कहानी को पढ़कर पाठक अपनी ही धुन में खोए हुए लोगों की तरह उनकी अपने कार्यों के प्रति लगन को दर्शाने का प्रयास किया है। इस कहानी में प्रत्येक पात्र अपनी ही एक अलग धुन में खोया हुआ है। कोई पतंग उड़ाने की धुन मे है तो कोई डोर में पड़ी गांठ को सुलझाने में।

इस कहानी में इन्होंने मौसम के सुहावने समय का भी वर्णन किया है। जो कि एक शीत ऋतु का वर्णन प्रतीत होता है और इस कहानी में सांस्कृतिक सद्भावना को संगीत के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

धरती पर :-

मंज़ूर एहतेशाम जी की कहानी 'धरती पर' एक ऐसी कहानी है जिसमें इन्होंने काल्पनिक संदर्भों का प्रयोग किया है तथा पाठकों के लिए एक ऐसी सोच को उजागर करने का प्रयास किया है जो कि काल्पनिक रूप से परिपूर्ण है और इनकी इस कहानी को पढ़ते हुए हमको ऐसी अनुभूति होती है कि इस कृति में प्रकृति को एक मानवीय रूप प्रदान किया गया हो। जिस आधार पर इस कहानी को पढ़ते हुए हमको ऐसा लगता है कि लेखक की कल्पनाशक्ति इस रचना को रचते हुए और भी प्रबल होती जा रही है ।

इस कहानी मे ये दर्शाया गया है कि इस कहानी का नायक प्रकृति के साथ लड़ झगड़ कर एवम् प्रेतों को पराजित करके नायिका को धरती पर वापस लाया है। यह संपूर्ण कार्य नायक कल्पना में ही करता है जो कि पारिवारिक सद्भावना को दर्शाता है।

लडाई :-

मंज़ूर एहतेशाम जी ने इस कहानी में पारिवारिक सद्भावना का बहुत ही सुन्दर दृश्य प्रस्तुत किया है। इन्होंने इस कहानी में एक पिता के द्वारा उसकी बेटियों को समझाने का एक ऐसा प्रयत्न प्रस्तुत किया है कि जब बेटियाँ अपने पिता के घर से अपने पति के घर के लिए रुखसत होती हैं तो वो समय कितना हृदय को पीड़ा देने वाला तथा अत्यंत महत्तवपूर्ण होता है।

इस कहानी में लेखक ने पारिवारिक सद्भावना को भी दर्शाने का प्रयास किया है। यहाँ ऐसा प्रतीत होता है जैसे एहतेशाम जी खुद - ब - खुद अपनी पत्नी एवम् दोनों बेटियों के साथ संवाद कर रहे हैं एवम् इन्होंने यहाँ पर पति-पत्नी के बीच सद्भाव को भी दर्शाने का प्रयास किया है जब इनकी कहानी का पात्र घर की सफाई करता है तो ऐसा प्रतीत होता है कि वह पात्र जैसे लड़ाई के मैदान में खड़ा हो। इस कहानी का शीर्षक इसी आधार पर अपना मुख्य स्थान लिए हुए है।

रिहाई:-

यह कहानी एक ऐसी कहानी है जिसमें मंज़ूर एहतेशाम जी ने धार्मिक भावनाओं को एक तोते के मध्यम से व्यक्त किया है और बच्चे तोते से ' जय राम जी की' बुलवाने का प्रयास भी करते हैं। जिससे उनको यह पता लग सके की वह तोता किस घर से या किस धर्म से संबंध रखता है। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि लेखक ने धार्मिक सद्भावना को दर्शाने का यहाँ प्रयत्न किया है।

लेखक ने धार्मिक सद्भावना के साथ ही साथ सांस्कृतिक एवम् पारिवारिक सद्भावनाओं को भी समाहित किया है अगर संस्कृति के संदर्भ मे कहा जाए तो इस कहानी में नए फेशन के डांस का ज़िक्र किया गया है तथा पारिवारिक सद्भावना के कुछ अंश भी इस कहानी में प्रयोग में लाए गए हैं। जिनकी पुष्टि के तथ्यों को आगे अनुच्छेदों में व्यक्त किया जाएगा।

कौम:-

मंज़ूर एहतेशाम जी की यह कहानी एक आधुनिक परिवेश को दर्शाती है तथा इन्होंने आधुनिक संस्कृति कि रूपरेखा पर इसकी रचना की है। इस कहानी में लेखक ने बसित तथा पद्मा के द्वारा प्रेम - विवाह की सद्भावना को दर्शाया है तथा आज कि युवा पीढ़ी की विचारधारा का भी वर्णन किया है।

इस कहानी में पारिवारिक सद्भावना के साथ - साथ धार्मिक सद्भावना को भी दर्शाया गया है और धार्मिक परिवर्तन की विचारधारा भी इसमे कहीं - कहीं उभर रही है तथा इसमे धर्म परिवर्तन के भाव को भी दर्शाया गया है। लेखक ने अक्सर जिस तरह परिवारों में पारिवारिक द्वेष होतें हैं उस तरह के परिवेश को यहाँ प्रस्तुत किया है।

<u>ज़िक्र खलील उर्फ दस्ताने फाख्ता:-</u>

मंज़ूर एहतेशाम जी ने इस कहानी में एक चील के संदर्भ में प्रकाश डालने का प्रयास किया है जिसमे खलील के द्वारा उस चील के संदर्भ मे जिक्र है। खलील खाँ के द्वारा लेखक ने यहाँ भाषाई सद्भावना के प्रयोग को दर्शाया है तथा इस कहानी मे इन्होंने उर्दू एवम् अंग्रेज़ी भाषा के शब्दों का प्रयोग बड़ी ही सफलता पूर्वक किया है।

इस कहानी को रचते समय एहतेशाम जी ने प्रकृति के उपादानों का भी भरपूर प्रयोग किया है जिस कारण से इनकी यह रचना अपने देशकाल तथा वातावरण को दर्शाती हुई प्रतीत होती हैं। इसकी सद्भावना के पुष्टि तथ्यो का हम आगे वर्णन करेंगे है।

<u>एक पारम्परिक समस्या - प्रधान कहानी :-</u>

यह कहानी एक ऐसी कहानी है जिसमें मंज़ूर एहतेशाम जी ने एक परिवार (खान साहब का परिवार) में व्याप्त समस्याओं का वर्णन किया है। इनकी तीन औलादें है जिनमे दो बेटे हैं तथा एक बेटी। दोनों बेटे तो ऐसे हैं कि किसी काम के नहीं । अल्लाहवाला एसी औलाद है कि उसे गश्त, तबलीग और नमाज़ से फुरसत नहीं मिलती और दूसरा है दुनियावाले जो दिन - रात अपने बनाव - सिंगार में लगा रहता है। बस एक बेटी ही है जो कि पढ़ - रही है। जिसे देख कर खान साहब को इत्मीनान हो जाता है इससे कहानी के पारिवारिक दुख का पता चलता है।

पारिवारिक सद्भावना के साथ - साथ लेखक ने हलीमन के द्वारा सांस्कृतिक सद्भावना को दर्शाया है जिसे पढ़ कर हमको यह ज्ञात होता है कि हलीमन एक ऐसी पात्र है जो कि पारम्परिक रूप से अपने धर्म के त्योहारों को बहुत ही धूम-धाम से मनाती है तथा घर आए मेहमानों की आवभगत मे भी कोई कमी नहीं छोड़ती।

पारिवारिक एवम् सांस्कृतिक सद्भावना के साथ - साथ एहतेशाम जी ने सामाजिक सद्भावना का भी भरपूर प्रयोग किया है। जिसकी सबसे बड़ी उदाहरण हलीमान है इसके द्वारा यह कहानी एक पूर्ण रूप से सामाजिक सद्भावना प्रधान कहानी मानी जा सकती है जिसका खान साहब के परिवार के साथ केवल एक नौकर और साहब का संबंध है फिर भी वह खान साहब के परिवार को अपना परिवार मानती है और अल्लाहवाले पर लगाए गए इल्जाम की भरपाई के लिए २५०००/- रुपए दे देती है और यह कहती है कि भाई साहब आप इन पैसों को दूल्हा भाई को दे दो और उनसे कहना कि अल्लाहवाले की कीमत उन्होंने बहुत कम लगाई है। यहाँ पर एहतेशाम जी ने सामाजिक एवम् पारिवारिक सद्भावना को एक दूसरे में समाहित किया है और बहुत ही सुंदर दृश्य पाठक के सामने उभारने का प्रयास किया है।

<u>राहत:-</u>

यह कहानी मंज़ूर एहतेशाम जी की आप बीती पर आधारित कहानी है इसमें इन्होंने भोपाल गैस त्रासदी के भयंकर परिणामों की चर्चा की है तथा इस स्थिति का सामना करने वाले व्यक्तियों कि कहानी का मुख्य पात्र सहायता भी करता है जो कि उसके लिए अजनबी है एवं मुख्य पात्र में सद्भावना का भाव होने के कारण वह अजनबियों की सहायता करने से पीछे भी नहीं हटता तथा सहायता करने के पश्चात् उसे बहुत ही खुशी का अनुभव होता है।

इस कहानी में लेखक का मुख्य पात्र अजनबियों के लिए सद्भाव रख कर उसकी आर्थिक रूप से मदद भी करता है तथा इस पर वह अजनबी कहता है कि मैं आपको पैसे भिजवाऊंगा परन्तु इस पर मुख्य पात्र का यह जवाब होता है कि आपको मैने यह पैसे उधार नहीं दिए । कल को परदेश में ऐसा वक्त मुझ पर भी पड़ सकता है। जब आप किसी जरूरतमंद कि सहायता करें, तो यह समझना की आप मेरा पैसा लौटा रहे हैं और भोपाल गैस त्रासदी का अनुदान लेने के लिए भी यह पात्र मना कर देता है ये सोचकर की जरूरतमंदों को इस अनुदान कि ज्यादा आवश्यकता है। यह संपूर्ण कहानी सामाजिक सद्भावना को दर्शाती है। जिसमें गैरों के लिए अपनापन एवम् सद्भावना है।

<u>रास्ते में:-</u>

इस रचना में एक ऐसा सद्भाव दर्शाया गया है जो की एक मनुष्य का एक पशु के लिए है। यह सद्भावना आज के युग में लुप्त सी होती नज़र आ रही है तथा मंज़ूर एहतेशाम जी ने इस कहानी के द्वारा एक पिल्ले के संग प्रेम व्यवहार को दर्शाया है। जिसे पाकर पिल्ला उस बच्चे के पीछे - पीछे चलने लगता है और अंत में वह बच्चा यह सोचने लगता है कि रास्ते में किसी के लिए भी सद्भावना का भाव नहीं रखना चाहिए वरना वह प्राणी पिछलग्गू ही बन जाता है।

यहाँ पर मंज़ूर एहतेशाम जी ने पाठक के लिए एक ऐसा संदेश देना चाहा है कि जिससे पाठक के मन में दोनों तरह के व्यवहार, प्रेम एवम् विकर्षण के भाव उत्पन्न होने लगते हैं तथा उस व्यक्ति के लिए सद्भावना के भाव समाप्त हो जाते हैं।

<u>तलाफ़ी:-</u>

'तलाफी' अर्थात्् नुकसान या भरपाई यह कहानी एहतेशाम जी की एक ऐसी परिस्थिति को दर्शाती है जिसमें इस कहानी का पात्र अपनी अस्मिता को खोना नहीं चाहता है परन्तु वह उच्च वर्ग का व्यक्ति होते हुए निम्न वर्ग के व्यक्तियों के स्थान पर जाकर शराब का सेवन करता है और साथ ही वह उस स्थान पर जाने से डरता भी है और वहाँ जाना भी चाहता है।

इस कहानी में लेखक पारिवारिक सद्भावना दर्शाते हुए पात्र के परिवार की स्थिति को दर्शाता है कि किस तरह से उसकी पत्नी के पैरों की चप्पलें टूटी हुई हैं यह देखकर उसे बुरा लगता है।

इस सद्भावना के साथ -साथ एहतेशाम जी ने सामाजिक सद्भावना को भी प्रस्तुत किया है जो कि पात्र के अपने मित्रों के संग मेल - जोल को दर्शाता है और भाषाई सद्भावना का भी यहाँ इन्होंने अनूठा प्रयोग किया है जो कि लेखक के व्यवहार में पूर्ण रूप से झलकता है। आने वाले अनुच्छेदों में इनकी पुष्टि की जाएगी।

रिश्ता:-

'रिश्ता' मंज़ूर एहतेशाम जी की एक ऐसी कहानी है जिसमें पात्रों के बीच कोई भी रिश्ता ना होने पर भी सुलेमान और शमीम खान के बीच भाई जैसा रिश्ता है और वे दोनों ही एक दूसरे के साथ वैसा ही व्यवहार करते हैं जैसा एक भाई अपने भाई से करता है। जिसकी वजह से ऐसा प्रतीत होता है कि यहाँ पर एक पारिवारिक सद्भावना विद्यमान है।

इस कहानी में लेखक ने रिश्तों के बीच होते विवाद को दर्शाया है तथा ऐसा परिवेश रचा है की रिश्तों में एक आपसी रंजिश सी होती हुई नज़र आती है और यह रंजिश इतनी बढ़ जाती है कि शमीम खान आपसी मतभेद के कारण सुलेमान को गोली मार देता है। जिसका गवाह प्रत्यक्ष रूप से लेखक खुद को मानता है। जो इस पूरी वारदात को अपनी नग्न आँखों से देखता है।

सद्भावना की बात करें तो इस कहानी में सामाजिक सद्भावना के साथ - साथ राष्ट्र के प्रति सद्भाव को भी प्रस्तुत किया गया है जिसमें मुस्लिम भारतीयों के भारतीय होने का प्रमाण दिया गया है जिसमें इनके पूर्वज जितने भारतीय सैकड़ों वर्ष पूर्व थे उतने ही आज के मुस्लिम भी हैं। जिसमें हमें मुस्लिमों कि भारतीय - राष्ट्रीयता का प्रमाण देखने को मिलता है। इनकी पुष्टि आने वाले सद्भाविक बिंदुओं में दर्शाई जाएगी।

बाक़ी सारी गाडियाँ:-

इस कहानी में लेखक ने एक विशेष गाड़ी 'पंजाब - मेल' की मेहत्ता का वर्णन किया है। जो कि इस कहानी के मुख्य पात्र के लिए बहुत महत्त्व रखती है जिसमें जाने वाले व्यक्ति से उसे मिलना था परन्तु बस की वजह से वह सही समय पर रेलवे स्टेशन पर नहीं पहुंच पाता और रेल स्टेशन से निकल जाती है।

लेखक ने इस कहानी की रचना करते हुए धार्मिक, सामाजिक सद्भावना का बहुत ही सुंदर वर्णन प्रस्तुत किया है जोकि बस से रेलवे स्टेशन तक के सफर में हमें प्रतीत हो जाता है।

सामाजिक सद्भावना की बात की जाए तो लेखक ने इस कहानी में ऐसी - ऐसी परिस्थितियों का वर्णन किया है जिसमें लोग बस में बैठे हुए मुख्य पात्र के साथ एक सहानुभूति पूर्ण व्यवहार करते हैं तथा उसे आश्वासन देते हैं कि रेलगाड़ी लेट भी हो सकती है। तो कोई यह कहता है कि आप बस छोड़ कर किसी और संसाधन से वहाँ चले जाएँ।

मंज़ूर एहतेशाम जी ने सामाजिक सद्भावना के साथ - साथ धार्मिक सद्भावना को भी इस कहानी में स्थान दिया है। जिसमें इन्होंने हिन्दू धर्म की अस्मिता को व्यक्त किया है अथवा मंदिर की घंटियों तथा उसके भक्तों का वर्णन दर्शाया गया है जिनकी पुष्टि आगे चलकर हम विस्तार पूर्वक करेंगे।

कडी:-

मंज़ूर एहतेशाम जी की यह कहानी ' कड़ी ' पाठकों के मन में एक ऐसा समा बाँधती है जिसमें पाठक खो-सा जाता है और इसमें कहानियाँ एक कड़ी की तरह जुड़ती चली जाती है। मंज़ूर एहतेशाम जी ने इसमें एक ऐसे परिवेश का वर्णन किया है जिसमें एक अनजान व्यक्ति कॉलेज की कैंटीन में आकर अनजान लोगों के साथ अपनी आपबीती का वर्णन करता है जिसे वहाँ पर बैठे सब विद्यार्थी सच मानने के लिए मजबूर हो जाते हैं।

इस कहानी का पात्र खान जिसकी सुनाई हुई कहानी पर सान्याल विश्वास कर लेता है और वहीं अपने मित्र की बातों पर विश्वास नहीं करता है। उसे ऐसा प्रतीत होता है कि उसका मित्र उसे एक मनगढ़ंत कहानी सुना रहा है नाकी खान, खान ने उसे कोई मनगढ़ंत कहानी सुनाई थी। इस आधार पर सामाजिक सद्भावना का यहाँ पर स्पष्ट वर्णन दर्शाया गया है।

इस कहानी में मंज़ूर एहतेशाम जी ने सामाजिक सद्भावना के साथ-साथ धार्मिक सद्भावना, भाषाई सद्भावना, राष्ट्र के प्रति सद्भावना आदि को प्रस्तुत करने का भरपूर प्रयत्न किया है। इस कहानी को रचते समय मंज़ूर एहतेशाम जी ने पाठकों के लिए खान के द्वारा एक ऐसा समा बाँधा है जिसमें खान का अपने छोटे भाई के प्रति सद्भाव कितना प्रबल है वह यहाँ दर्शाया गया है। जिससे यह प्रतीत होता है कि खान के मन में उसके छोटे भाई के लिए कितना सद्भाव है। जोकि वह अपने छोटे भाई का प्रतिबिंब सान्याल में देखता है और उससे रहा नहीं जाता तो वह सान्याल और उसके मित्रों की मेज पर उनसे बात करने के लिए चला जाता है। इस कहानी की सद्भावना के पुष्टि तथ्य आगे विस्तृत रूप में वर्णित किए जाएंगे।

तमाशा:-

मंज़ूर एहतेशाम जी ने इस कहानी को इस तरह से रचा है कि ये खुद इस कहानी को एक तमाशा कहते हैं। इसके हर परिवेश को इन्होंने रचते समय याद रखा है तथा इस कहानी का हर अंश अपने आपमें एक तमाशे कि तरह हमको दिखलाई पड़ता है।

इस कहानी में लेखक ने पात्रों को ऐसे अभिनय प्रदान किए हैं जो पाठक के लिए चिर - स्मरणीय बन जाते हैं और एकरूपता प्राप्त करते हैं इनके पात्र सकीना आपा, आलम, जमीला, अत्तू मिया, शकील, कनिजा, शहंशाह, नवाब आदि ऐसे पात्र हैं जो लेखक की स्मृति में स्मृति चिन्ह कि तरह रच बस गए हैं।

यह कहानी मुख्यत: एहतेशाम जी ने दिनेश जुगरान जी के लिए रची है जिसमें कई स्थानों पर इन्होंने पारिवारिक सद्भावना के साथ - साथ सामाजिक सद्भावना को भी समाहित किया है। जिनके पुष्टि तथ्य विस्तारित रूप में हमने प्राप्त किए हैं।

भोपाल का बेगम - दरबार:-

इस कहानी के नाम से ही ये ज्ञात हो जाता है कि इस कहानी में लेखक ने भोपाल के प्रशासन एवम् वहाँ की बेगमों के दरबरों का वर्णन किया है । इस कहानी में एहतेशाम जी ने मुहम्मद खां,शप्पा दादा, जगत दादी,कमल पति, फ़ैज़ मुहम्मद, हयात मुहम्मद आदि पात्रों के द्वारा भोपाल के बेगम दरबार का संपूर्ण वर्णन करने का प्रयास किया है।

मंज़ूर एहतेशाम जी ने इस कहानी की रचना करते हुए राष्ट्र के प्रति सद्भाव एवम् धार्मिक सद्भावना के पहलुओं का समावेश किया है जिसके पुष्टि तथ्यों का विस्तार पूर्वक वर्णन हम आगे आने वाले अंश में करेंगे।

शादी के बहाने:-

शादी के बहाने कहानी एक सामाजिक सद्भावना की पुष्टि करती हुई कहानी है जिसमें एक नाईन बुआ को मुख्य पात्र माना है और उसके द्वारा जब लेखक को अपने सिर पर नाइन बुआ के हाथ का स्पर्श जब मिलता है तब वह अपने आपको तरोताजा महसूस करता है तथा उनके ऐसे ही कई एहसासों एवं अनुभवों को वह इस पूरी कहानी में वर्णन करने का प्रयास कर रहे हैं।

लेखक नाइन बुआ के आशिर्वाद भरे हाथों का स्पर्श अक्सर महसूस करता है एवम् उसे एक दफा फिर उनकी याद तब आती है जब वह अपनी बेटी की शादी में उसे रुखसत करता है। इस प्रकार से लेखक ने इस कहानी में कई जगह पर पारिवारिक एवम् सामाजिक सद्भावना का प्रयोग किया है ।

चन्दा:-

यह कहानी एक ऐसी कहानी है जिसमें एहतेशाम जी ने मालिक के बच्चों के द्वारा प्रेम तथा सामाजिक सद्भावना एवम् नौकरों के साथ बराबरी के व्यवहार को दर्शाया है तथा इसमें इन्होंने मालिक के कारखाने में काम कर रहे नौकर चन्दा के द्वारा धर्मनिरपेक्ष के भाव को दर्शाने का प्रयास किया है।

यहाँ पर एहतेशाम जी पाठक के सामने एक ऐसा दृश्य प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहे हैं जिसमें सामाजिक सद्भावना सहित सांप्रदायिक सद्भावना का भी भरपूर प्रयोग किया गया है एवम् समाज में रह रहे निम्न वर्ग के लोगों के साथ हमें किस तरह का व्यवहार रखना चाहिए इसकी भी शिक्षा हमें इस कहानी से प्राप्त होती है। इस कहानी में समाहित सद्भावनाओं की पुष्टि हम आगे विस्तार पूर्वक करेंगे।

<u>तसबीह:-</u>

एहतेशाम जी की सभी कहानियों में से एक बहुचर्चित कहानी 'तसबीह' है इस रचना में इन्होंने पारिवारिक सद्भाव को मोतियों की माला की तरह पिरोने का प्रयास किया है। रचना को रचते हुए मंज़ूर जी ने नायक के द्वारा एक ऐसी परिस्थिति को लेकर हमारे सामने खड़ा किया है जोकि एक धार्मिक सद्भावना का भी ख्याल रखता है और पारिवारिक सद्भावना का भी।

इन्होंने रचना को रचते समय सांस्कृतिक सद्भावना के पहलुओं को कई जगह समाहित किया है जोकि मुस्लिम पहनावे को दर्शाती हुई प्रतीत होती है तथा तीज त्योहारों का मनाना इत्यादि के द्वारा सांस्कृतिक सद्भावना को भी दर्शाने का प्रयास किया हैं ।

एहतेशाम जी 'तसबीह' को रचते हुए यह प्रयास करते हैं कि अन्य देश के लिए इनके पात्रों में कितनी लगन और आशा है जिसके कारण इनकी इस कहानी के पात्र अन्य देश में प्रवास करना चाहते हैं और पासपोर्ट बनवा कर जितना जल्दी हो सके अन्य देश जाने कि फिराक में लगे रहते है।

रचनाकार ने इस कहानी में सांस्कृतिक सद्भावना के साथ - साथ धार्मिक एवम् सामाजिक सद्भावना के तथ्यों को डाला है जिसमें पात्रों द्वारा समाज के लोगों के संग सामाजिक सद्भावना को प्रस्तुत किया गया है एवम् धार्मिक सद्भावना तो इस कहानी कि नीव है जिसमें मुस्लिम धर्म के प्रति सद्भावनाओं को प्रस्तुत किया गया है।

इन सभी सद्भावों के पुष्टि तथ्य आगे प्रस्तुत किए जाएंगे जिसमें प्रत्येक सामाजिक, धार्मिक एवम् सांस्कृतिक सद्भावना को पाठक पढ़ तथा महसूस कर सकता है।

छतरी:-

इस कहानी के नाम से ही यह मालूम हो जाता है कि लेखक वर्षा ऋतु के समय की बात कर रहा है जिसमें लेखक एक छतरी वाले के द्वारा यह दर्शाना चाहता है कि वर्षा ऋतु आ गई है तथा उसका छतरी बेचने का अंदाज कुछ अनोखा ही लगता है छतरी वाला अपने पास रंग-बिरंगी छतरियाँ बेचने के लिए रखता है। जो कि सभी के मन को आकर्षित करती हैं।

एहतेशाम जी ने इस कहानी के द्वारा हमको एक ऐसा संदेश देने का प्रयास किया है जिसमें सामाजिक सद्भावना एक मौसम के द्वारा लोगों में प्रस्तुत की गई है। जोकि एक बाजार में जाकर अपनी छतरियों का विक्रय करता है और लोग उस बाजार में उसकी छतरियाँ खूब खरीदतें हैं।

यहाँ पर एहतेशाम जी ने एक ऐसी स्थिति को दर्शाने का प्रयास किया है जिसमें किस पल किसकी महत्ता अधिक होती है और किस वक़्त कम अर्थात्् परिस्थिति हमेंशा परिवर्तनशील रहती है जिसके कारण जो व्यक्ति आज महत्त्व रखता है ये जरूरी नहीं कि उसकी महत्ता कभी समाप्त नहीं होगी क्योंकि वैचारिक परिवर्तन एवम् समय का परिवर्तन प्रकृति का नियम माना गया है।

इसी आधार पर इस कहानी में एहतेशाम जी ने एक छतरी वाले के द्वारा बारिश के आने पर उसकी महत्ता को दिखाया है और जब बारिश का मौसम चला जाता है तो उस छतरी वाले की महत्ता भी कम होती नज़र आने लगती है। जिसमें पाठकों को सामाजिक सद्भावना परिलक्षित होती है।

काला पुल:-

काला पुल एहतेशाम जी की एक ऐसी कहानी है जिसमें काल्पनिक तथ्यों के साथ -साथ पाश्चात्य संस्कृति का समावेश पाया जाता है इस कहानी में काल्पनिक विचारों का भी प्रयोग किया गया है।

लेखक ने इस कहानी को लिखते वक्त यह ध्यान मे रखा है कि समाज में रह रहे लोगों का व्यवहार तथा उनके जीवन की शैली किस प्रकार की है जोकि कुछ ऐसी प्रतीत होती है कि इनकी इस कहानी की एक स्त्री पात्र अपने वर्तमान शादीशुदा जीवन से संतुष्ट नही है जिसके कारण वह अपना संबंध किसी अन्य व्यक्ति के साथ बनाती है।

इस कहानी में कहीं-कहीं तो ऐसी घटनाएं दर्शाई गई हैं जहाँ पर कभी तो पारिवारिक सद्भावना नज़र आती है तो कभी पारिवारिक द्वेष। पारिवारिक सद्भावना के साथ - साथ इस कहानी में एक स्त्री पात्र की संतुष्टि को दर्शाया गया है। जिसे पाठक पढ़कर यह अनुमान लगा सकता है कि इस कहानी में कौन-कौन से सद्भाव मौजूद हैं।

ठंडे बस्ते:-

मंज़ूर एहतेशाम जी की यह कहानी एक ऐसी कहानी है जिसमें उन्होंने पश्चिमी संस्कृति की शब्दावली का भरपूर प्रयोग किया है जिसमें ऐसा लगता है की व्यक्ति अथवा इनकी कहानी के पात्र व्यवहारिक रूप में ही संवाद कर रहे हैं अथवा संवाद करते समय हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी शब्दावली का प्रयोग कर रहे हैं।

'ठंडे बस्ते' कहानी में इन्होंने सामाजिक सद्भावना का भी भरपूर प्रयोग किया है जिसमें ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि व्यक्ति समाज में रहकर एक दूसरे से तालमेल बिठाने का प्रयास कर रहा है। इस कहानी के लगभग सभी पात्र विकास, नीता, दिवेन, दत्त आदि सभी सामाजिक सद्भावना से परिपूर्ण नज़र आते हैं।

भाषाई एवं सामाजिक सद्भावना के साथ - साथ इन्होंने इस कहानी में राष्ट्र के प्रति सद्भाव को भी समाहित किया है जिनके कारण राष्ट्र में रह रहे व्यक्ति की राष्ट्र के प्रति सद्भावना को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया गया है। इस कहानी में लेखक ने काल्पनिक तथ्यों के आधार पर कई प्रकार की सद्भावना को प्रस्तुत किया है।

इस लंबी कहानी में लेखक ने जीवन के कई पहलुओं को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया है जिसके द्वारा पाठक समाज के सभी पहलुओं से परिचित होता है और कथाकार उसमें रह रहे लोगों में विद्यमान सामाजिक, सांस्कृतिक, एवम् राष्ट्रीय सद्भावनाओं को जीवन के पहलुओं के साथ जोड़ने का प्रयास करते हैं इन सभी के लिए पुष्टि तथ्यों का हम आगे विस्तारपूर्वक वर्णन करेंगे।

एहतेशाम जी की संपूर्ण कहानियों के परिचय के पश्चात् इनकी कहानियों के अंदर समाहित सद्भावनाओं का विस्तृत रूप में हम अध्ययन करेंगे जिनकी सद्भावनाओं के बिंदु इस प्रकार हैं :-

<u>सद्भावना के बिंदु</u> :- १:- पारिवारिक सद्भावना।

२:- सामाजिक सद्भावना।

३:- धार्मिक सद्भावना।

४:- सांप्रदायिक सद्भावना।

५:- सांस्कृतिक सद्भावना।

६:- भाषाई सद्भावना।

७:- राष्ट्र के प्रति सद्भावना।

<u>-:पारिवारिक सद्भावना:-</u>

भूमिका:- पूर्व अध्याय में विस्तृत रूप से व्याख्यायित परिवार की अवधारणा के आधार पर यह कह सकते हैं कि परिवार एक ऐसी संस्था है जो मानव उत्थान के लिए एक शानदार खोज मानी जाती है और प्राचीन लोगों द्वारा मानव जाति के लिए दिया जाने वाला पुरस्कार माना जाता है। इस संस्था में सभी लोगों का एक साथ परिवार में रहना अपने आप में महत्व रखता है।

पारिवारिक सद्भाव के आधर पर मंज़ूर एहतेशाम जी की कहानियों में वर्णित पारिवारिक सद्भावना पर हम एक महत्वूर्ण दृष्टि केंद्रित कर रहे हैं। अपनी कहनियों में इन्होंने पारिवारिक सद्भावना का बहुत ही मार्मिक प्रस्तुतीकरण किया है। इनके साथ - साथ कई कहानीकार भी हुए हैं जिन्होंने अपनी कहानियों मे पारिवारिक सद्भावना का समावेश किया है। इस सद्भावना की पुष्टि इनकी कहानियों में दृष्टिगोचर होती है।

आधुनिक युग के रचनाकारों में कई रचनाकार हुए हैं जिन्होंने पारिवारिक सद्भावना को अपनी कहानियों में स्थान दिया है तथा इस युग के प्रसिद्ध लेखक मंज़ूर एहतेशाम जी भी हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं में पारिवारिक सद्भावना को अपनी कहानियों में समाहित किया है जिससे पाठक के मन में पारिवारिक सद्भावना जागृत हो उठती है। हम इनकी कहानियों के द्वारा इसकी पुष्टि कर रहे हैं।

-: मंज़ूर एहतेशाम की कहानियों में पारिवारिक सद्भावना :-

मंज़ूर जी की कई कहानियों में इस सद्भावना की छटा विद्यमान हैं इनकी कहानियों में व्याप्त पारिवारिक सद्भाव के उदहारण इस प्रकार हैं जो इस सद्भाव की पुष्टि करते हुए नज़र आते हैं।

पारिवारिक सद्भाव :- १:-

" मेरा मशवरा मानो तो यह है कि तुम अब भी संजीदगी के साथ पढ़ डालो। क्या रखा है इस तरह खेती - वेती में। आज तो बहन है, कल भांजे बड़े हो जाएंगे तो क्या करोगे ? यह सब कुछ तुम्हारे बस का नहीं है। अभी तो सब खुश हैं कि बहनोई की मौत के बाद भाई - बहन और भांजो के लिए कितना कर रहा है, लेकिन धीरे - धीरे सब बदल जाएगा .... अरे हाँ। यह तो बताओ - क्या तुमने कभी जिन को देखा है ?"१

ये पंक्तियाँ मंज़ूर एहतेशाम जी की कहानी ' रमज़ान में मौत ' से उद्धृत है इन पंक्तियों में मंज़ूर एहतेशाम जी ने परिवार के प्रति सद्भाव को बहुत ही सुंदरतम रूप में दर्शाया है तथा इसमें इन्होंने एक भाई का बहन के प्रति लगाव तथा पारिवारिक प्रेम - भाव का बहुत ही सुंदरतम रूप प्रस्तुत किया गया है।

पारिवारिक सद्भाव :- २:-

" -चार बजे, शरीफ ने बहुत बेज़ारी से कहा- अब इस वक्त तो सो जाओ। - और उसने करवट बदल ली। कुछ देर पम्मो वैसे ही उसके बाजू में बैठी रही फिर उठकर चली गई। थोड़ी देर बाद शरीफ ने स्विच ऑफ होने की आवाज सुनी और फिर अंधेरे में ही पम्मो उसके बाजू आकर लेट गई। - सो गए ? थोड़ी देर कि खामोशी के बाद पम्मो ने अपना हाथ उसकी कमर पर रखते हुए कहा था। शरीफ ने जवाब नहीं दिया। पम्मो कुछ और पास खिसक आई, फिर बहुत आहिस्ता से शरीफ के कान परहोंठ रखकर फुसफुसाई।

- सो जाओ ! शरीफ ने आजिज़ी के साथ कहा।
- क्या नींद आ रही है ?
- हाँ !
- इतनी जल्दी।"२

ये उपर्युक्त पंक्तियाँ इनकी कहानी ' खेल ' से ली गई है जिसमे पारिवारिक सद्भाव को एक पति - पत्नी के पारिवारिक प्रेम प्रसंग के रूप दर्शाया गया है। जिसमे शरीफ तथा पम्मों पति - पत्नी हैं जिसमें एक परिवार की छोटी - छोटी समस्याओं को उजागर किया गया है तथा नन्हे के प्रति दयालुता का भाव भी एक पारिवारिक सद्भाव के रूप मे प्रस्तुत किया गया है।

पारिवारिक सद्भाव :-३:-

" - शादी और बीवी और शादीशुदा ज़िन्दगी...... - मैं दफ्तर से सीधे घर आता था, संजू ने उसे बताते हुए कहा था। - मैने शराब छोड़ दी थी, सिगरेट पीना भी बन्द कर दिया था।- बाप बनने का अहसास.... हॉस्पिटल.... दवाएं....दूध।- मुझे बीवी और बच्चे के लिए कुछ भी करना बहुत अच्छा लगता था। - उधार लेकर भी। "३

इन पंक्तियों में लेखक ने नायक का अपने परिवार, बीवी और बच्चे (मुन्ना) के प्रति सद्भाव को दर्शाया है। जिस प्रकार माता - पिता अपनी संतान के प्रति सद्भाव रखते हैं वही सद्भाव यहाँ एहतेशाम ने प्रस्तुत किया है।

पारिवारिक सद्भाव :-४:-

" बशीर खां के कोई औलाद नहीं है। पिछली ज़िन्दगी - बचपन, नौजवानी, शादी बीवी की मौत - वह सब कुछ खुद उनके लिए भी अब एक भूला हुआ सपना है। उनकी जिंदगी का सबसे बड़ा हिस्सा दुकान पर ही बितता है, जहाँ लोग बच्चों को काम सीखने और करने के लिए छोड़ जाते हैं। बशीर खाँ बच्चों का जिस तरह ख्याल कर सकते हैं, करते हैं। दिन में चार बार पास के होटल से सबके लिए चाय आती है। मौसम के लिहाज से, फेरी वाले जो फल बेचते हैं- केला, अमरूद, सेब, संतरे या फिर मूंगफली- समय - समय से बशीर खाँ अपने ' स्टाफ ' को खिलाते रहते हैं, और बहुत ख्याल के साथ सबका रोज का रोज हिसाब करते हैं। त्योहार पर भी जिसके लिए जितना कुछ बन पड़ता है, वह जरूर करते हैं।"४

इन पंक्तियों में बशीर खां एक ऐसा पात्र है जो समाज में रहकर लोगों से एक पारिवारिक मेल - जोल बनाए हुए है तथा खां के व्यवहार में एक पारिवारिक भाव परिलक्षित होता है। जो कि समाज मे रह रहे बच्चों के प्रति हमें दिखलाई देता है।

पारिवारिक सद्भाव :-५:-

" चारों बच्चियां आजकल परीक्षा की तैयारी में व्यस्त हैं। अपनी बेटियों पर स. हरिश्चंद्र को गर्व है - हर लड़की अपनी क्लास में फर्स्ट आती है। फिर भी आज नई खुशी कुछ और ही थी। चौबीस वर्षीय विवाहित जीवन के बाद घर में लड़के का सुख स. हरिश्चंद्र को बहुत भीतर तक गरमा गया था और लग रहा था उनकी उम्र बहुत कम हो गई हो। बच्चियाँ घर में छोटे भैया के जन्म से खुद जितनी खुश थीं, सो तो थीं ही, उन्होंने अपने डेडी को भी कभी इतने सुख की मुद्रा से नहीं देखा था।"५

उपर्युक्त पंक्तियों में स. हरिश्चंद्र के परिवार में एक बच्चे के जन्म की खुशी के आधार पर पूरे परिवार कि खुशी को दर्शाया गया है एवं बेटियों कि खुशी का अपने पिता की खुशी देख कर दुगना खुश होना प्रदर्शित हो रहा है। जो कि पारिवारिक सद्भावना को दर्शाती है।

पारिवारिक सद्भाव :-६:-

" .... आवाजें धीरे - धीरे दूर जा रही हैं। बिट्टू नींद में चौंककर रोने लगी है.... शायद वह सुनती हो यह आवाजें? ..... उसने सपने में सब कुछ देख लिया हो ?..... बिट्टू अब बड़ी होती जा रही है...... रेहाना कहती है - इस साल उसे स्कूल में एडमिट कराना है........ बिट्टू के लिए रंगीन किताबें......... बड़े -बड़े अक्षर ..... ए. फार एपिल.... बड़ा खूबसूरत लाल लाल एपिल........ उसकी बहुत सारी किताबें, ढेर - से खिलौने...... पटरी पर चलती रेलगाड़ी..... चाबी की मोटर.... बहुत से रंग बिरंगे कपड़े.... बिट्टू रेहाना के साथ रोटी पकाती है..... छोटी- छोटी गोल - गोल लोइयाँ....... अभी भी उसके हाथ आटे में सने हैं..... रेहाना के पास से सिली धुआं देती लकड़ियों - से बू आती है.... खांसी का दौरा रह -रहकर उठता है..... "६

इन पंक्तियों में एहतेशाम जी ने परिवार के मुखिया का परिवार के प्रति सद्भाव एवं ज़िम्मेदारियों को दर्शाया गया है जो की अपनी बेटी बिट्टू और पत्नी रेहाना की जिम्मेदारियों को निभाने के लिए सोच में डूबा हुआ है। ये पंक्तियाँ पारिवारिक सद्भावना की पुष्टि करती हुई प्रतीत होती हैं।

पारिवारिक सद्भाव :-७:-

" काफी बड़े होने तक भी बहुत सारे कारण तो पूरी तरह समझ में आते नहीं थे, उसे सिर्फ यह लगता था कि जहाँउसकी सौतेली बहनें कोठी में आने जाने वाले लड़कों से खुल कर बात कर सकती थी, उसे एक खास नपे तुले ढंग से ऐसा करने से रोका जाता था। बल्कि बिया और घर के दूसरे बुजुर्गों ने पहले ढके- छुपे और इसके बाद साफ साफ शब्दों में समझाया था कि उसे अपने अंदर की औरत की हिफाजत किस तरह करनी है। घर आने वाले लोगों का रवैया उसके साथ दूसरा ही होता था। बिया ने तो उस स्कूल से भी, जहाँ को-एजुकेशन थी, उसका नाम करवाने की ज़िद की थी, लेकिन अब्बा कैसे अड गए थे। धीरे-धीरे नतीजा यह निकला कि उसे मर्दों से नफरत हो गई। हर लड़के या आदमी की नज़रें उसे एक ही मतलब से उठती लगती - वह मतलब जो अगर पूरा हो गया तो, जैसा बिया कहती हैं, कोई भी शोहर एक रात के बाद ही उसे घर से निकाल देगा।"७

मंज़ूर एहतेशाम जी द्वारा कृत इन पंक्तियों में एक परिवार में पिता के अपनी पुत्री के प्रति उसकी शिक्षा के लिए सद्भाव को दर्शाया है जिसमे उसकी पुत्री की शिक्षा मे कोई परेशानी ना आए तथा उसकी स्कूली शिक्षा मे कोई बाधा उत्पन्न ना हो। ये पंक्तियाँ पारिवारिक सद्भावना की पुष्टि करती हुई प्रतीत होती हैं।

पारिवारिक सद्भाव :-८:-

" शब्बो की शादी रहीम साब - यानी उससे तीन गुनी उम्र के मर्द के साथ। किस तरह आस - पास के तमाम लोग चोंके थे। अब्बा तो किसी तरह राजी ही नहीं होते थे, यहाँ भी बिया कि समझ ही काम आई और उन्होंने रहीम साहब का खानदान और हैसियत याद दिलाकर अब्बा को तैयार कर लिया। आदमी की उम्र ज्यादा सही, दूसरी तमाम चीजें भी तो देखी जाती हैं। कल उस जैसी लड़की के लिए कैसे रिश्ते आएँ, कौन जानता है ! बहरहाल, अब अगर बहुत खुश नहीं हुए तो उन्होंने अपनी नाराजगी पर भी काबू पा लिया। खुद उसके अपने दिमाग में शादी का निर्णय लेते हुए यह काफी साफ था कि वह क्या पाने और क्या खोने जा रही है।"८

इन पंक्तियों में एहतेशाम जी ने शब्बो की शादी जब उससे तीन गुनी उम्र वाले व्यक्ति के साथ तय होती है तो शब्बो के पिता इससे ना खुश होते हैं परन्तु शब्बो की माँ उसके पिता को मना लेती है और कहती है कि उनकी पुत्री को आर्थिक रूप से बहुत धन की प्राप्ति होगी और शब्बो का जीवन सुखमय व्यतीत होगा यहाँ पर शब्बो के माता - पिता का शब्बो के प्रति सद्भाव तथा प्रेम को दर्शाया गया है जिसमें हमें पारिवारिक सद्भाव नज़र आता है !

पारिवारिक सद्भाव :-९:-

" दरअसल शादी का फैसला करते समय ही सबसे बड़ी चूक मुझसे हो गई थी, जिसका इलाज बाद के जीवन में सम्भव न हो सका। अपने स्वभाव के खिलाफ यह निर्णय देते हुए मैंने बहुत प्रैक्टिकल और व्यवहारिक बनने की कोशिश की थी, उसे एक पत्नी की हैसियत से जांचा -;परखा था, घर बसाने और अपनी नस्ल आगे चलाने के लिहाज से। और ऐसा करते हुए सिर्फ उन लोगों को नज़र में रखा था जो मेरे हिसाब से, पीढ़ी - दर - पीढ़ी इसी तरह चले आ रहे थे। इश्क जैसे अफलातूनी शब्द तब तक मेरे लिए अपना मतलब और महत्व खो चुके थे। मैंने सिर्फ यह देखा कि मेरी होने वाली पत्नी एक पढ़ी-लिखी औरत है, घर की जिम्मेदारी संभाल सकती है, और समय पड़ने पर घर का खर्चा चलाने में मेरी सहायता भी कर सकती है। शक्ल अगर परी - चेहरा नहीं, तो देखने में बुरा भी नहीं, शरीफ खानदान, जो अपने माँ-बाप के नाम पर, लाख ज्यादती सहले, बट्टा नहीं लगने देगी। कठिन परिस्थितियों में भी जो राई का पर्वत बनाने के बजाय खामोशी से मेरा साथ देना पसंद करेगी, और कभी भी मुझे छोड़ने को नहीं सोचेगी। अंदाजा लगाया आपने - मैंने हर तरह से एक ऐसी औरत का चुनाव किया था जो मुझसे इक्कीस ना हो, मुझ पर हर तरह आश्रित रहे और हमारे विवाहित जीवन में किसी प्रकार का विवाद ही ना पैदा हो सके।"९

एहतेशाम जी ने इन पंक्तियों में इस कहानी के पात्रों द्वारा पारिवारिक सद्भाव को दर्शाया है तथा एक पत्नी में क्या - क्या गुण और ज़िम्मेदारियाँ होती हैं उसको यहाँ व्यक्त किया है और पति - पत्नी के प्रेम भाव को भी लेखक ने व्यक्त करने का यहाँ प्रयत्न किया है ! ये पंक्तियाँ पारिवारिक सद्भावना की पुष्टि करती हुई प्रतीत होती हैं।

पारिवारिक सद्भाव :-१०:-

" तो बहरहाल, मैं तो अपने क्लीनिक में ताला डाल कर घर बैठने पर मजबूर हो गया । और उस संकटकालीन स्थिति में घर की जिम्मेदारी पत्नी ने अपने सिर ले ली। शादी के बाद काम करने से मैंने उसे रोका था, लेकिन अब उसकी नौकरी एक बड़ा सहारा बन गई। अब कहने को भी मैंने उसे मना नहीं किया, हालांकि जिस कॉलेज में उसे नौकरी मिली, उसके कर्ता-धर्ताओं और वहाँ काम करने वाली अधिकांश औरतों की करतूत का मुझे खूब अंदाजा था। मैने आँख मूँद कर मान लिया कि मेरी बीवी को उनसे कुछ लेना देना नहीं !"१०

इन पंक्तियों में एहतेशाम जी ने पारिवारिक सद्भाव को व्यक्त करते हुए बताया है की किस प्रकार पत्नी पर परिवार को संभालने की जिम्मेदारी होती है तथा पति का काम ना चलने पर पूरा खर्च संभालने और परिवार की परिस्थिति को संभालने का श्रेय उसी को जाता है । ये पंक्तियाँ पारिवारिक सद्भावना की पुष्टि करती हुई प्रतीत होती हैं।

पारिवारिक सद्भाव :- ११:-

" फिर कुछ दिनों बाद उन दोनों की शादी हो गई। उसकी आँखों में तैरते रहस्य और तलाश -धीरे-धीरे सब धुंधले पड़ते गए। उनके बच्चे हुए जो अब जवान होने को आ रहे हैं। एक पूरी दुनिया बीत गई। यह सब कुछ होने के बाद भी उसे लगता है वह अपनी पत्नी को कभी भी पूरी तरह समझ नहीं पाया। जब- जब उन दोनों के बीच कोई बड़ा संकट पैदा होता लगा, पत्नी उस सपने की याद दिला कर स्थिति को संभालने और निभा ले जाने में कामयाब रही है। मैं खुद को मुजरिम समझे या उसे मूर्ख, इस असलियत को नहीं नकारा जा सकता कि वह सपना जब - तब उनके जीवन में एक टेक साबित हुआ है।"११

इन आलोच्य पंक्तियों में एहतेशाम जी ने पति का अपनी पत्नी के प्रति सद्भाव को एक काल्पनिक झूठ बोलने के आधार पर दर्शाया है ! परन्तु इस पर पत्नी का पति के प्रति कोई रोष प्रतीत नहीं होता वह सामान्य व्यवहार से ही अपने पति तथा अपने बच्चों के बारे में बात करती है। जो कि पारिवारिक सद्भावना की पुष्टि करती है।

पारिवारिक सद्भाव :-१२:-

" क्या काम पर ....? सवेरे - सवेरे पत्नी ने डरे से लहजे में पूछा था। " नहीं," मैंने मुस्कुराकर उसे आश्वस्त करने की कोशिश करते हुए कहा था। बच्चियाँ एक-एक कर, अब्बा को ' सलाम आलैकुम' और 'बाय ' कहकर स्कूल रवाना हो गई और मैं हताश, इन दिन - ब - दिन बड़ी होती तो जिम्मेदारियों को ताकता रह गया। कितने अनजाने ही बच्चे बड़े होते रहते हैं और उनका

अंदाजा हमें अपने बेहद असुरक्षित क्षणों में कैसे बेचैन कर जाता है ! कभी-कभी यह बड़ा होना एक सहारा भी लग सकता है, मगर अधिकांश बोझ। बड़ी इस साल हायर सेकंडरी की परीक्षा में बैठेगी और छोटी आठवीं जमात में पड़ रही है !"१२

एहतेशाम जी ने यहाँ पारिवारिक सद्भाव को स्पष्ट करते हुए यह व्यक्त किया है की एक परिवार पर बेटियों की क्या जिम्मेदारी होती है तथा परिवार में एक पत्नी किस प्रकार से अपने पति को डरते हुए भी समझने का प्रयास करती है !

पारिवारिक सद्भाव :-१३:-

" 'मेरे अनिल से शादी करने पर मेरी बहनों को क्या ऐताराज़ हो सकता है ! वे भी अनिल को जानती और पसंद करती हैं ।' " क्या तुम्हें यह भी एहसास नहीं कि तुम घर की सबसे बड़ी बेटी हो ? तुमने यह भी सोचा की इस मनमानी शादी का असर बहनों की जिंदगी पर क्या पड़ेगा ?"१३

इन पंक्तियों में एहतेशाम जी ने फरीदा का पारिवारिक द्वेष दिखलाया है ! जिसका अनिल के साथ प्रेम संबंध है और वो उससे शादी करना चाहती है तथा साथ ही अनिल के बारे में फरीदा अपने मुंह बोले भाई सलीम को अनिल के बारे में सब बताती है और सलीम फरीदा की परिस्थिति को समझता है जिससे यहाँ एक भाई का एक बहन के प्रती सद्भाव व्यक्त होता दिखाई देता है ! ये पंक्तियाँ पारिवारिक सद्भावना की पुष्टि करती हुई प्रतीत होती हैं।

पारिवारिक सद्भाव :-१४:-

" ऐसी औलादें - एक अल्लाहवाला ! गश्त, तबलीग और नमाज से फुरसत नहीं जाने किन-किन चिक्कटों के गले में बांहें डाले फिरता है ! और दूसरे, दुनियावाले ! दिन रात अपने बनाव- सिंगार, पतलून की क्रीज और जूते की पॉलिश की फिक्र से ही फुर्सत नहीं ! जाने कहाँ, इंग्लैंड - अमेरिका में जाकर बसेंगे ! यही सोचकर चैन आ जाता मगर साले, हाईस्कूल तक तो पास कर नहीं पाए ! एक बेटी है बेचारी जो संजीदगी से पढ़ - लिख रही है। बस, उसी का सोच कर थोड़ा-सा इत्मीनान होता है !"१४

यहाँ पर एहतेशाम जी ने एक परिवार के बच्चों से परेशान एक पिता की मनःस्थिति को दर्शाया है ! जो की एक अल्लाहवाला तबलीग, गश्त और नमाज़ में ही लगा रहता है और दूसरा दुनियावाले साज - सज्जा और व्यर्थ के प्रलोभनों के पीछे लगा रहता है ! बस एक बेटी ही है जो अपने पिता को थोड़ी खुशी दे पाती है और खुश रख पाती है !

पारिवारिक सद्भाव :-१५:-

" मैने तुम्हें इसलिए बुलाया है, खान साहब ने बिना किसी भूमिका के अपनी बात शुरू की थी, " कि मैं बस एक महीने का वक्त और दे सकता हूँ तुम दोनों को । इस बीच अगर कुछ काम - धंधा कर सकते हो, घर का खर्च चलाने में हाथ बटा सकते हो, तो इस घर में तुम्हारे लिए जगह है, वरना मैं तुम्हें इस छत के नीचे नहीं रहने दूँगा। जुआ खेलो, सट्टा लगाओ या कहीं से चोरी करके लाओ कुछ नहीं तो अपनी दाढ़ी और सिजदे के निशान के नाम पर भीख माँगकर दिखाओ !"१५

इन उपर्युक्त पंक्तियों में खान साहब ने अपने पारिवारिक रोष को दर्शाया है ! जिससे वे अपने बच्चों को एक जिम्मेदार इंसान बना सकें ये यहाँ परिवार के प्रति जिम्मेदारियों को समझने का प्रयास करते हुए प्रतीत होते हैं !

पारिवारिक सद्भाव :-१६:-

" तुम उन लोगों के ज्यादा करीब हो, मुझसे बेहतर जानते हो, लेकिन खुद अपने बारे में जरूर मैं यह यकीन से कह सकता हूँ कि जब मेरे बीवी बच्चे मुझे भीड़ में घिरा देखते हैं, लोगों की आँखों में जो इज्जत और सम्मान उन्हें मेरे लिए नज़र आता है, या जब लोग मुझे मंच से बोलता सुनते दिखाई देते हैं तो कई कमियों की तलाफी होती मुझे अपने घर वालों की नज़र में महसूस होती है। बोलते - बोलते वह पल भर को रुका था और आवाज नीची करते हुए जोड़ा था - तो तुम्हारे अजीज शायर -दोस्त की बीवी -बच्चे भी दुनिया से जुदा होने से तो रहे। क्यों ? - सवाल मुझसे था। - नए - नए लेखक साहब क्या सोचते हैं ? "१६

इन पंक्तियों में लेखक ने मुख्य पात्र के द्वारा उसकी समाज और परिवार में अपनी पत्नी एवं बच्चो की नज़रों में अपनी मान मर्यादा एवं प्रतिष्ठा को बनाए रखने का प्रयत्न करता दिखलाई देता है ! ये पंक्तियाँ पारिवारिक सद्भावना की पुष्टि करती हुई प्रतीत होती हैं।

पारिवारिक सद्भाव:- १७:-

" हर एक में फटी जूती या चप्पल की जोड़ी थी । किसी की एक ऐडी गायब, किसी के फीते टूटे, किसी का तला घिसा हुआ, मैं काफी देर तक, खाली दिमाग, वहीं बैठा रहा। मुझे यह भी याद आया कि पिछले कई महीनों से मैं बीवी के पांव में वही प्लास्टिक की चप्पल देखता रहा था, जो न तो उसे पसंद थी, ना मुझे। डिब्बे वैसे ही बंद करके और उन्हें वापस अपनी पुरानी जगह पर सजाकर मैं जाने कितनी देर बैठा रहा!"१७

एहतेशाम जी ने इन पंक्तियों में मुख्य पात्र के द्वारा उसके परिवार की स्थिति को दर्शाया है की उसके परिवार के सदस्य किस परिस्थिति में अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं ! इनके मुख्य पात्र की पत्नी के पैरों में प्लास्टिक की चप्पल के आधार पर हमको अनुभव हो जाता है ! जो कि पारिवारिक स्थिति को दर्शाती है।

पारिवारिक सद्भाव:-१८:-

" फिर ना जाने क्या हुआ कि अत्तू मियाँ और मशीन की आरियों में ठन सी गई ! रह - रह कर दुर्घटना होती थी और आत्तू मींया कभी मामूली कभी गंभीर रूप में जख्मी हो जाते थे। देखते - देखते उनका चेहरा इस लड़ाई की निशानियों से पट गया था। उन्होंने एक आँख गवा दी थी और दाहिने हाथ का अंगूठा खो दिया था। शादी के दस साल के अंदर ही वह अपाहिज, तीन बेटियों के बाप, जमीला को फिर से बीड़ी का सुपाड़ा थमाने और छोटे बच्चों को कुरान पढ़ा कर गुजारा करने पर मजबूर छोड़कर, दुनिया से रुखसत हो गए थे। जमीला ने अपनी औलादों को किस तरह पाला - पोसा, उनकी शादियाँ की, वह एक और दिलचस्पी से खाली और हमारी कहानी से ही जन्म लेनेवाली, दरअसल एक दूसरी कहानी है जिसकी तफसील में जाना यहाँ असंगत और अनावश्यक होगा । लेकिन आत्तु मियाँ के दु:खदाई अंत तक, उन दस सालों में खुद सकीना आपा की जिंदगी ठहरी नहीं रही, सुस्त रफ्तारी या तेज़ी से उनके आस - पास, कुछ -ना कुछ होता रहा !"१८

आलोच्य पंक्तियों में लेखक ने आत्तु मियाँ एवं जमीला के पारिवारिक जीवन को दर्शाया है की किस तरह अत्तू मियाँ का इंतकाल हो जाता है एवं जमीला अपने परिवार का जैसे - तैसे भरण - पोषण करती है और अपने परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करती है ! ये पंक्तियाँ पारिवारिक सद्भावना की पुष्टि करती हुई प्रतीत होती हैं।

पारिवारिक सद्भाव:-१९:-

" बस, असाधारण विपदाओं में घिरे होने के बावजूद एक सकीना आपा थीं, जो इस अनेक टुकड़ियों में बंट रहे परिवार की हर टुकड़ी को अपने में पूरा और खुद अपना खानदान समझती थी। उनको खानदान वालों के आपसी झगड़ों से कोई सरोकार नहीं था और सबके यहाँ, उसी पुरानी अपनाईयात के साथ आना - जाना था !"१९

इन पंक्तियों में एहतेशाम जी ने सकीना आपा पात्र के आधार पर पारिवारिक सद्भाव को व्यक्त किया है की सकीना आपा, जमीला और अत्तु मियाँ के परिवार की सदस्य ना होकर भी इनके टुकड़ियों में बंट रहे परिवार और खानदान को सकीना आपा अपना खानदान समझती थी और इनके साथ पारिवारिक भाव से जुड़ी हुई रहती थी !

पारिवारिक सद्भाव :-२०:-

" भाई साहब से हिसाब लगवाया था उन्होंने, साजिदा ने दबी आवाज़ में आगे जोड़ा , ' साढ़े सात सौ बनते हैं ! अम्मा जी कह रही थी कुछ और तंगी से गुजर कर लेंगे लेकिन यह फर्ज अदा हो जाए तो उन्हें बहुत सुकून मिलेगा। गरीबी और कम हैसियत लोगों का हक और खुदा का हुकुम तो हमें पूरा करना ही चाहिए। और जकात की तो फजीलत बयान की गई है कि जिस चीज पर अदा कर दी जाए, अल्लाह मियाँ उस पर आग, पानी, चोरी, डाका - सारे खतरे हराम फरमा देते हैं। इससे ज्यादा किस चीज की तमन्ना की जा सकती है भला....? जैसे ही साजिदा की नज़र उससे मिली वह एकदम गड़बड़ा गई, ' अम्मा जी ही कह रही थी।' अपनी आवाज एकदम से धीमी करते हुए उसने बात वहीं छोड़ दी।
" कहने दो अम्मा जी को !" लहजे में इकट्ठा गुस्से को दबाते हुए हुए बोला," अंबाजी को यह नज़र नहीं आता कि 5 साल से घर की दीवारें कलाई को तरस रही है। घर मकबरा लगने लगा है। पैसे हों तो मै यह जरूरी काम न कराऊँ !"२०

इन आलोच्य पंक्तियों में लेखक ने पारिवारिक द्वेष तथा पारिवारिक परिस्थितियों को दर्शाया है की साजिदा के शोहर किस तरह परिवार तथा घर के प्रति भाव लिए हुए हैं ! घर की मरम्मत के लिए पैसे तक नहीं और अम्मा जी ज़कात करवाना चाहती हैं !

पारिवारिक सद्भाव :-२१:-

" उसने मुझे अपनी आँखों से तोलने के बाद, बहुत सधे लहजे में कहा था - तुम्हारे उस बचपन के दोस्त से मैं घृणा करती थी ! मैं आग्रह नहीं कर रही, कि मेरी बात को समझने की कोशिश करो, मगर हमारा साथ मँगनी नहीं तो शादी के बाद टूटता ! उस हिसाब, से सब ठीक हो गया ! मैंने उस आदमी को, जीवन के किसी क्षण, कभी पसंद नहीं किया !- मेरे पास तारा से पूछने को बहुत कुछ था : कि मंगनी क्यों की, साथ क्यों रही, और घृणा की अनुभूति, इतनी अकस्मात कैसे हुई। लेकिन लगा, यह बातचीत का एक अनचाहा, औपचारिक विस्तार होगा। ना तो हो चुके को बदला जा सकता था, ना मुझे तुम्हारी प्रतिक्रिया मालूम थी !"२१

यहाँ एहतेशाम जी ने पारिवारिक सद्भाव को इस प्रकार प्रस्तुत किया हैं कि यहाँ तारा का परिवार किस तरह से टूट बिखर-सा रहा है तथा उसके परिवार में एक पारिवारिक द्वेष भी दिखलाई पड़ता है जिसके कारण तारा अपनी मंगनी के बाद भी अपना रिश्ता तोड़ देती है तथा विकास के प्रति आकर्षित हो जाती है !

<u>-: सामाजिक सद्भावना :-</u>

भूमिका :- सामाजिक सद्भावना वह सद्भावना है जो की समाज में रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति और परिवार एक दूसरे के प्रति रखता है ! इस सद्भाव में सामाजिक व्यक्ति अपने परिवार के सदस्यों के साथ - साथ समाज में रहने वाले लोगों के प्रति अपनी सद्भाव-वृत्ति रखता है जिससे उसके सामाजिक व्यवहार का पता चलता है !

समाज में ऐसे कई लोग विद्यमान होते हैं जो एक - दूसरे के सुख - दुख में साथ देते हैं तथा एक - दूसरे से मेल - मिलाप रखते हैं। हर व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी होता है एवम् समाज हर व्यक्ति के जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है ! चाहे वो कोई खेल का मैदान हो या बच्चों के शिक्षा ग्रहण करने का स्थान ! हर जगह पर यह सद्भाव विद्यमान होता है !

महात्मा गांधी जी ने अपने सम्पूर्ण जीवन में अक्सर समाज में सामाजिक सद्भावना को स्थापित करने का ही निरंतर प्रयास किया है ! महात्मा गांधी जी ने कहा था की, “मेरे सभी कार्यों का स्रोत मानव जाति का अविच्छेद्य प्यार है।"२२ इससे यह प्रतीत होता है की उनका समाज में रहने वाले लोगों के प्रति कितना सौहार्द और प्रेम था !

सामाजिक सद्भाव के आधर पर मंज़ूर एहतेशाम जी की कहानियों में वर्णित सामाजिक सद्भावना पर हम एक महत्वूर्ण दृष्टि केंद्रित कर रहे हैं। अपनी कहनियों में इन्होंने सामाजिक सद्भावना का बहुत ही मार्मिक प्रस्तुतीकरण किया है। इनके साथ - साथ कई कहानीकार भी हुए हैं जिन्होंने अपनी कहानियों मे सामाजिक सद्भावना का समावेश किया है। इस सद्भावना की पुष्टि इनकी कहानियों में दृष्टिगोचर होती है।

सामाजिक सद्भावना को कथा - साहित्य की दृष्टि से भी बहुत महत्त्वपूर्ण माना गया है एवं कथा - साहित्य के अत्यधिक लेखकों ने अपनी रचनाओं में इस सद्भावना को समाहित किया है ! आधुनिक युग के रचनाकारों में कई रचनाकार हुए हैं जिन्होंने सामाजिक सद्भावना को अपनी कहानियों में स्थान दिया है तथा इस युग के प्रसिद्ध लेखक मंज़ूर एहतेशाम जी भी हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं में पारिवारिक सद्भावना को अपनी कहानियों में समाहित किया है जिससे पाठक के मन में सामाजिक सद्भावना जागृत हो उठती है। इनकी कहानियों के द्वारा इसकी पुष्टि इस प्रकार हैं :-

-: मंज़ूर एहतेशाम की कहानियों में सामाजिक सद्भावना :-

मंज़ूर एहतेशाम जी ने पारिवारिक सद्भाव के साथ - साथ सामाजिक सद्भावना को भी अपनी रचनाओं में समाहित किया है ! जिनकी पुष्टि निम्न आधार पर की जा सकती है जिसके उदहारण इस प्रकार हैं:-

सामाजिक सद्भाव:- १ :-

" घर अंधेरे में डूबा हुआ था ! खामोशी में हवा के हल्के झोंकों के साथ दरखतों की शाखें सरसराती हुई बरामदे पर डोल जाती थीं, उसके बाद फिर वही खामोशी तभी कदमों से सीढ़ियां चढ़ता शरीफ ऊपर तक आया । अन्दर दालान में फर्श पर बसतनी बिछी हुई थी और लोग खाने का इंतजार कर रहे थे..... वही सब लोग जो जनाजे के साथ कब्रिस्तान तक गए थे। एक पल को उसकी नज़रें बसतनी पर खाना लगाती पम्मो से मिली और फिर वह अपने कमरे की तरफ मुड़ गया !"२३

इन पंक्तियों में लेखक ने सामाजिक सद्भाव की पुष्टि इस प्रकार की है कि जब शरीफ कमरे में ऊपर आया तो सभी सामाजिक लोग जो जनाजे के साथ गए थे वो सभी कब्रिस्तान से वापस आए थे तो इस परिवार का इस करुण परिस्थिति में समाज के लोगों ने साथ दिया ! जिससे सामाजिक सद्भावना का यहाँ समावेश परिलक्षित होता है !

सामाजिक सद्भाव :-२:-

" शाम होते अपना समान लेकर वह घर में आ गया था।

.... भीड़ जमा थी। एक तरफ औरतें मातम करती औरत को दम- दिलासा दे रही थी, दूसरी तरफ बड़ी बड़ी मूछों वाले लच्छमन काछी को लोग घेरे खड़े थे। इन लोगों का दस वर्षीय बेटा बावड़ी में डूब मरा था। भीड़ किसी तैराक का इंतजार कर रही थी जो गोता लगाकर लाश बाहर निकाल सके।"२४

इन पंक्तियों में जब मुख्य पात्र किराए पर मकान ढूंढ़ते हुए एक बूढ़े व्यक्ति के घर पहुंचता है तो उस मकान मालिक ने बावड़ी में भूत होने की बात बताई और जब वह मन बनाके अपना सामान किराए वाले घर में लाया तो उसी बावड़ी में किसी के बच्चे के गिरने की उसे सूचना मिली और उसी बावड़ी को घेरे हुए सब खड़े थे परन्तु भूत की बात सबके दिमाग में होने के कारण कोई भी उस बावड़ी में उतरना नहीं चाहता था ! ये देखकर इस कहानी का नायक बावड़ी में उतर कर बच्चे को बचाने का निश्चय करता है परन्तु बावड़ी के पास खड़े सभी लोग उसे बावड़ी में जाने के लिए मना करते हैं और ये कहते हैं की तुम अपनी जान खतरे में मत डालो कल्लू पहलवान के आने का इंतज़ार करते हैं।

सामाजिक सद्भाव:-३:-

" उसे बावड़ी पर देख लोग मुड़े थे और दुर्घटना की तफसील बताना चाही थी। उसका खून गुस्से में खोल रहा था। कुछ समय पहले, उसने लोगों को याद दिलाया, मोहल्ले वालों ने इस आदमखोर, भूतियाई आसेबज़दा बावड़ी से छुटकारा पाने का तय किया था। लोगों ने अपने सिर जिम्मेदारियां ली थी। क्या हुआ ! कितने लोग अर्जी जमा करने के बाद दोबारा बड़े दफ्तर गए ! और वह मोहल्ले की हमदर्दी के ठेकेदार- सूबेदार साहब, जो रोज शाम बड़े साहब के साथ शतरंज खेलते हैं, क्या किया उन्होंने आज तक ? क्या यह सांप -सी, मुंह खोले बावड़ी यूं ही पड़ी रहेगी और वह एक के बाद एक उसकी खुराक बनते रहेंगे। कल्लू पहलवान उसे नफरत से घूरता बावड़ी से विदा हो गया था। कोई जवाब नहीं। वह गुस्से से भरा घर लौट गया थोड़ी देर बाद कुछ मोहल्ले वाले जमा होकर उसके पास आए वे शर्मिंदा थे और यकीन दिलाना चाहते थे कि जो - जो वादे उन्होंने किए थे वो पूरे करेंगे !"२५

एहतेशाम जी ने इन पंक्तियों में सामाजिक सद्भाव को इस प्रकार व्यक्त किया है कि उस समाज में रहने वाले लोग एकमत होकर बावड़ी पाटने का निश्चय कर लेते हैं और योजना बनाते हैं और यह तय करते हैं की सभी लोग अपने - अपने घरों से कुछ ना कुछ बेकार सामान लाकर अगर इस बावड़ी में डालते रहें तो कुछ दिनों में ही यह बावड़ी पट जाएगी !

सामाजिक सद्भाव:-४:-

" भारी क़दमों से वह पनवाड़ी की गुमटी तक आए ! यहाँ किट्टन, नब्बू और वाहिद, काले खड़े थे और बात बकरों की आसमान छूती कीमतों को लेकर चल रही थी। -अरे मियाँ, नब्बू ने पीक थूकते हुए कहा - अपन ने तो सोचा है, पाडे में हिस्सा लिए लेते हैं। अभी इतने बड़े भी नई की पान - पान सौ का बकरा खरीदें ! बशीर खां जानते हैं नब्बू का निशाना वाहिद काले थे। उन्होंने आज ही हाट से एक दिखलौट बकरा पाँच सौ रुपए में खरीदा था।"२६

इन पंक्तियों में वाहिद, काले, नब्बू सामाजिक रूप में एकत्रित होकर एक दूसरे को सलाह देते हुए प्रतीत हो रहे हैं जो कि सामाजिक सद्भावना की प्रतिपुष्टि करता हुआ हमें प्रतीत होता है।

सामाजिक सद्भाव:-५:-

" - पढ़ा क्या यार, तुम तो ऐसा करो - वाहिद काले ने नब्बू के कंधे पर हाथ रखकर आवाज इस तरह नीची की जैसे कोई राज की बात बता रहे हो - यह जो अपना मौलाना छदमची है, बक्रोट साला - ! लगता है ना बिलकुल बकरे की तरह ? रोज साला लाउडस्पीकर पर इस तरह अजान देता है, जैसे तानसेन हो और आवाज लगती है भीख मांगती ! इसे किसी तरह पकड़ कर

निपटा दो ! कसम से सारा मोहल्ला दुआएं देगा और शबाब अलग मिलेगा। कम से कम सौ बकरों की कुर्बानी का !"२७

इन पंक्तियों में वाहिद काले नब्बू से कहता है कि मौलाना छदामची को समाज में कोई पसंद नहीं करता है और रोज सुबह तानसेन की तरह अजान देता है पर उसकी आवाज़ भीख मांगती आवाज़ सी लगती है ! तुम इसे निपटा दो सभी समाज के लोग तुम्हें दुआएं देंगे और तुम्हे सबाब भी मिलेगा कम से कम सौ बकरों की कुर्बानी का जिससे यह दृष्टिगत होता है की समाज के भले के लिए वाहिद काले नब्बूको मौलाना को निपटाने के लिए बोलता है।

सामाजिक सद्भाव :-६:-

" खरे चल दिया था लेकिन मित्तल नमकीन भंडार वाले सेठ ने उनसे खरीदी चीजों के पैसे लेने से इंकार कर दिया था। स. हरिश्चंद्र की खुशी उसकी खुशी थी और उनके घर का जश्न, उसके अपने घर जैसा । वह तो खैर हुई जब आगे मार्केट से उन्होंने तलने के लिए डेढ़ किलो मछली खरीदी तो किसी ने रम्मा भोयन को भी यही समाचार नहीं सुना दिया, वरना मुफ्त नहीं तो वह भी कुछ -ना -कुछ पैसे कम जरूर कर देती। कैसे अच्छे लोग हैं बेचारे, सुख - दुख दोनों में बराबरी के भागीदार, स. हरिश्चंद्र ने खुद से ही कहा और खुद से ही खिलखिलाकर हंस दिए !" २८

इन उपर्युक्त पंक्तियों में सामाजिक सद्भाव भरपूर मिलता है ! स. हरिश्चंद्र के पुत्र होने की खुशी में समाज में रहने वाले लोग उसे अपनी खुशी मानते हैं तथा खरे राह चलते हरिश्चंद्र को बधाई देता है और हाथ जोड़कर कहता है हमारे योग्य कोई सेवा हो तो बताएं और फिर आगे चलकर मित्तल नमकीन भंडार वाले सेठ हरिश्चंद्र से उस खरीद का पैसा नहीं लेते और कहते हैं की आपके घर की खुशी मेरे घर की खुशी जैसी है ! ये संवाद साफ ही सामाजिक सद्भावना को दर्शाते हुए नज़र आ रहा है।

सामाजिक सद्भाव :-७:-

" रहीम साब बस आते ही होंगे ! रोज महल पर शराब पीते, पत्ते खेलते इतना-इतना समय बीता जाता है। और महल में अब है क्या ! बाहर की दीवारें मुद्दत से गले की मुहताज और अंदर बैठकर जो कुछ है उसे भी भेज डालने के मंसूबे ! लेकिन रहीम साहब ठहरे पुराने नमक ख्वार। अपना फर्ज निभाने में लगे हुए हैं । महलवालों के मामले हल करने के लिए, उन्हें मिनिस्टर्स और सिविल सर्वेंट्स से मिलवाने के लिए, वह एक तरह से पी. आर. ओ. बने हुए हैं। अब जरूरत समझी जाती है इसी कोठी पर दांतो का इंतजाम होता है, जहाँपुरानी रॉयल फैमिली और नए हो मत करने वालों को एक दूसरे को करीब से देखने और जानने का मौका मिलता है और सौदेबाजी होती है। ज्यादातर मामले बड़ी खूबी से तय भी हो जाते हैं। वह खुद होस्टेस की हैसियत से इन दावतों में

रहीम सब के शाना - ब - शाना होती है और तरह तरह के लोगों से, मिलकर बात करके, उसे अच्छा लगता है !"२९

इन पंक्तियों में एहतेशाम जी ने शब्बो पात्र को एक सामाजिक व्यक्तित्व की तरह दर्शाया है जो की समाज में सबसे मेल - जोल बनाने वाली प्रतीत होती है एवं रहीम साहब से भी शाना - ब - शाना होती रहती है !

सामाजिक सद्भाव :-८:-

" एक घटना ऐसी थी जिसने खान साहब के परिवार के दिल में हलीमन की इज्ज़त बहुत बढ़ा दी थी। गैस निकलने के बाद हलीमन अपनी तो वाला धोखा तो खुला ही ना पाई थी कि मोहल्ले की एक विधवा अपनी चार महीने की बेटी का बारिश छोड़कर खत्म हो गई। अभी लोग सोच ही रहे थे कि बच्ची को यतिमखाने के सुपुर्द किया जाए या कुछ और, की हलीमन अपने बच्ची की परवरिश का जिम्मा लेने का ऐलान किया। जिस औरत की अव्वल ही इतनी जिम्मेदारियां हों उसका जिगरा देखकर सब दंग रह गए थे। हलीमन ने जैसा कहा, वैसा कर भी दिखाया और उस लड़की को अपनी औलाद का सा लाड - प्यार देकर इस तरह पाला कि उसे कोई अलग से पहचान भी नहीं सकता था ।"३०।

आलोच्य पंक्तियों में मंज़ूर एहतेशाम जी ने समाज के ऐसे सद्भाव को हलीमन पात्र के द्वारा दर्शाया है जो की आज के समाज में बहुत ही कम देखने को मिलता है !

सामाजिक सद्भाव :-९:-

" बुज़ुर्ग ने दुआ पूरी करने के बाद कुछ कहने को मुंह खोला था लेकिन इससे पहले की आवाज़ उनके होठों तक आ पाती, दृश्य में बगुले - सी चकराती हलीमन का प्रवेश हुआ था। आज बहुत कुछ इतनी जल्दी में थी कि घर वालों को सलाम करना भी भूल गई थी। हमेंशा की तरह उसने मैला - कुचैला बुर्का पहन रखा था और हाथ में सिद्ध पिक पदार्थ से बनी गंदी थेली थी जिसमें कुछ वजन था, और जिसे उसने ले जाकर खान साहब के पास जमीन पर रख दिया था। " भाई साहब," उसने हांफती आवाज में खान साहब से कहा था, " यह है पच्चीस हजार रुपए। यह दूल्हा भाई को पहुंचा दे, और यह भी कहला दें की बड़े मियाँ (अर्थात्् अल्लाहवले) की कीमत उन्होंने बहुत कम आँकि "३१

लेखक ने इन पंक्तियों में हलीमन जो खान साहब के घर काम करने आया करती थी उसने सामाजिक सद्भाव को यहाँ एक पारिवारिक भाव प्रदान किया है ! खान साहब की बिगड़ती हुई परिस्थिति को देखते हुए वह २५००० रूपए इकठ्ठा करके खान साहब को दे देती है और वह खान साहब को भाई के समान दर्जा देती है !

सामाजिक सद्भाव :-१०:-

" ट्रैफिक - स्कवेड और बस चालकों के बीच विवाद ज्यादा ही तूल पकड़ गया था, जिससे एक ही नतीजा निकाला जा सकता था की ड्राइवर- कंडक्टर अनाड़ी -लेने -देने का हुनर ठीक से नहीं जानते थे। बाजू में बैठे हाथ जोड़ने, आँख मूंदने, बुदबुदाने वाले की ओर उसने देखा - वह बहुत धेर्य के साथ अपनी जगह स्थापित था और लोगों के जाने ने उसे जरा भी मोहित नहीं किया था। बिना अक्षर ' शान्ति- शांति - शांति ' उसकी आँखों में लिखा साफ पढ़ा जा सकता था।!"३२

उपर्युक्त पंक्तियों में लेखक ने एक बस यात्रा के द्वारा यात्रियों के बीच सामाजिक सद्भाव को दर्शाने का प्रयास किया है ! एक अजनबी के प्रति चिंता एवं उसके स्टेशन जल्दी पहुंचने के भाव को यहाँ दर्शाया गया है !

सामाजिक सद्भाव :-११:-

" - बहुत खुशी हुई आप लोगों से मिलकर, खान ने गर्मजोशी से हाथ मिलाते हुए अपनी भारी आवाज में कहा - इस तरह आप लोगों की बातचीत में दखलंदाजी के लिए मैं एक बार फिर से माफी चाहता हूँ, मगर मुझे लगा शायद आप लोग ही मेरी बात में दिलचस्पी ले सकेंगे । दरअसल, किसी के साथ कभी कभी कुछ ऐसा घटता है कि किन्हीं खास मौकों पर उसका साझा किए बिना नहीं रहा जाता। आपकी बातें देर तक खामोशी से सुनने के बाद लगा यह मेरे लिए एक ऐसा ही अवसर है। दरअसल आपकी शक्ल में मुझे अपने छोटे भाई का चेहरा नज़र आने लगा - लगभग आपका ही हमउम्र।"३३

एहतेशाम जी ने इन पंक्तियों में एक अजनबी इंसान द्वारा एक संगठन में बात कर रहे लोगों के बीच दखलंदाजी कर उन सबके साथ एक सहानुभूति पूर्वक व्यवहार को दर्शाया है जिससे समाज में सद्भावना का स्वरूप उभर कर पाठकों के सामने परिलक्षित होता है।

सामाजिक सद्भाव :-१२:-

" बहुत ट्रेजिक, सान्याल, कह रहा था- मगर खान कितना सज्जन व्यक्ति है। सचमुच, दुनिया में अच्छे लोगों के साथ ही अनहोनी होती है। फिर भी देखो, उसने अपना संतुलन कितने सलीके से बनाया हुआ है।
- पता नहीं, व्यास ने दुखी स्वर में कहा - उसकी मां बेचारी पर क्या बीती होगी !
- फिर भी वह दुनिया को कारण और परिणाम की कड़ियों में पिरा सिलसिला मानता है,यह कितनी बड़ी बात है !"३४

इन पंक्तियों में सभी एक सामाजिक माहौल बना कर खान के प्रति अपने सद्भाव को व्यक्त कर रहे हैं जो की एक अनजान व्यक्ति है तथा सभी मित्र खान की कहानी सुनकर भाव -विभोर हो गए हैं !

सामाजिक सद्भाव :-१३:-

" सकीना अपा ने उसे भी दिलासे दिए होंगे, जैसे कि सारी उम्र अपनी औलाद ही नहीं, दुनिया - जहान में उन्हें जो भी जरूरत मंद लगा, उसे दिए। और कनीजा तो उनकी संतान थी, जिससे खुद सकीना आपा के कहे अनुसार, उनकी बिना बोले भी बातचीत हो जाती थी। वैसे दुनिया को समझने -समझाने का, सकीना आपा का, खुद अपना एक अंदाज था। एक बार जैनब हूज्जत करने लगी कि यह जमीन -आसमान सात -सात ही क्यों होते हैं ? सात से कम या ज्यादा क्यों नहीं ! देर तक उन्होंने जैनाब के सवालों को टालने की कोशिश की, मगर जब वह नहीं मानी तो सकीना आपा ने अपनी ठांसी आवाज में चुटकी भरी थी - कैसी कमअक्ल लड़की है! इसे यह भी समझ नहीं आता कि हम सात कोठरियों में रहते हैं ! हमारी मस्जिद के साथ कोठरियाँ हैं और हर कोठरी एक जमीन एक- आसमान के बराबर है ! बेवकूफ कहीं की ! समझी तो जैनब क्या होगी - समझ भी क्या सकती है, मगर सकीना आपा का लहज़ा उसे उस पल चुप कर देने को काफी था !"३५

इन पंक्तियों में सकीना आपा एक ऐसी पात्र हैं जो की समाज में रहने वाले लोगों के प्रति सद्भाव रखती है तथा दुनिया जहान में वे जरूरतमंद लोगों की सहायता करती हैं। इससे यह प्रतीत होता है की एहतेशाम जी ने इस पात्र के द्वारा सामाजिक सद्भाव की भावना को बहुत ही स्पष्ट रूप प्रदान किया है ।

सामाजिक सद्भाव :-१४:-

" यह छोटे भाई के बेटे की शादी की बात है, जो शहर के ही एक खानदान में हो रही थी। पिछले महीने शादी की गर्मा -गर्मी रही थी। इसकी शुरुआत मंगनी के फौरन बाद ही हो गई थी। घर के बड़ों के जरिए तय की गई शादी थी, और हमें यकीन था कि वह लोग भी इसमें शिरकत करने आएंगे, जो पाकिस्तान या खड़ी के देशों में बस गए थे ।"३६

एहतेशाम जी की कहानी की इन पंक्तियों में इन्होंने ऐसा सामाजिक सद्भाव दर्शाया है कि जो आज़ादी से पूर्व अथवा विभाजन से पूर्व भारत में लोग रहते थे उनका आपस में एक सामाजिक एवं पारिवारिक सद्भाव जुड़ सा गया था इसी सामाजिक सद्भाव से पड़ोस में रहने वाले रिश्तेदार जो की पाकिस्तान और खाड़ी में रहते थे वहाँ से सब छोटे भाई की शादी में जरूर आएंगे। जो सामाजिक सद्भावना को व्यक्त करता है।

सामाजिक सद्भाव:-१५:-

" हमें बालकनी के टिकट के पैसे दिए जाते हैं और जनता को निचली क्लास के लेकिन हम लोग अपने पास से पैसे मिलाकर चंदा को भी बालकनी में ही बिठाते। फिल्म का आधा सूक्त चंदा के मजे - मजे के कमैंट्स ही होते थे और उससे हटकर भी हमें खुद बालकनी में और चंदा का नीचे बैठना गवारा नहीं था !"३७

इन पंक्तियों में एक नौकर के प्रति मालिक के बच्चों का सामाजिक सद्भाव दर्शाया गया है जिन बच्चों की उम्र इतनी कम होते हुए भी उनके मन में एक इंसानियत का भाव है तथा बच्चों को खुद बालकनी में और चंदा का नीचे वाली सीट पर बैठना अच्छा नहीं लगा तो वह अपने जेबखर्च के पैसों से चांद को भी अपने साथ बालकनी की टिकट दिलवा के अपने साथ बिठाने का निश्चय करते हैं।

सामाजिक सद्भाव:-१६:-

" - अपने लिए कुछ बचाकर रखना ! उसे याद आया था, वह चुप रहा था । - ऐसा नहीं, मेजबान ने आश्वस्त करते हुए कहा था - इसी बहाने आपको और आपके साथ, आपकी सोच को जानने का अवसर मिला। इसे एकांत में साझा करने वाला भी तो मुश्किल से मिलता है । आपकी बीमारी मेरे इस सुख का कारण बनी है, आप बात गलत ना समझे तो कहूँ । और आज तो, आपकी तबीयत में सुधार देखते हुए, मैं इतना साहस करना चाहूँगा कि अभी.... फौरन नहीं... कुछ शराब पीने के बाद, अपनी कुछ रचनाएं- कविताएँ, पढ़कर सुनाऊं और उसके बारे में आपकी राय जानूँ !"३८

उपर्युक्त पंक्तियों में एहतेशाम जी ने एक अनजान व्यक्ति के साथ सामाजिक सद्भाव को दर्शाया है जो की अपनी काल्पनिक कविताएँ सुनाता है और उसके द्वारा समाज के लोगो के साथ उसकी व्यावहारिक परिस्थिति को भी दर्शाया गया है !

सामाजिक सद्भाव :-१७:-

" उम्मीद के बरखिलाफ नीता खिलखिला कर हंस दी थी और उसके चहरे की उदासी छँट गई थी। ' यार विकास ! ' हँसते - हँसते में खोकर नीता बोली थी, लगता है, इतना साथ रह चुकने और एक- दूसरे को जानने के बाद, कितना अच्छा हो बाकी जिंदगी भी हम साथ जिएं, चल मैं कर दिया करूंगी तेरी कंघी - चोटी ! सच, किसी अजनबी के साथ फिर से जिंदगी शुरू करने

से तो यह कहीं बेहतर होगा। मैं तेरी सारी शर्तें मानने को तैयार हूँ ! तुम मुझे हॉट - ब्लडेड, मर्द -मार समझकर डरता है ना, मैं तेरे लिए खुद को बदल डालूंगी। कभी कोई शिकवा या फरमाइश नहीं करूंगी ! कह दे ना यार, विकास हां कह दे !"३९

एहतेशाम जी ने अपनी कहानी 'ठंडे बस्ते' की इन पंक्तियों में मित्रता अथवा समाज में रहने वाले मित्रों के साथ का आपसी सामाजिक हास्य व्यंग प्रस्तुत किया है जिसमें नीता हँसी मजाक में विवाह का प्रस्ताव विकास के सामने रखती है और विकास भी उसी हास्य परक्ता से नीता का हुक्म बजा कर हाँ कहता है।

-: धार्मिक सद्भावना :-

भूमिका :- पूर्व अध्याय में वर्णित धर्म की भूमिका के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि धर्म के प्रती लगाव रखना ठीक है परन्तु सभी धर्मों को बराबर का सम्मान भी दिया जाना चाहिए एवं सभी धर्मों को हमें सद्भावना की दृष्टि से देखना चाहिए ! यह देखा जाए तो प्रत्येक धर्म में सद्भावना देखने को मिल जाती है वो चाहे हिन्दू धर्म हो या मुस्लिम तथा सिक्ख हो या ईसाई ! इसको ध्यान में रखते हुए एहतेशाम जी ने अपनी कहानियों में भी धार्मिक सद्भावना का बहुत ही हृदयग्राही वर्णन किया है। इस सद्भावना की पुष्टि इनकी कहानियों में दृष्टिगोचर होती है।

आधुनिक युग के रचनाकारों में कई रचनाकार हुए हैं जिन्होंने धार्मिक सद्भावना को अपनी कहानियों में स्थान दिया है तथा इस युग के प्रसिद्ध लेखक मंज़ूर एहतेशाम जी भी हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं में धार्मिक सद्भावना को अपनी कहानियों में समाहित किया है जिससे पाठक के मन में धार्मिक सद्भावना जागृत हो उठती है ! हम इनकी कहानियों के द्वारा इसकी पुष्टि कर रहे हैं।

-: मंज़ूर एहतेशाम की कहानियों में धार्मिक सद्भावना :-

मंज़ूर एहतेशाम जी ने अपनी रचनाओं में सामाजिक, पारिवारिक सद्भावना के साथ - साथ धार्मिक सद्भावना को भी स्थान प्रदान किया है जिससे इनकी कहानियाँ और भी कारगर सिद्ध हुई हैं !

धार्मिक सद्भाव :-१:-

" - अगर खुद साफ नहीं रह सकते तो दूसरों को तो चैन से मरने दें ! खुद के पलंग पर नहीं लेट, सारी चादर का सत्यानाश कर दिया ! सुहेला भाभी खुद को एक खूबसूरत सिंगार मेज में लगे आईने में देखते हुए बुदबुदा रही थी - और अगर चाँद दिख गया तो कल ईद है। कोई धुली चादर भी न होगी !"४०

एहतेशाम जी की ये कहानी 'रमजान में मौत' की पात्र सुहेला भाभी के द्वारा इन पंक्तियों में ईद के चाँद का दिखना एवम् धर्म के प्रति ईद त्योहार के सद्भाव को दर्शाया गया है ! जिससे एक धर्म के प्रति सद्भाव उभर कर आता हुआ हमे प्रतीत होता है !

धार्मिक सद्भाव :-२:-

" बशीर खाँ, मालिक माडर्न केनिंग आर्ट ने ठंडी साँस लेकर सड़क की ओर देखा- एक से बढ़कर एक तगड़ा, अच्छी नस्ल, सही उम्र का बकरा चंदू कसाई हाँकता ले जा रहा था। इन दिनों साले की चांदी ही चांदी है। महीने - दो - महीने पहले ही गांव-गांव घूमकर स्टॉक जुटाना शुरू कर देता है। कम पैसों में अच्छे जानवर खरीदकर, उनकी डटकर खिलाई पिलाई करता है, और मौके पर मुँह माँगी कीमत पर में बेच देता है। बाजार में सबसे ज्यादा कीमत चँदू कसाई के बकरों की ही लगती है। यह हाल हो गया है सारी कॉम का। अब कुर्बानी भी कुर्बानी नहीं, सिर्फ दिखावा होकर रह गई है। खाते-पीते, ऐश करते लोग मोटरों में बैठ - बैठकर हाट जाते हैं। और उसी शानो-शौकत के साथ बकरे खरीदते हैं, जैसे, सुना है, एक ज़माने में लोग अय्याशी के लिए गुलाम खरीदा करते थे। यह सबक सीखा कौम ने हजरत इब्राहिम की कुर्बानी से ! यह तरीका है खुदा और उसके रसूल की रजा और खुशी का !"४१

इनकी इस कहानी में तो पात्रों के नाम और कुर्बानी के भाव को ही मुस्लिम बता कर व्यक्त कर दिया गया है तथा खुदा का तरीका और उसके रसूल की रजा और खुशी से धार्मिक सद्भाव को व्यक्त किया गया है जो की एक धार्मिक विचारधारा को दर्शाता है !

धार्मिक सद्भाव :-३:-

" - अल्लाह की राह में कुछ वक्त निकालिए। आखिरत का सौदा सबसे बड़ा सौदा है। - एक मौलाना ने बशीर खाँ का हाथ दबाकर समझाते हुए कहा था। - अल्लाह की राह में उठाया एक कदम, अपने लिए उठाया सत्तर हजार कदमों से बढ़कर है। कम - से - कम चालीस दिन.... एक चिल्ले के लिए अपना नाम....!"४२

इन पंक्तियों में मौलाना पात्र के आधार पर धार्मिक सद्भाव को एहतेशाम जी ने दर्शाया है ! मौलाना जी बशीर खां को अल्लाह के लिए कुछ वक्त निकालने के लिए कह रहे हैं !

धार्मिक सद्भाव :-४:-

" अपने इलाज़ के लिए उसने कई तरीके आजमाई ! पहले पहल तो तकिया कान के ऊपर रखकर सोने की कोशिश की और लगा फायदा हो रहा है। आवाजें आती तो रहती, उतना परेशान नहीं करती। फिर लगा वह खुद को धोखा दे रहा है। इस तरह क्या सचमुच वह सो जाता है ? हाथ - पैर ठंडे नहीं होते ? दिल जोर-जोर से नहीं धड़कता ? बीवी को दिखाने वह लेटा रात भर रहे, क्या सो भी जाता है ?
फिर उसने कई बार दूसरी तरकीबें आजमाइं । जैसे जोर - जोर से कुरान की आयतें पढ़ना, गाना

गाने की कोशिश करना, ट्रांजिस्टर की आवाज ऊंची कर देना। और फिर अंत में रेहाना उसे मजबूर करके डॉक्टर के पास भी ले ही गई !"४३

इन पंक्तियों में पात्र अपनी अनजान आवाजों से दूर जाने के लिए या उससे छुटकारा पाने के लिए उसने कई तरकीबें आजमाई और इन पंक्तियों में एहतेशाम जी धार्मिक सद्भाव को इस प्रकार व्यक्त करने का प्रयत्न करते हैं की इनका पात्र कुरान की आयतें पढ़ना आरम्भ कर देता है !

धार्मिक सद्भाव :-५:-

" क्या हो रहा है दुनिया को ? कोई कितना भी कहे, हमेंशा से ऐसा नहीं है। नेक लोग, मजहब में आस्था वाले रहे हैं, बेशक। लेकिन मजहब दुनिया में दूसरे सौदों का सिक्का, इस तरह पिछले कुछ सालों से ज्यादा बना है। मजहब या तकरार, या मंदिर - मस्जिद के झगड़े, यानी पैदा करने वाले के एक नाम के जरिए दूसरे नामों की जिल्लत। कहीं अरब और अजम है तो कहीं इस्लाम, यहूद, ईसाई की रस्साकशी और इनसे फुरसत पाएँ तो मुवह्हिद और बुतपरसतों के बीच घटिया बढ़िया का मुकाबला। मजहब तकिए से तलवार बन गया है ! "४४

एहतेशाम जी ने इन पंक्तियों में एक तोते को हिन्दू धर्म की विचारधारा पर चलता हुआ दिखाया है ! मंज़ूर जी ने इस कहानी में एक तोते को ' जय राम जी की ' तथा ' सीता- राम ' बोलते हुए धार्मिक सद्भावना की पुष्टि की है !

धार्मिक सद्भाव :-६:-

" ऐसा क्यों नहीं करते मियाँ," उन्होंने विनती के स्वर में बहुत धीमे से कहा, इतना पूछा कि सिर्फ मैं सुन भर सकूं, " उससे कहो कि इस्लाम कबूल कर ले।" मुझे अच्छी तरह अंदाजा था कि खान साहब ने अभी बोला गया एक - एक शब्द सुना है, लेकिन मैं बेखबर बने बैठे रहे !"४५

इन पंक्तियों में एहतेशाम जी ने सलीम और उसके परिवार के सदस्यों के बीच संवाद से धार्मिक सद्भावना को प्रकट कर रहे हैं सलीम के परिवार के सदस्य यह कहते हैं की उससे कहो इस्लाम कबूल कर ले इस पर खां साहब सुन कर अनसुना कर देते हैं क्योंकि अगर वो इस्लाम कबूल कर लेगी तो उनको कोई आपत्ती नहीं होगी !

धार्मिक सद्भाव :-७:-

" मेरे लाख कहने पर भी उसने स्कूल में दाखिला नहीं लिया और मजहब खासकर कुरान हदीस तक ही अपनी शिक्षा को सीमित रखा। इसमें मां की मंशा भी शामिल थी। नमाज - रोजा, रात देर तक जाग कर इबादत करना, दुआएँ माँगना उसका मामूल था। अधिया कि उसने जीवन में कभी शेव नहीं बनाया और बिल्कुल इस तरह दाढ़ी रखे जैसे मजहब में बताया गया है।

यकीन कीजिए बरसात में वह महीनों, बिजली बादल के खौफ से, घर के बाहर कदम नहीं निकालता। यह सिलसिला आज से चार साल पहले तक नियमित रूप से चला, आगे भी चलता, अगर बहुत नाटकीय और अविश्वसनीय ढंग से जो हुआ, वह ना होता।" ४६

लेखक ने इन पंक्तियों में शकील के माध्यम से धार्मिक सद्भावना की पुष्टि की है। इन पंक्तियों से पता चलता है की शकील की शिक्षा - दीक्षा शुरुआत से ही मदरसे से करवाई गई है तथा मदरसे की शिक्षा के पूर्ण होने के पश्चात् कुरान की शिक्षा दिलवाई गई जो की मुस्लिम धर्म की एक परम्परा या ये कहें की एक नियम है जो हर मुस्लिम को उसे पूरा करना होता है तो यह ग़लत नहीं होगा और शकील अपने बड़ों की बात को नहीं मानता और स्कूल में दाखिला नहीं लेता क्योंकि उसे कुरान हदीस में ही ज्यादा रुचि है वह अपनी शिक्षा दीक्षा इतनी ही रखना चाहता है । यह साफ धार्मिक सद्भाव हमें देखने को मिल जाता है।

धार्मिक सद्भाव :-८:-

" शादी, बहुत सादगी से, हमारे ही घर में हुई और सचमुच रिश्तेदारों ने बिना यह सोचे कि वह हस्ती, आंसू पोछती, ' तमाशा है सब' कहतीं, दूसरी सांस में अल्लाह और अपने रिश्तेदारों का शुक्रिया अदा करने लगती - ए अल्लाह, मैं तेरी हमेंशा - हमेंशा की शुक्रगुजार हूँ, मैं बाकी सारी उम्र भी अपने बुजुर्गों की खिदमत में बिता दूँ तो क्या मेरी एहसानमंदी का इजहार हो पाएगा ! ऐ अल्लाह शुक्र- शुक्र - शुक्र तेरा !"४७

उपर्युक्त पंक्तियों में एहतेशाम जी ने धार्मिक सद्भावना को इस प्रकार व्यक्त किया है की सकीना आपा अल्लाह की शुक्रगुजार होकर अल्लाह का तहे दिल से शुक्रिया अदा करती हुई प्रतीत होती है !

धार्मिक सद्भाव :-९:-

" उनकी नज़रों में बिना सहरी के रोजा अधूरा होता है। रोजा कर खुदा का हुक्म पर मुसलमानों के लिए फर्ज है तो सहरी सुन्नत यानी हजूर मोहम्मद का बताया हुआ तरीका है। फिर आखिरकार अपनी बात का उस पर असर ना होते देख, वे चुप हो गई थीं। उनके लिए शायद यह भी बहुत था कि इस पंद्रहवीं सदी में जब तमाम बातों का बिगड़ना एक आम बात हो गई है,. उनकी औलाद बिना सहरी सही, रोज़ा तो रखती हैं !"४८

यहाँ पर एहतेशाम जी ने धार्मिक सद्भावना का भरपूर वर्णन प्रस्तुत किया है तथा इन पंक्तियों में इन्होंने मुस्लिम तौर की परम्परा तथा पूरे नियमों एवं रस्मों-रिवाजों सहित ईद अदा करना दर्शाया है !

धार्मिक सद्भाव :-१०:-

" " भाई साहब ने हिसाब लगवाया था उन्होंने " साजिदा ने दबी आवाज में आगे जोड़ा, " साढ़े सात सौ बनते हैं । अम्माँजी कह रही थी कुछ और तंगी से गुजर कर लेंगे लेकिन यह फर्ज अदा हो जाए तो उन्हें बहुत सुकून मिलेगा। गरीबों और कम हैसियत लोगों का हक और खुदा का हुक़्म तो हमें पूरा करना ही चाहिए। और जकात की तो यह फजीलत बयान की गई है कि जिस चीज पर अदा कर दी जाए, अल्लाह मियाँ उस पर आग, पानी, चोरी, डाका - सारे खतरे हराम फरमा देते हैं। इससे ज्यादा किस चीज की तमन्ना की जा सकती है भला.... ? " जैसे ही साजिदा की नज़रें उससे मिली वह एकदम गड़बड़ा गई, " अम्माँजी ही कह रही थी।" अपनी आवाज़ एकदम से धीमी करते हुए उसने बात वहीं छोड़ दी !"४९

एहतेशाम जी ने इन पंक्तियों में अम्मा जी के द्वारा धार्मिक सद्भावना को व्यक्त करने का प्रयास किया है यहाँ अम्मा जी कहती हैं की खुदा का हुक्म हमें पूरा करना चाहिए और जकात करने से आग, पानी, चोरी, डाका सारे खतरे टल जाते हैं ! इससे यह प्रतीत होता है की अम्मा का विश्वास अल्लाह पर कितना प्रबल है जिसकी वजह से सभी परेशानियाँ दूर हो जाती हैं, टल जाती हैं !

-: सांप्रदायिक सद्भाव :-

भूमिका :- पूर्व अध्याय में हम बता चुके हैं की सांप्रदायिक सद्भाव वह सद्भाव है जो दो विरोधी धर्मों के बीच उत्पन्न होता है ! इस सद्भावना में एक धर्म का व्यक्ति दूसरे धर्म के विरोध में अपनी विचाधारा रखता है तथा वही विचारधारा सांप्रदायिक सद्भाव में परिवर्तित हो जाती है !

जब तक एक धर्म संप्रदाय के लोग यह मानते रहेंगे की उन्हे ही परमलोक की प्राप्ति हुई है तथा अन्य सभी धर्मों के अनुयायि माया मोह के भंवर में पड़े हुए हैं और अंधकार में भटक रहे हैं तब तक मनुष्यों के बीच समन्वय तथा धार्मिक एकता स्थापित नहीं हो सकती हमेंशा सांप्रदायिक सद्भावना बनी रहेगी और संघर्ष चलते रहेंगे !

साम्प्रदायिक सद्भाव के आधर पर मंज़ूर एहतेशाम जी की कहानियों में वर्णित साम्प्रदायिक सद्भावना पर हम एक महत्वूर्ण दृष्टि केंद्रित कर रहे हैं। अपनी कहनियों में इन्होंने साम्प्रदायिक सद्भावना का बहुत ही मार्मिक प्रस्तुतीकरण किया है। इनके साथ - साथ कई कहानीकार भी हुए हैं जिन्होंने अपनी कहानियों मे साम्प्रदायिक सद्भावना का समावेश किया है। इस सद्भावना की पुष्टि इनकी कहानियों में दृष्टिगोचर होती है।

आधुनिक युग के रचनाकारों में कई रचनाकार हुए हैं जिन्होंने सांप्रदायिक सद्भावना को अपनी कहानियों में स्थान दिया है तथा इस युग के प्रसिद्ध लेखक मंज़ूर एहतेशाम जी भी हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं में सांप्रदायिक सद्भावना को अपनी कहानियों में समाहित किया है जिससे पाठक के मन में सांप्रदायिक सद्भावना जागृत हो उठती है ! हम इनकी कहानियों के द्वारा इसकी पुष्टि कर रहे हैं।

-: मंज़ूर एहतेशाम की कहानियों में सांप्रदायिक सद्भावना :-

मंज़ूर एहतेशाम जी अपनी कहानियों में सांप्रदायिक सद्भावना को लेकर भी चले है इन्होंने अपनी कहानियों में भारत में विभाजन के दौरान जो परिस्थितियाँ थी उनको उजागर करने का प्रयास किया है तथा इस दौरान जो सांप्रदायिक दंगे चल रहे थे उनका भी बड़ा ही हृदय विदारक प्रस्तुतीकरण किया है ! इनकी रचनाओं में साम्प्रदायिक सद्भाव देखने को भी मिलता है इनकी कहानियों के उदाहरणों के द्वारा इसकी पुष्टि इस प्रकार से सकती है !

साम्प्रदायिक सद्भाव:-१:-

" तुम्हारे रिश्तेदारों को भी..... हमने धीमे उदास स्वर में पूछा, क्या करें, उस जमाने में छोटी उम्र में भी विभाजन, फसाद, मार - काट की बात इस तरह जेहन में भर गई थी कि बाकी तमाम कुछ उसी के संग और उसी की रोशनी में सूझता था, " ...वहाँ तुम्हारे गांव में लोगों ने मार डाला ?"५०

उपर्युक्त पंक्तियों में स्पष्ट रूप से साम्प्रदायिक सद्भाव परिलक्षित होता है जिसमें विभाजन के दौरान जात- पात धर्म के आधार पर लोगों को मारा - काटा जा रहा था और दंगे - फसाद हो रहे थे अथवा धर्म के आधार पर लोगों में इतना रोष फैल गया था की इंसानियत उसमें दब कर रह गई !

साम्प्रदायिक सद्भाव:-२:-

" मंदिर के सेहन में भी झाड़ू लगता था और हाफिज जी के घर के बर्तन भी धो देता था। हिंदू मुझे हिंदू ही मानते होंगे जो ना किसी ने आँख उठाकर देखा, ना कभी भूले से मारने को हाथ उठाया। बाकी दंगे -फसाद, लूट - मार चल रहे थे, सब मेरी आँखों के सामने होता रहता था। बहुत बुरा लग रहा था मगर किसी रोक सकते थे। जब बहुत हो गया और देखते रहने का सब्र नहीं रहा तो मै बिना किसी से कुछ कहे, वहाँ से भाग निकला और एक चलती ट्रेन में बैठ गया। वह भोपाल रुकी तो दंगो में लुटे मुसलमानों को शरण देने के लिए प्लेटफॉर्म पर बहुत से मुसलमान जमा थे। उन्हीं लोगों के साथ एक जगह में भी ठहर गया, जहाँखाने-पीने और रहने का इंतजाम था। कुछ दिन तक वहाँ रहे, खाया - पिया फिर यह शहर अच्छा लगा तो यहीं रुक गए।"५१

इन पंक्तियों में एहतेशाम जी ने चंदा पात्र के द्वारा विभाजन के दौरान उस पर बीती बातों को व्यक्त किया गया है जो की विभाजन के दौरान फैली हुई समस्याएं थीं उन समस्याओं में चंदा ने जो साम्प्रदायिकता के भाव को महसूस किया था उस भाव को एहतेशाम जी इन पंक्तियों में व्यक्त करने का प्रयास किया हैं !

साम्प्रदायिक सद्भाव:-३:-

" और तो आप जाने, साजिदा के लहजे में थोड़ी सख्ती थी मेरे ज़ेवर हैं, सोना है उन पर..." " और," उसने पैर जमीन पर पटककर बैठते हुए ऊंची आवाज में कहा, " अभी कुछ दिन पहले जब मुझे धंधे में तुम लोगों के पेट पालने के लिए कुछ पैसों की जरूरत थी और मैं यह जिगर

कुछ दिन के लिए गिरवी रखना चाहता था, तब तुम्हारी सारी मुसलमानीयत कहाँ गई थी ? तब सारे अल्लाह - रसूलों को क्या हुआ था !"५२

उपर्युक्त पंक्तियों में एहतेशाम जी ने सांप्रदायिक सद्भावना को इस प्रकार प्रस्तुत किया है की जब साजिदा अपने शौहर से अम्मा जी के कहे अनुसार जकात करने को बोलती है तो उनके शौहर उस पर कहते हैं कि परिवार का पेट पालने के लिए जब पैसों की जरूरत थी तब क्यों नहीं दिए ! तब सारे अल्लाह - रसूलों के हुक्मों को क्या हुआ था ! इस प्रकार से धार्मिक रीति-रिवाज का यहाँ विरोध सांप्रदायिक भावना को दर्शाता है !

-:सांस्कृतिक सद्भावना :-

भूमिका:- पूर्व वर्णित अध्याय में हम संस्कृति के संदर्भ में चर्चा कर चुके हैं इस आधार पर जब मनुष्य एक स्थान को छोड़ कर दूसरे स्थान जाता है तो वहाँ भी उसे भिन्न प्रकार की संस्कृति मिलती है तो उसे अन्य राज्य या देश जिसमें वह गया है वहाँ की संस्कृति के साथ उसे समझौता करना पड़ता है तथा वहाँ की भाषाई संस्कृति तथा खान - पान की संस्कृति को उसे अपनाना पड़ता है जिससे वहाँ पर मौजूद लोगों के साथ उसका संचार हो सके।

सांस्कृतिक सद्भाव के आधर पर मंज़ूर एहतेशाम जी की कहानियों में वर्णित सांस्कृतिक सद्भावना पर हम एक महत्वूर्ण दृष्टि केंद्रित कर रहे हैं। अपनी कहनियों में इन्होंने सांस्कृतिक सद्भावना का बहुत ही मार्मिक प्रस्तुतीकरण किया है। इनके साथ-साथ कई कहानीकार भी हुए हैं जिन्होंने अपनी कहानियों मे सांस्कृतिक सद्भावना का समावेश किया है ! जिनकी पुष्टि हम यहाँ विस्तृत रूप में परस्तुत कर रहे हैं।

आधुनिक युग के रचनाकारों में कई रचनाकार हुए हैं जिन्होंने सांस्कृतिक सद्भावना को अपनी कहानियों में स्थान दिया है तथा इस युग के प्रसिद्ध लेखक मंज़ूर एहतेशाम जी भी हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं में सांस्कृतिक सद्भावना को अपनी कहानियों में समाहित किया है जिससे पाठक के मन में सांस्कृतिक सद्भावना जागृत हो उठती है ! हम इनकी कहानियों के द्वारा इसकी पुष्टि कर रहे हैं।

-: मंज़ूर एहतेशाम की कहानियों में सांस्कृतिक सद्भावना :-

वर्तमान युग के लेखक मंज़ूर एहतेशाम जी ने अपनी रचनाओं में कई सद्भावों का प्रयोग किया है जिससे इनकी रचनाएं जीवंत हो उठती हैं ! इन्होंने अपनी कृतियों में भारत की संस्कृति को भी अछूता नहीं रखा है ये अपनी रचनाओं में सांस्कृतिक सद्भावना को लिए हुए अपनी कहानियों का निर्माण करते आ रहे हैं इनकी कुछ कहानियों में से इस सद्भावना की पुष्टि की जा सकती है !

सांस्कृतिक सद्भावना:-१:-

" एकाएक आज बाज़ार में उन्हें खरे से हुई भेंट याद आई मामला सुलझ गया। खरे का फर्नीचर का ही काम है और आजकर उसका केस भी स. हरिश्चंद्र के ही पास है। उन्होंने सुकून की सांस ली।"५३

यहाँ पर एहतेशाम जी ने सांस्कृतिक सद्भावना को भारतीय संस्कृति के पहनावे (कुर्ता-पजामा) से दर्शाने का प्रयास किया है जिससे हमको भारतीय संस्कृति के पहनावे का बोध हो जाता है !

सांस्कृतिक सद्भावना:-२:-

" माथुर वैद्य और मैं - हम तीनों की हालत खासी गंभीर थी, कर्नल ने हम तीनों को अपने कमरे में बुलाया। उसका कमरा क्या, अपने में एक अजूबा था - दीवारें प्ले - ब्याय के मुस्कुराते पिन - अप्स पहनी, पाँच - छह तरह के लाइट - इफेक्ट्स, रिकॉर्ड - प्लेयर और ढेर सारे अंग्रेज़ी रिकॉर्ड्स और खुशबुओं से महकता । बहुत कम लोग कर्नल के कमरे में, जिसके दरवाजे पर

उसने अपने खास रनिंग - हैंड में काले पैंट से ' कर्नल ' लिख रखा था, घुसने की हिम्मत कर पाते थे। हम तीनो को कर्नल ने एक जबरदस्त लताड़ दी, हमारी मर्दानगी को ललकार। इस धमकी के साथ कि अब अगर उसने हममें से किसी को भी एबनॉर्मली बिहेव करते देखा तो हाथ पैर तोड़ देगा। इसके बाद अपने रिकॉर्ड - प्लेयर पर अपने फॉक्स - ट्राट का कोई नंब, जो उसे बहुत पसंद था, बजाकर सुनाया और एक्शन्स के साथ हमें समझाता रहा की फॉक्स - ट्राट क्या होता है, कैसे करते हैं। हम तीनों ने कर्नल से गुड - बिहेवियर की प्रोमिस और लड़कियों को सबक पढ़ाने का वादा किया और उसके साथ हॉस्टल से शहर गए, मटरगश्ती की और सेकंड शो में फिल्म देखी। कर्नल बेहद खुश था !"५४

इन पंक्तियों में एहतेशाम जी ने पाश्चात्य संस्कृति के संगीत की संस्कृति के सद्भाव का वर्णन किया है जिससे यह प्रतीत होता है की इनकी इस कहानी के पात्रों पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव है !

सांस्कृतिक सद्भावना:-३:-

" एक अच्छी मुलाकात के लिए चीयर्स। जी, व्हिसकी के ब्रांड के बारे में मैं खासा कंजरवेटिव हूँ। पिछले तीस साल से यही पीता आ रहा हूँ। इस दौरान, मेरे साथ इस ब्रांड ने भी बड़े - बड़े इन्कलाब देखे हैं। पहले इसे स्टेटस समझकर पिया जाता था, फिर धीरे - धीरे घटिया गिनी जाने लगी, और अब फिर से फैशन में आ गई । खुद मुझे यह आज भी वैसी ही लगती है। खुद मुझे यह आज भी वैसी ही लगती है जैसे पहली बार पीने पर लगी थी या उन दिनों जब इसे घटिया गिना जाने लगा था। आपको पसंद है ? माई प्लेजर।जब इसे घटिया गिना जाने लगा था।"५५

एहतेशाम जी ने इन पंक्तियों में सांस्कृतिक सद्भावना को इस रूप में स्पष्ट किया है की यहाँ विस्की के एक विशेष ब्रांड के प्रयोग करने को एक कल्चर बताया गया है जिससे यहाँ पाश्चात्य की सांस्कृति उभर कर हमारे सामने प्रतीत होता है !

सांस्कृतिक सद्भावना :-४:-

" उस पहली दुनिया के लिए एक लेबोटरी या एक गिनी - पिग की हैसियत है इस तीसरी दुनिया और यहाँ के वासियों की। यहाँ लोग अपने आकाओं को अंधी तकलीद में हर चीज उन -सी करने में लगे हैं। लैंडस्केप से बेमेल और अपने लैंडमार्क्स की कीमत पर उस तरह की गगनचुंबी इमारतों की तामीर हो रही है जो हमें पहली दुनिया की तस्वीरों में नज़र आती है। सड़कें और माहौल से कतअ - नज़र ईंधन से चलने वाली गाड़ियों की तादाद यूं ही बड़ी है और बढ़ रही है जैसे कुछ दिन में हर एक इंसान के लिए एक गाड़ी हो जाएगी। शहर जमीन पर चलने के साथ ही साथ आसमान पर रुख में फैलने लगे हैं, दूसरे हवा में घुलता इजारहा किस्म के इंजनों का धुआँ, नामोनिशान खोते जंगल, कटते पहाड़, गुम होती नदियाँ। और रोज - ब - रोज मंदिरों - मस्जिदों में बढ़ती लोगों की तादाद।"५६

इन पंक्तियों में लेखक ने भोग- विलास के संसाधनों के बदलाव में परिवर्तन के आधार पर सांस्कृतिक सद्भावना को दर्शाया है तथा नौजवानों का डांस एवं पहनावे के द्वारा सांस्कृतिक सद्भावना को दर्शाया गया है !

सांस्कृतिक सद्भावना :-५:-

" हलीमन में कुछ खूबियां तो ऐसी थीं जो इस ज़माने में अच्छे खानदानी लोगों में मुश्किल से मिलती है । उसके घर आने वाले हर मेहमान का खुश होकर स्वागत होता था और जितना भी संभव हो सके, खातिर - तवाजो भी । त्योहारों को वह पूरी मोहब्बत के साथ त्योहारों की परंपरा से मनाती थी, वह चाहे मोहर्रम पर खिचड़ा पकाना हो, बकरा - ईद पर पाए और मीठी ईद और शब - बरात पर सेवईया मीठा हलवा। इसमें पास पड़ोस और बिरादरी वालों की दावते भी शामिल रहती थी और दूरदराज के पहचान वालों को शिकायत का मौका नहीं मिलता था । अपने सीमित साधनों में वह यह सब कर पाती थी। यह बड़े आश्चर्य की बात थी !"५७

प्रस्तुत पंक्तियों में एहतेशाम जी ने हलीमन के द्वारा तीज - त्योहारों के सांस्कृतिक सद्भाव को प्रदर्शित किया है जिसमें हलीमन हर त्योहार को बड़ी ही धूम - धाम और उन त्योहारों को परम्परा के साथ बड़े ही उत्साह से मानती है एवं समाज के साथ मिल जुलकर हर त्योहार को मानती है !

सांस्कृतिक सद्भावना :-६:-

" पेग खत्म हुआ और सबने अपने अपने गिलास उपरी सीढ़ी पर बैठे शराब बांटने वाले को थमादिए थे । बीच में खाली गोलाकार मैदान और आसपास सीढ़ियों की शक्ल में दर्शकों के बैठने की सीटें: स्टेडियम। लगता एक वैसी ही जगह जैसी कभी-कभी अंग्रेजी फिल्मों में

देखने को मिलती है, जिसमें एक हूलिए से मसखरा लगने वाला आदमी, अपने हाथों से लाल रंग का कपड़ा हिलाता भैंसों को लड़ने पर उकसाता है। स्पेनिश बुलफाइट। फ़िल्मों मैं जहाँतमाशबीन बैठते हैं उसी जब हम बैठे थे, एक कोने में सीढ़ियों पर। और ना तो मैदान में कोई अरना भैंसा था, ना उसे उकसाने को लाल कपड़ा हिलाता मसखरा, इसलिए मैदान और सीढ़ियों के बीच कोई पक्की बाढ़ भी नहीं थी, भैंसे को तमाशबीनों पर हमला करने से रोकने के लिए !"५८

एहतेशाम जी ने पाश्चात्य संस्कृति को अंग्रेजी फिल्मों तथा वहाँ के खेल एवम् स्पेन के खेल ' स्पेनिश बुल्फाई ' का लुत्फ उठाने की संस्कृति को व्यक्त किया है जिसमें अंतरराष्ट्रीय संस्कृति का सद्भाव देखने को मिलता है !

सांस्कृतिक सद्भावना :-७:-

" तुम्हे देखकर मैने मजाक किया - एक पुराना फिल्मी गीत याद आता है। - कौन - सा ? उसने उत्सुकता से पूछा। - कल रात जिंदगी से मुलाकात हो गई जब थरथर आ रहे थे - अर्थात् उसे देख कर डर लग रहा था, मगर बात हो गई -.अर्थात्् किसी तरह पहचान में आ ही गई !"५९

इन पंक्तियों में एहतेशाम जी ने गीतों के द्वारा सांस्कृतिक सद्भावना को व्यक्त करने का प्रयास किया है जिससे हमको पुराने गीतों की संस्कृति की झलक हमारे सामने आ जाती है !

सांस्कृतिक सद्भावना :-८:-

" असल में शहर में उन्हें लोगों ने बताया था कि सकीना आपा के बड़े भाई, असगर, किसी कव्वाली गाने वाले की शागिर्दी में पेटी बजाने और खुद भी कव्वाली गाने लगे थे। अव्वल ही अपनी मर्जी से किसी से शादी करके उन्होंने बुजुर्गों को नाराज कर रखा था और अब कव्वाली एक ऐसा जुर्म था कि अब्बा सकीना आपा के जरिए उन तक खानदान से संबंधों के खात्मे की खबर पहुंचाना चाहते थे । जिस घर में कभी चूड़ी का बाजा तक ना बजा हो, उसका कोई सदस्य, कितना ही दूध राज का क्यों ना हो, खुद गाए - बजाए, वह कव्वाली ही सही यह माफ नहीं किया जा सकता था !"६०

एहतेशाम जी ने 'तमाशा' कहानी की इन पंक्तियों में कव्वाली गाने और सुनने की रुचि को व्यक्त किया है इन्होंने इसके माध्यम से कव्वाली गाने और सुनने वालों की मोहकता और मनोरमता को दर्शाया है !

सांस्कृतिक सद्भावना:-९:-

" रमज़ान की एक सुनसान दोपहर जब वह बावर्ची खाने में छिपकर खाना खा रहा था, दबी जुबान में साजिद आने आने वाले खर्चों का जिक्र किया था और वह झुंझला उठा था। वैसे अपने लहजे में बढ़ती चिड़चिड़ा हाट का उसे खुद भी अच्छी तरह अंदाजा था। किया किया जाए ! रोज-रोज के तकरीर त्योहार और घर में लगातार बीमारियों का सिलसिला - कोई कहाँ से लाए ? रोज़मर्रा का खर्चा चले, बच्चों की पढ़ाई लिखाई और दूसरी जरूरतें पूरी हो या यह तरकीब त्योहार की अय्याशी की जाए ! कल शबे बरात थी, आज मीठी ईद है, कल बकरा ईद सिर पर सवार होगी!"६१

उपर्युक्त पंक्तियों में एहतेशाम जी ने साजिद, नायक, एवं अम्मा जी द्वारा त्योहारों की संस्कृति को व्यक्त किया है जिसमें नायक पैसों की तंगी की वजह से परेशान होता है और फिर भी वह परिवार के साथ बिना मन के ईद का त्योहार को अपने परिवार की खुशी के लिए इस त्योहार में शरीख होता है !

सांस्कृतिक सद्भावना :-१०:-

" गलियों और सड़कों के वे होटल जो रमज़ान में दिन भर बन्द रहते हैं, इस वक्त रोशनियों में नहाए, लोगों से खचाखच भरे थे। हंसते बोलते, आपस में मजाक करते, सिर पर टोपी या लगाए, कुर्ते पजामे पहने लोग इन होटलों और चाय पानी की दुकानों पर जमा थे। मस्जिदों के आसपास गुमटियों पर खासकर भीड़ जमा थी। रमजान की आखिरी रातों में मस्जिदों में रात - भर शबीने पढ़े जाते हैं। अंधेरे आसमान में जहां-तहां छोटे-छोटे बल्बों से सजे मस्जिदों की मीनारें सिर उठाए खड़ी थी। सारी भीड़ में ना तो कोई उसका जाना हुआ चेहरा नज़र आया, ना किसी ने उसको पहचाना।"६२

आलोच्य पंक्तियों में लेखक ने समाज में पूरे जोरों से त्योहारों की चहल-पहल तथा लोगों के साथ - साथ उनके घरों तथा दुकानों पर भी नज़र जाती है तो ऐसा प्रतीत होता है कि सभी घर और दुकानें भी लोगों के साथ इस त्योहार में शामिल हैं और त्योहार मनाने के लिए लालायित हैं !

सांस्कृतिक सद्भावना:- ११:-

" आने वाले क्रिसमस और नए साल का चहल-पहल भरा माहौल, घरों के आगे लड़की रंग बिरंगी कदीलें, संगीत की सरगोशीयों में घुले मिले स्वर, गानों की आवाजें, नहीं और सलीके के कपड़े पहने राहगीर, आपस में एक - दूसरे से मुबारक सलामत करते, और किसी कार्निवाल की तरह सजा सांवरा जिंदगी से भरपूर वक्त: ।"६३

एहतेशाम जी ने अपनी कहानी 'ठंडे बस्ते' की इन पंक्तियों में त्योहार एवम् पहनावे के आधार पर सांस्कृतिक सद्भावना को दर्शाने का प्रयत्न किया है जिस प्रकार क्रिसमस पर चहल-पहल होती है उस चहल-पहल को इन्होंने एक रूपरेखा प्रदान की है तथा तारा के द्वारा भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति के भावों को कविता के माध्यम से व्यक्त किया है यहाँ कवियों के नाम मात्र से ही ये स्पष्ट हो रहा है की वह पाश्चात्य संस्कृति के कवि है या भारतीय संस्कृति के !

-: भाषाई सद्भावना :-

भूमिका :- पूर्व वर्णित अध्याय में हम संस्कृति के संदर्भ में चर्चा कर चुके हैं इस आधार पर रचनाकार जब रचना करता है तब वह भाषाई सद्भावना को ध्यान में रखकर ही अपनी भावनाओं को एक आकार देता है जिससे वह अपने पाठकों तक अपनी विचारधारा को पहुंचा सके और वह लेखक भाषा की शब्दावली भी ऐसी रखता है जोकि पाठक आसानी से पढ़ तथा समझ सके।

भाषाई सद्भाव के आधर पर मंज़ूर एहतेशाम जी की कहानियों में वर्णित भाषाई सद्भावना पर हम एक महत्वूर्ण दृष्टि केंद्रित कर रहे हैं। अपनी कहनियों में इन्होंने भाषाई सद्भावना का बहुत ही मार्मिक प्रस्तुतीकरण किया है। इनके साथ - साथ कई कहानीकार भी हुए हैं जिन्होंने अपनी कहानियों मे भाषाई सद्भावना का समावेश किया है। हम इनकी कहानियों के द्वारा इसकी पुष्टि कर रहे हैं।

आधुनिक युग के रचनाकारों में कई रचनाकार हुए हैं जिन्होंने भाषाई सद्भावना को अपनी कहानियों में स्थान दिया है तथा इस युग के प्रसिद्ध लेखक मंज़ूर एहतेशाम जी भी हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं में भाषाई सद्भावना को अपनी कहानियों में समाहित किया है जिससे पाठक के मन में भाषाई सद्भावना जागृत हो उठती है। इनकी कहानियों में भाषाई सद्भावना के पुष्टि तथ्य निम्नलिखित हैं:-

-: मंज़ूर एहतेशाम की कहानियों में भाषाई सद्भावना :-

एहतेशाम जी ने भाषाई सद्भावना को अपनी रचनाओं में बहुत ही सुंदरतम रूप प्रदान किया है जिससे इनकी भावनाएं इनकी हर रचना में परिलक्षित होती है ! इनकी कहानियों में भाषाई सद्भावना हमको पढ़ते ही इनके भाव समझ में आने लगते है इस सद्भावना की पुष्टि के लिए इनकी कहानियों के उदहारण इस प्रकार हैं !

भाषाई सद्भावना :-१:-

" मैने शराब छोड़ दी थी, सिगरेट पीना भी बंद कर दिया था। - बाप बनने का अहसास..... हॉस्पिटल ..... दवाएं......... दूध । मुझे बीवी और बच्चे के लिए कुछ भी करना बहुत अच्छा लगता था। !"६४

इन पंक्तियों के द्वारा भाषाई सद्भावना को बहुत ही सुंदरतम रुप प्रदान किया है ! इन पंक्तियों में एहतेशाम जी ने अहसास..... हॉस्पिटल...... दवाएं........ एक विस्मरणिय भाषा का प्रयोग किया है !

भाषाई सद्भावना:-२:-

" एंड माइंड यु ! (यह याद रखो!) उसने कहा था - यह फिक्शन नहीं इट इज एन ऑटोबायोग्राफी । यह काल्पनिक नहीं आत्मकथा है !"६५

उपर्युक्त पंक्तियों में एहतेशाम जी ने अंग्रेजी भाषा के भाषाई सद्भाव को व्यक्त करने का यहाँ प्रयास किया है ! अंग्रेजी भाषा की शब्दावली का संवादों में भरपूर प्रयोग किया गया है तथा इन्होंने अपनी इस कहानी 'पुल पुख्ता' में अपनी भाषा के आधार पर एक सजीवता उत्पन्न कर दी है !

भाषाई सद्भावना :-३:-

" बशीर खां, मालिक मॉर्डन केनिंग आर्ट को अपने आप के अलावा अगर किसी दूसरी चीज में मज़ा आता है तो वह है मछली का शिकार । जुमे के दिन उनकी दुकान की छुट्टी होती है । इसलिए जुमे रात की शाम ही वह आस-पास कहीं मछली के शिकार पर निकल जाते हैं। पानी के किनारे बैठ कर उन्हें जाने कैसा सुकून मिलता है, जैसे उनकी जिंदगी में फैला खालीपन भर गया हो। अलग-थलग किसी नदी या तालाब के किनारे खामोश बैठ कर उन्हें लगता है खुद से बातें कर रहे हो। पानी पर डोलता तिरना, उठती लहरें हैं या फूटते बुलबुले - लगता है यह सब एक जबान है, जिसे वह शब्दों से बेहतर समझते हैं। हजारों सवाल उनके दिमाग में पानी के किनारे बैठकर ही आते, और आते ही जैसे खुद-ब-खुद उनका जवाब भी मिल जाता गहरे अंधेरे और खामोशी में, जबकि पानी भी अंधेरे का घोल लगने लगता है, उन्हें टिमटिमाते तारों का डोलना अक्सर अजीब लगता और कान दूर जंगलों में हो रही जरा -सी भी आहट सुन पा सकने लगते। और इसी घने अंधेरे में पानी की लहरों पर डोलता तिरना, एक सफेद बेहकीकत घास का टुकड़ा, जिसकी सुई बराबर हरकत भी बशीर खाँ की आँखों से नहीं बच पाती। बशीर खाँ को किसी चीज पर गर्व था तो यह कि उनके तिरने से लगने वाली मछली कभी गलत घाव से छूटकर नहीं गई। बाकी मछली के शिकारी बशीर खाँ को खास इज्जत देते हैं क्योंकि शायद ही कभी बशीर खाँ शिकार से खाली लौटे हों !"६६

यहाँ पर एहतेशाम जी ने प्राकृतिक स्रोतों को अपनी भाषा की शक्ति से मानवीकरण रूप प्रदान किया है तथा इन पंक्तियों में नदी, पानी, बुलबुले इनकी भाषा के जादू से एक ज़बान बन गए हैं और ऐसा प्रतीत होता है की उनमें जीवन आ गया हो !

भाषाई सद्भावना:-४:-

" अच्छा डैडी ! गुड़िया ने विम का डिब्बा रखते हुए स. हरिश्चंद्र को अपनी अदा से छेड़ा था - आज फिर अंकिल लोग तमाशा करेंगे ! पहले मम्मी को तो घर जाने दिया होता...... वह भी देखकर एंजॉय करती।"६७

इन पंक्तियों में अंग्रेजी भाषा की शब्दावली का प्रयोग किया गया है और पात्रों के व्यवहारगत रूप में पाश्चात्य संस्कृती की शब्दावली का प्रयोग किया गया है !

भाषाई सद्भावना :-५:-

" - अबे साले, उसने डांटते हुए कहा था - एक लड़की - देट्स ऑल यू आर वर्थ ? यही तो है साले तुम लोगों के साथ - दुनिया नहीं देखी ! पहली और दूसरी को बहन बना लेते हो और तीसरी तक पहुंचते-पहुंचते स्टीम फुल ब्लास्ट ! लव ! प्रेम ! इश्क ! यू बस्टर्ड्स !!"६८

इस कहानी में एहतेशाम जी ने पाश्चात्य भाषा की शब्दावली लिखने तथा पात्रों के व्यवहार करने में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है जिससे यहाँ अंग्रेजी भाषाई सद्भाव प्रतीत होता नज़र आता है !

भाषाई सद्भावना :-६:-

" बाहर ' अ ' है - सफेद कपड़े, सफेद अचकन, इत्र और लोबान की खुशबुएँ ! साथी 'आ ' है, जो एक हाथ कान पर रखकर कसीदा पढ़ते हुए नाच रहा है। ' अ ' कशकोल मैं अंगारों पर लोबान छिड़कता, नाचते ' आ ' के इर्द-गिर्द चक्कर लगा रहा है।"६९

मंज़ूर एहतेशाम जी की इस कहानी 'जश्न' में वार्णीक शब्दावली का प्रयोग किया गया है जो की एक भाषाई सद्भाव को स्पष्ट करती है !

भाषाई सद्भावना :-७:-

" कोई चीज उसे उसकी ओर खिंचे लिए जा रही थी। उसे लग रहा था - नहीं, अभी सब कुछ नहीं बदला। वह आज भी बरामदे के जँगले पर झुकी उसका इंतजार कर रही होगी। उसे प्यार करेगी। वह चांदनी में इसी तालाब के किनारे घूमेंगे, बातें करेंगे। वह समय जो उसने उसके साथ बिताया है - और वह क्षण....... शहद में अगर थोड़ा और समझदार होता तो इतने पास आने के बाद तो कोई भी........ और फिर संबंध तो संबंध होते हैं.... उनकी हदें तो नहीं बनाई जा सकती..... वैशाली बेवकूफी खुद उसकी अपनी थी..... अगर उसे थोड़ा सा तजुर्बा होता तो .....

अब.........!"७०

यहाँ एहतेशाम जी ने अपनी वैचारिक शक्ति तथा कल्पनाशीलता को शब्दों के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास किया है जिससे इनकी प्रेम की काल्पनिकता तथा भाषाई सद्भावना दिखाई पड़ती है !

भाषाई सद्भावना :-८:-

" सान्याल मीठे, बंगला युक्त उच्चारण में अंग्रेजी बोलता था । वह हिन्दी जानता था, लेकिन इस प्रकार के गंभीर विचारों के आदान-प्रदान के लिए हम अंग्रेजी का ही इस्तेमाल करते थे।

सानियाल नास्तिक है, हमें पता था फिर भी लगभग रोज़ ही किसी ना किसी से, धर्म और ईश्वर को लेकर, उसकी चर्चा होती रहती हम जूनियर्स को ज्यादा मजा तब आता जब यह चर्चा सान्याल के किसी सहपाठी या सीनियर से होती और देखते ही देखते ही उन्हें लाजवाब कर देती। ऐसा ही इस समय हुआ था जब सान्याल ने तर्कों से अपने सहपाठी, मनोहर व्यास को बिल्कुल चुप कर दिया था। व्यास इस समय खामोश होकर चश्मे के शीशे रुमाल से रगड़ने में खुद को भूलने की कोशिश कर रहा था !"७१

एहतेशाम जी ने अपनी कहानी ' चंदा ' में विभिन्न भाषाओं की शब्दावली का प्रयोग किया है इन्होंने बंगला, अंग्रेजी एवं हिन्दी तीनों भाषाओं के मिश्रित भाव को अपनी इस रचना में प्रयोग किया है !

भाषाई सद्भावना :-९:-

" मुझे अच्छी तरह याद है की उस समय मेरा बुनियादी मुद्दा चंदा की बात करना है लेकिन किसी व्यक्ति की स्मृति किन-किन ऊपरी तौर पर असंबद्ध चीजों की याद में गुथी होती है, यह अंदाजा खुद हमें तब तक नहीं होता, जब तक हम समग्रता में उस तक पहुंचने की ईमानदराना कोशिश करके ना देखें। सो, यह पचपन - साठ वर्ष पर फैला वह जमाना है जब मैंने पहली बार चंदा को देखा था और जिसे याद किए बिना अलग से मैं चंदा को भी याद नहीं कर सकता !"७२

इन पंक्तियों में एहतेशाम जी ने अंग्रेजी भाषा के सद्भाव को स्कूलों में शिक्षा के आधार पर अंग्रेजी माध्यम के द्वारा भाषाई सद्भाव को व्यक्त किया गया है !

भाषाई सद्भावना :-१०:-

" भारत टॉकीज अब पुराना हुआ और शब्द ' टॉकीज ' शब्द प्रचलन से बाहर भी, आज अंग्रेजी डिक्शनरी ओं में ढूंढने पर ' टाकी ' यानी बोलती फिल्म तो मिल जाती है लेकिन ' टॉकीज ' जो हमारे ख्याल में सिनेमा हॉल का पर्यायवाची था, भोपाल से लेकर भारत और लक्ष्मी तथा अल्पना, सब ' टॉकीज ' नहीं मिलता ! इधर गुमटियाँ, घूडा, परचून की दुकान और उनसे मिले तीन या चार रिहायशी मकान पहले तो यादाश्तों का हिस्सा बने और फिर उनमें से ज्यादातर याददाश्तें भी दुनिया खाली कर गईं ! कैपिटल और उसके बाद ग्रांड होटल बने और बनने के बाद आज तक पुराने और आउट ऑफ फैशन ' भी हो गए । कुछ बचा रह गया तोता या अब्बा का, दुनिया की भीड़ में ओझर होता, लक्कड़खाना या फिर हर बरसात में अपनी तानाशाही के जौहर दिखाता वह गंदा नाला। "७३

यहाँ पर मंज़ूर एहतेशाम जी ने हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा की शब्दावली के शब्दों का अर्थ एवम् प्रयाय को दर्शा कर भाषाई सद्भाव को पाठकों के समक्ष रखा है !

भाषाई सद्भावना :-११:-

" मैने दिए, " सीधे उसकी आँखों में देखते हुए साजिदा ने बहुत सधे लहजे में कहा, " मेरे कान की जो दूसरी बाली बच गई थी, उसे बेचकर।" कहते कहते ही साजिदा एकदम से डर गई । लपक कर उसके पास जाते हुए उसने विनती करते हुए कहा, " कसम है आपको जो आपने अम्मा जी से कहा। देखिए, खुदा का हुकुम हम पर फर्ज है और वह तो एक ही बाली रह गई थी, मेरे किस काम आती है ? मैने अम्मा जी से यही कहा है कि पैसे अपने.....!"७४

यहाँ पर एहतेशाम जी ने वाक्य को अपूर्ण छोड़ कर एक अलग ही भाषाई सद्भाव व्यक्त करने का प्रयास किया है जिससे हमको यह ज्ञात हो जाए कि अभी इनकी कहानी के पात्रों की बात अभी अपूर्ण है जिससे पाठक के मन में कोतूहलता बनी रहे !

भाषाई सद्भावना:- १२:-

" नीली आँखों वाले ने जब जिसे मेजबान या अजनबी जो चाहे नाम देकर याद रख सकता है, अदब से बताया था कि वह उसका पाठक प्रशंसक, जमाने से उससे मिलने की इच्छा लिए जी रहा है। उसका लिखा हर्फ हर्फ उसने पढ़ा है और कितना सुखद आश्चर्य था कि टेलीविजन पर कुछ रोज़ पहले ही उसे देखने के बाद आज यूँ, उसके रूबरू खड़ा है। वह खुद माउंटेनियरिंग इंस्टिट्यूट में इंस्ट्रक्टर- लोगों को पर्वतारोहण की शिक्षा देता है और करीब ही उसका निवास है। वह खुद केवल पढ़ता ही नहीं, कविता लिखता भी है। क्या कुछ क्षण उसके घर चल कर वह उसकी हार्दिक इच्छा पूरी नहीं करेगा ? बिना कुछ पूछे, वह अजनबी के साथ हो लिया था, उसकी लिखी कविताएं, लेख, संस्मरण, कहानियाँ - अजनबी सबसे इतना परिचित था कि खुद से बात करने की जहमत भी नहीं उठानी पड़ी थी। और लगता है यह उसका भ्रम है की बर्फ की चमकीली चोटियों तक जाता, अंधेरी की परतों का रास्ता काला पुल उसने बाद में चढ़ते - उतरते बुखार के दौरान यहाँ मेजबान के घर, ख्वाब में देखा। वह पुल तो उसी क्षण आकार ग्रहण करने लगा था जब उस देव काया मूर्ति के सामने खड़ा व्यक्ति पर नियंत्रण खो बैठा था, और मेजबान के साथ घाटी उतरता, उसके घर तक आया था। उसके बाद सिर्फ सोच के साए हैं, आपस में गड्ड -मड्ड होते या याद का क्रम, भूलता - भटकता।. कब .....? क्या......? कहाँ......? सोने - जागने की- सी कैफियत के बीच ....!"७५

इन पंक्तियों में एहतेशाम जी ने कई भाषाई सद्भाव प्रस्तुत किए हैं इस कहानी में इन्होंने उर्दू शब्दावली के साथ - साथ अंग्रेजी भाषा के शब्दों का प्रयोग भी किया है एवम् प्रश्नवाचक भाषा का भी प्रयोग यहाँ किया गया है !

-: राष्ट्र के प्रति सद्भावना :-

भूमिका :- पूर्व व्याख्यायित राष्ट्र तथा उसके प्रति सद्भाव के आधार पर मनुष्य के हृदय में अपने देश के प्रति स्वाभाविक रूप से प्रेम होता है और जन्म से ही अपनी मात्रभूमि के प्रति उसके मन में बहुत अधिक श्रद्धा भक्ति होती है तथा आदर की भावना रहती है ! मात्रभूमि के प्रति उसका असीम प्रेम उस समय और भी ऊँचाई पर पहुंच जाता है जब उसके जान से भी प्यारे देश पर धब्बा लगता है, उसके देश का स्वाभिमान आहत होता है अथवा उसके देश को कोई बुरा - भला कहता है या दबाना चाहता है ! ऐसे समय में उसका देश प्रेम प्रखर रूप में सामने आता है।

राष्ट्र के प्रति सद्भाव के आधर पर मंज़ूर एहतेशाम जी की कहानियों में वर्णित राष्ट्र के प्रति सद्भावना पर हम एक महत्वूर्ण दृष्टि केंद्रित कर रहे हैं। अपनी कहनियों में इन्होंने राष्ट्र के प्रति सद्भावना का बहुत ही मार्मिक प्रस्तुतीकरण किया है। इनके साथ - साथ कई कहानीकार भी हुए हैं जिन्होंने अपनी कहानियों मे राष्ट्र के प्रति सद्भावना का समावेश किया है ! इस सद्भावना की पुष्टि इनकी कहानियों में दृष्टिगोचर होती है।

आधुनिक युग के रचनाकारों में कई रचनाकार हुए हैं जिन्होंने राष्ट्र के प्रति सद्भावना को अपनी कहानियों में स्थान दिया है तथा इस युग के प्रसिद्ध लेखक मंज़ूर एहतेशाम जी भी हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं में राष्ट्रिय सद्भावना को अपनी कहानियों में समाहित किया है जिससे पाठक मन में राष्ट्र के प्रति सद्भावना जागृत हो उठती है ! आइए इनकी कहानियों के द्वारा इसकी पुष्टि करते हैं !

-: मंज़ूर एहतेशाम की कहानियों में राष्ट्र के प्रति सद्भावना :-

कथा - साहित्य के कई रचनाकारों ने अपनी - अपनी रचनाओं में राष्ट्र के प्रति सद्भावना को व्यक्त किया है जिसमें राष्ट्रीय सद्भावना अर्थात्् राष्ट्र के प्रति सद्भावना उभर कर पाठकों के सामने प्रस्तुत होती है तथा उन सभी लेखकों एवम् साहित्यकारों में से एक साहित्यकार मंज़ूर एहतेशाम जी भी हैं जिन्होंने अपनी कहानियों में राष्ट्र के प्रति अपने सद्भाव को उल्लिखित किया है ! इनके इस सद्भाव की पुष्टि के उदहारण निम्नलिखित हैं:-

राष्ट्रीय सद्भावना :१:-

" अम्मा की उम्र और दिमागी हालत देखते उनसे कुछ कहना या समझना ज्यादती होगी। और फिर वह भी दो एक आईना ही है, इर्द - गिर्द की दुनिया का अक्स लिए। उसमें पंजाब भी

शामिल है, कश्मीर, आसाम, श्रीलंका, पाकिस्तान, अफ़गानिस्तान और दीगर, बहुत महदूद सही, लेकिन जहान भी। और जहान बिल्कुल औंधे पान दान सा होकर रह गया है।"७६

इन पंक्तियों में एहतेशाम जी ने अपनी इस कहानी 'रिहाई' में राज्य में रहने वाले लोगों का अपने राज्यों के साथ - साथ अपने राष्ट्र के प्रति सद्भाव को प्रस्तुत किया है तथा इस कहानी की पात्र अम्माँ जी का भी अपने राष्ट्र के प्रति लगाव को दर्शाया है !

राष्ट्रीय सद्भावना :-२:-

" लगता है एकदम पागल ही हो गया। उसके घर वाले ' मुसलमान ' एक बहुत ही फंक्शनल सेंस मेरे रहे हैं, नमाज - रोज़ा तक जिंदगी में शायद ही कभी किया हो। लेकिन यह बासित तो पहले इंकलाबी हुआ और उसके फौरन बाद ही मोमिन हो गया ! शायद हिंदुस्तान में भी ' नजमे - मुस्तफा ' टाइप की किसी चीज की तमन्ना करता होगा ! मुझे उससे कोई हमदर्दी नहीं, लेकिन दिमाग यह सोचने पर मजबूर जरूर होता है कि ऐसा क्यों हुआ।"७७

यह पंक्तियाँ मंज़ूर एहतेशाम की उस कहानी की हैं इस कहानी का शीर्षक ही अपने आप में राष्ट्रीय सद्भाव रखता है इनकी इस कहानी का शीर्षक है 'कौम'। इस कहानी में इन्होंने भारत - पाकिस्तान के बीच राष्ट्रीय सद्भावना को व्यक्त करने का प्रयास किया है !

राष्ट्रीय सद्भावना :-३:-

" यहाँ मै संक्षेप में कुछ अपने देश के बारे में बताना चाहूँगा ताकि जाए - वारदात पर मेरी मौजूदगी को समझा जा सके। जी नहीं ! शहर के कब्रिस्तानों की हिफाजत को बनाई गई किसी कमेटी का मै सदस्य नहीं, ना किसी और तरफ कब्र - कब्रिस्तानों की देख -रेख मेरा पैशा। मैं एक साधारण लिखक हूँ, पिछले काफी समय से अपने और देश से अपने संबंध को लेकर कुछ असाधारण -सा लिख डालने के जुनून में मुब्तिला। एक किताब अपने बुजुर्गों को उनकी जड़ों को खोजता वहाँ तक, जहाँआज हम हैं, लिखना मैंने अपना मकसद बना रखा है। साबित मैं यही करना चाहूँगा कि इस मुल्क में बसने वाले मुसलमान कहीं बाहर से नहीं आए। एक नया धर्म उन्होंने कबूल किया तो उससे उनकी जड़ें नहीं बदल गई - आज भी उतने ही भारतीय हैं जितने सैकड़ों साल पहले उनके पूर्वज थे। तलाश करें तो आसानी से हम उस सतह तक पहुंच सकते हैं जहाँउनका आपसी खून का रिश्ता साबित होता है। इस मकसद को शब्द और भाषा में पकड़ पाना, चरित्रों और वातावरण से अदा करना, यकीन जानिए, आसान काम नहीं और यह कोशिश मुझे पिछले महीनों और सालों में अजीब - अजीब जगह भटकती रही है !"७८

इन पंक्तियों द्वारा एहतेशाम जी ने उन लोगों की विचारधारा पर चोट करने का प्रयास किया है जिन्होंने स्वतंत्रता के दौरान एक अलग देश पाकिस्तान की मांग की थी परन्तु आज भी कई मुस्लिम लोग ऐसे हैं जिनके पूर्वज आज भी उतने ही भारतीय हैं जितने सैकड़ों वर्ष पहले थे !

राष्ट्रीय सद्भावना :-४:-

" एक बार दादी का पठानों और सरदार दोस्त मोहम्मद खान की शान में लंबा कसीदा सुनते रहने के बाद शप्पा दादा ने बहुत अजीजी के स्वर में कहा था, " बीया दोस्त मोहम्मद सरदार और नवाब तो यहाँ पहुंचकर बना। अपने घर से तो रोजी-रोटी की तलाश में निकला था। तिरा जैसी पिछड़ी जगह में कोई कलम चलाना तो सीख नहीं सकता था, तलवार ही चला सकता था। सो दोस्त मोहम्मद ने भी वही सीखा और हिंदुस्तान में फौज की नौकरी ढूंढ तक पहुंचा। वैसे उस वक्त पठानों के दिल में औरंगजेब के खिलाफ बहुत गुस्सा था क्योंकि उसने उन पर बहुत ज्यादातियाँ और जुल्म किए थे। दोस्त मोहम्मद के जमाने में, तिराह में ही एक बड़ा शायद, खुशहाल खान ' खटक ' गुजरा है। खुशहाल खान ' खटक ' उन खुशनसीब पठानों में से था जो तलवार के साथ कलम चलना भी जानते थे !"७९

इन उपर्युक्त पंक्तियों में एहतेशाम जी ने राष्ट्र के प्रति सद्भाव को 'भोपाल का बेगम दरबार' के पात्र दोस्त मोहम्मद द्वारा दर्शाया है जो की अपने राष्ट्र की सुरक्षा करने के लिए हिन्दुस्तान की फौज में नौकरी ढूंढने का प्रयास करता है जिससे इसका राष्ट्र के प्रति सद्भाव स्पष्ट रूप से पाठक के समक्ष उभर कर सामने आता है !

राष्ट्रीय सद्भावना :-५:-

" शप्पा दादा ने बताया, माँ जी ममोला ने उस अराजकता के माहौल में रियासत की बागडोर संभाली जब मराठी, राजपूत, रोहिल्ले और मुगल दरबार से टूटकर अलग हुए निजाम - सब आपस में लड़ रहे थे। मुल्क में चैन और अमन मयस्सर नहीं था। थोड़ी वक्त नहीं, पचास साल से ज्यादा वे रियासत की मुख्तार रहीं। उनमें आने वाले वक्तों कि समझ थी और यह अंदाजा था कि रियासत को कायम रख सकने के लिए मुल्क में कदम जमा रही अंग्रेजों की नई ताकत से दोस्ती करना जरूरी था। उन्हीं के जमाने में अंग्रेजों की तरफ दोस्ती का हाथ बढ़ाया गया और उनसे समझौते किए गए जिससे अंग्रेज जब ताकत में आए तो उन्होंने रियासत भोपाल की पुश्त - पनाही की और बार-बार काम आए। इसी पॉलिसी को आगे हुकूमत करने वाली बेगमों ने अपनाए रखा !"८०

एहतेशाम जी ने अपनी कहानी ' भोपाल का बेगम दरबार ' की इन पंक्तियों में राष्ट्रीय सद्भावना को समाहित करने प्रयास किया है जिससे भारत तथा पाश्चात्य देशों के साथ राष्ट्र के विकास को गति प्रदान की जा सके और समझौते भी।

राष्ट्रीय सद्भावना :-६:-

" ' तारा और उसका मित्र स्टीव, ' वह कह रही थी - उन दोनों ने अंत तक, फॉर्मल मैरिज नहीं की थी। वे लोग माउन्टैनियरिंग, यु नो, पहाड़ पर चढ़ते थे। अफ्रीका, नेपाल, साउथ अमेरिका के देश - एक लंबी लिस्ट है पहाड़ी चोटियों की, जो उन्होंने जीती। स्टेटस में माउन्टैनियरिंग इंस्टीट्यूट के साथ उनका कुछ आश्रम जैसा भी था, जहाँजड़ी - बूटियों, योगासन, भारतीय शास्त्रीय संगीत और नृत्य के बारे में जानने सीखने की व्यवस्था थी। स्टीव एक मालदार व्यक्ति था, जिसका संबंध घूम - फिर कर, किसी रेड इंडियन घराने से था !"८१

यहाँ पर मंज़ूर एहतेशाम जी ने राष्ट्रीय सद्भावना को व्यक्त करते हुए यह दर्शाया है की संसार के अन्य देशों में रहकर भी उन लोगों की अपने राष्ट्र के प्रति सद्भावना समाप्त नहीं हुई है तथा अन्य देशों द्वारा भी भारतीय लोगों को वहाँ रेड इंडियन के नाम से संबोधित किया जाता है जिसमें राष्ट्रीय सद्भावना अपने आप ही परिलक्षित होती है !

<u>-: अन्य कहानियों में सद्भावना :-</u>

मंज़ूर एहतेशाम जी की कहानियों में सद्भावना की पुष्टि करने के साथ - साथ अन्य कहानियों में भी हमने सद्भावनाओं को पुष्टि तथ्यों के आधार पर प्रस्तुत करने का प्रयास किया है जो को अपने-अपने समय की सुप्रसिद्ध रचनाएं हैं तथा पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, साम्प्रदायिक, सांस्कृतिक, भाषाई, तथा राष्ट्र के प्रति सद्भावना को अपने आपमें संजोए हुए है।

<u>अन्य कहानियों में पारिवारिक सद्भावना</u>

अन्य कहानियों में भी कई कहानीकारों ने पारिवारिक सद्भावना को व्यक्त किया है जिसमे से कुछ पारिवारिक सद्भाव की पुष्टि करते हुए पुष्टि तथ्य निम्नलिखित हैं :-

<u>पारिवारिक सद्भावना</u> -: 1 :- " पत्नी ने योजना बना रखी थी कि पति का प्रमोशन होगा तो वे लोग एल आई जी छोड़कर एम आई जी में चले जाएंगे। क्योंकि बच्चे बड़े हो रहे थे इसलिए अब एक और कमरे की जरूरत पड़ रही थी। बच्चे भी तरह - तरह के ख्वाब देख रहे थे। उसका बेटा चीनू कहता , ' पाप का प्रमोशन होगा तो साइकिल लूँगा। ' "[८२]

उपर्युक्त पंक्तियों में संजय जी ने एक परिवार की इक्षाओं को व्यक्त किया है जिसमे परिवार के सभी सदस्य परिवार के मुखिया की तनख्वा पर निर्भर होकर तथा उसके प्रमोशन के आधार पर योजना बना ली जाती है कि जब उनका प्रमोशन होगा तो अपनी इक्षाओं को पूरा करेंगे।

<u>पारिवारिक सद्भावना</u> -: 2 :- " जमुना अचंभे के साथ आँखे फाड़ - फाड़कर अपने पति को देख रही थी। दाम्पत्य-जीवन के इतने दीर्घकाल में कभी भी, यहाँ तक कि शादी के प्रारंभिक दिनों में भी, शकलदीप बाबू ने रात में उसको जगाकर कुछ खाने को नही मंगा था। वह झुंझला पड़ी और उसने असंतोष व्यक्त नही किया, 'ऐसा पेट तो कभी भी नही था। मालूम नही, इस समय रसोई में कुछ है या नही।"[८३]

इन पंक्तियों में अमरकांत जी ने पारिवारिक सद्भाव का बहुत ही आकर्षक चित्र प्रस्तुत किया है जिसमे एक पति - पत्नी के दाम्पत्य जीवन को दर्शाया गया है तथा पति के प्रति पत्नी के कर्तव्य को भी व्यक्त किया गया है।

<u>पारिवारिक सद्भावना</u> -: 3 :- "कहती - कहती दादी - अम्मा झुकी कमर से पग उठाती अपने कमरे की ओर चल दी। राह मे बेटे के कमरे का द्वार खुला देखा तो बोली, " जिस बेटे को मैने अपना दूध पिलाकर पाला, आज उसे देखे मुझे महीनों बीत जाते हैं, उससे इतना नहीं हो पाता कि बूढ़ी अम्मा की सुधि ले।"[८४]

उपर्युक्त पंक्तियों के द्वारा पारिवारिक सद्भाव की पुष्टि की जा सकती है कि कृष्णा सोबती जी ने अपनी ' दादी - अम्मा ' कहानी में एक बेटे के प्रति उसकी दादी के करुण भाव को दर्शाया है जिसमें पारिवारिक सद्भावना पाठक को इस कहानी का अध्ययन करते वक्त स्मरण हो जाती है।

<u>पारिवारिक सद्भावना</u> -:4:- " लक्ष्मी - आप और जो भी आज्ञा दे मैं मानने के लिए तैयार हूँ। उनकी स्त्री (आप) जीवित हैं , चार बच्चे हैं तथा बहनोई की अवस्था भी अधिक हो चली है। बहन ! मैं आपसे वचन देती हूँ कि मैं आजन्म अविवाहित रहने को सहर्ष स्वीकार करती हूँ। आप इसी तरह मेरी जायदाद से जो भी लाभ चाहें उठा सकती हैं।"[८५]

इन पंक्तियों में ब्रिजबाला देवी ने एक बहन का अपनी बहन के लिए बहुत बड़े त्याग को दर्शाया है जो कि पारिवारिक सद्भावना का द्योतक है। इसमे लक्ष्मी पात्र अपनी बहन के लिए अपना पूरा जीवन अविवाहित रह कर गुजारने का निर्णय करती है ताकि उसकी बहन का परिवार सुखी रहे।

<u>पारिवारिक सद्भावना</u> -: 5 :- " लोग आशा कर रहे थे कि यह सारी कहानी जरूर किसी-न-किसी तरह गनी के कानों तक पहुँच जाएगी" जैसे मलबे को देखकर उसे अपने-आप ही सारी घटना का पता चल जाएगा। गनी मलबे की मिट्टी नाखूनों से खोद-खोदकर अपने ऊपर डाल रहा था और दरवाजे के चौखट को बाँह में लिये रो रहा था, 'बोल, चिरागदीना, बोल! तू कहाँ चला गया, ओए ? ओ किश्वर ! ओ सुल्ताना ! हाय मेरे बच्चे ओए SS ! गनी को कहाँ छोड़ दिया, ओए SS।' "[८६]

उपर्युक्त पंक्तियाँ मोहन राकेश जी की 'मलबे का मालिक' कहानी से ली गई हैं जिसमे पारिवारिक सद्भावना के पुष्टि तथ्य विद्यमान हैं। इन पंक्तियों में गनी का अपने बेटे तथा उसके परिवार की मृत्यु हो जाने पर पारिवारिक सद्भाव का बहुत ही हृदय विदारक चित्र प्रस्तुत किया गया है।

अन्य कहानियों में सामाजिक सद्भावना

अन्य कहानियों में भी कई कहानीकारों ने सामाजिक सद्भावना को व्यक्त किया है जिसमे से कुछ सामाजिक सद्भाव की पुष्टि करते हुए पुष्टि तथ्य निम्नलिखित हैं :-

सामाजिक सद्भावना -:1:- "अतिशय गंभीरता के साथ मिठाई वाले ने कहा - " मैं भी अपने नगर का एक प्रतिष्ठित आदमी था। मकान व्यवसाय गाड़ी-घोड़े, नौकर - चाकर सभी कुछ था। स्त्री थी छोटे-छोटे दो बच्चे भी थे। मेरा वह सोने का संसार था। बच्चे ऐसे सुंदर थे, जैसे सोने के सजीव खिलौने। उनकी अठखेलियों के मारे घर में कोलाहल मचा रहता था। समय की गति ! विधाता की लीला अब कोई नहीं है। दादी, प्राण निकाले नही निकले। इसलिए अपने बच्चों की खोज में निकला हूँ। वे सब अंत में होंगे तो यहीं कहीं। आखिर , कहीं-न-कहीं जन्मे ही होंगे । उस तरह रहता तो घुल- घुलकर मरता। इस तरह सूख संतोष के साथ मरूँगा। इस तरह के जीवन में कभी-कभी अपने उन बच्चों की एक झलक- सी मिल जाती है। ऐसा जान पड़ता है, जैसे वे इन्हीं में उछल-उछलकर हँस-खेल रहे हैं। पैसों की कमी थोड़े ही है, आपकी दया से पैसे तो काफी हैं। जो नहीं है, इस तरह उसी को पता हूँ।"[८७]

यहाँ वाजपई जी ने एक मिठाई वाले के द्वारा सामाजिक सद्भावना को प्रस्तुत किया है जो कि गलियों में घूम घूम के छोटे छोटे बच्चों को बिना मुनाफे के समान बेचता है बस वो इसलिए क्योंकि उसे उन बच्चों की हंसी में अपने बच्चों का अक्स नज़र आता है और सभी बच्चे भी उसका बेसब्री से इंतज़ार करते हैं।

सामाजिक सद्भावना -:2:- " गनी ने लक्षित किया कि पहलवान के ओंठ सूख रहे हैं और उसकी आँखों के इर्द - गिर्द दायरे गहरे हो आए हैं, तो वह उसके कन्धे पर हाथ रखकर बोला, ' जी हल्का न कर, रक्खिया ! जो होनी थी, सो हो गयी। उसे कोई लौटा थोड़े ही सकता है? खुदा नेक की नेकी रखे और बद की बदी माफ करे ! मेरे लिए चिराग नही, तो तुम लोग तो हो। मुझे आकर इतनी ही तसल्ली हुई कि उस ज़माने की कोई तो यादगार है। मैने तुमको देख लिया, तो चिराग को देख लिया। अल्लाह तुम लोगों को सेहतमंद रखे ! जीते रहो और खुशियाँ देखो ! ' और गनी छड़ी पर दबाव देकर उठ खड़ा हुआ। चलते हुए उसने फिर कहा, ' रक्खे पहलवान याद रखना !' "[८८]

उल्लिखित पंक्तियाँ ये पुष्टि प्रदान करती हैं कि समाज मे धर्म नहीं इंसानियत सर्वोपरि है यहाँ भीष्म साहनी जी ने गनी पात्र के माध्यम से सामाजिक सद्भाव को दर्शाने का प्रयास किया है जो कि उस पहलवान के साथ सद्भाव व्यक्त करता है जिसने उसके परिवार को ख़ुद खुदा के घर भेज दिया था।

सामाजिक सद्भावना -:3:- "एक बच्चा उसकी झोली में दूध पी रहा था। एक मुठ्ठी में उसने माँ की चोली पकड़ रखी थी और दूसरा हाथ वह बार-बार पालक के पत्तों पर पटकता था। माँ कभी उसका हाथ पीछे हटाती थी और कभी पालक की ढेरी को आगे सरकाती थी, पर जब उसे दूसरी तरफ बढ़कर कोई चीज़ ठीक करनी पड़ती थी, तो बच्चे का हाथ फिर पालक के पत्तों पर पड़ जाता था। उस स्त्री ने अपने बच्चे की मुठ्ठी खोलकर पालक के पत्तों को छुडाते हुए घूरकर देखा, पर उसके होठों की हँसी उसके चेहरे की सिल्वटों में से उछलकर बहने लगी। सामने पड़ी हुई सारी तरकारी पर जैसे उसने हँसी छिड़क दी हो और मुझे लगा, ऐसी ताज़ी सब्जी कभी कहीं उगी नहीं होगी।"[८९]

सामाजिक सद्भावना की पुष्टि करती हुई अमृता प्रीतम जी द्वारा रचित कहानी 'एक जीव, एक रानी, एक सपना' की पंक्तियाँ ये दर्शाती हैं कि कैसे सब्जी बेचने वाली एक स्त्री अपने बच्चे को साथ मे लिए उसे संभालती है यह देख इस कहानी की मुख्य पात्र उसकी ममता के प्रति मोहित हो जाती है तथा बच्चे की क्रियाऐं उसके मन को भा जाती हैं उसे ऐसा प्रतीत होता है जैसे उसका पुत्र हो।

सामाजिक सद्भावना -:4:- "ठीक है भाई पचास ही ले लेना, मगर मुझे जल्दी पहुँचाओ। अगर समय से बस ना मिली तो मैं आज की रात राँची में ही अटक जाउंगा। हवाई टिकट का नुकसान होगा सो अलग।" अभिनव हड़बड़ा रहा था। "बस के लिए तो आप बिल्कुल मत घबराइए। मैं आपको समय से स्टैन्ड पहुँचा दूंगा।" कह कर उसने अपने सर पर लपेटे गमछे से रिक्शा की सीट झाड़ कर उसे बैठने का इशारा किया।"[९०]

कमल जी की 'फ्लाइट आठ सौ दस' कहानी की ये पंक्तियाँ सामाजिक सद्भावना की पुष्टि करती हुई परिलक्षित होती हैं जब अभिनव को हवाई अड्डे पर पहुंचना था तो बस में वह एक जाम में फस जाता है फिर उस बस में एक कंडक्टर उसे सलाह देता है तथा एक रिक्शेवाला उसे समय पर अड्डे पर पहुंचाने का दिलासा देता है यहाँ कन्डक्टर एवं रिक्शेवाले के माध्यम से सामाजिक सद्भावना को प्रस्तुत किया गया है।

सामाजिक सद्भावना -:5:- " कभी-कभी मुझे आश्चर्य होता है कि उस दिन की पिटाई के बाद भी खँडहर का वह भिखमंगा मुहल्ले में टिके रहने की हिम्मत कैसे कर सका? हो सकता है, उसने सोचा हो कि निर्दोष छूट जाने के बाद मुहल् ले के लोगों का विश्वास और सहानुभूति उसको प्राप्त हो जायेगी और दूसरी जगह उसी अनिश्चितता का सामना करना पड़ेगा।चाहे जो हो, उसके प्रति मेरी दिलचस्पी अब और बढ़ गयी थी। मैं उसको खँडहर में बैठकर कुछ खाते या चुपचाप सोते या मुहल्ले से डग-डग सरकते हुए देखता। लोग अब उसको कुछ-न-कुछ दे देते। बचा हुआ बासी या जूठा खाना पहले कुत्तों या गाय-भैंसों को दे दिया जाता, परन्तु अब औरतें बच्चों को दौड़ा देतीं कि जाकर भिखमंगे को दे आयें। कुछ लोगों ने तो उसको कोई पहुँचा हुआ साधु-महात्मा तक कह डाला। "[९१]

यहाँ अमरकांत जी ने अपनी इस कहानी 'जिंदगी और जोंक' में एक भिखारी के प्रति समाज में रह रहे लोगों के भिन्न-भिन्न तरह के सद्भाव को प्रस्तुत किया है। किसी के अंदर उस भिखारी के प्रति दया का भाव है किसी के भीतर आक्रोश का तथा किसी के भीतर चिंता का।

अन्य कहानियों में धार्मिक सद्भावना

अन्य कहानियों में भी कई कहानीकारों ने धार्मिक सद्भावना को व्यक्त किया है जिसमे से कुछ धार्मिक सद्भाव की पुष्टि करते हुए पुष्टि तथ्य निम्नलिखित हैं :-

धार्मिक सद्भावना -:1:- " महर्षि वाल्मीकि तीर्थ - यात्रा से लौटकर राम-नाम-गुण-गान करते हुए अपने आश्रम में प्रविष्ट हुए, तो उन्होंने देखा - एक घनी लता की ओट में पत्थर की शिला पर मस्तक नत किए हुए बैठी सीता आज एकाग्र मन से कुछ लिख रही है। कुतूहलवश मुनि वाल्मीकि उसी ओर को चल दिए और चुपचाप सीता के पीछे खडे होकर देखने लगे। सीता के हाथ का बनाया हुआ एक अधूरा चित्र उसके सम्मुख है। हाथ में तूलिका लिए और चित्र में आँखे गड़ाए सीता बिल्कुल स्तब्ध बैठी है। उस अधूरे चित्र के भावों में वह इस प्रकार डूब गई है कि उसे अपनी आँखों के आँसुओं की भी खबर नही है, जो लगातार झरने की भाँति झर रहे हैं।"[९२]

कमला चौधरी जी द्वारा रचित कहानी 'अधूरा चित्र' की इन पंक्तियों द्वारा यह सिद्ध हो जाता है कि इन्होंने अपनी इस कहानी में धार्मिक सद्भावना का समावेश किया है। जिसमे हिन्दू धर्म की मान्यता एवं उस धर्म के इष्ट देवी - देवता का वर्णन किया गया है।

धार्मिक सद्भावना -:2:- " वाङ्चू मुस्कुराया अपनी डेढ़ दाँत की मुस्कान, फिर बोला, ' आप भद्रजन इस सम्बंध में ज्यादा जानते हैं। मैं तो साधारण बौद्ध जिज्ञासु हूँ। पर भारत प्राचीन देश है। उसकी संस्कृति शान्ति और मानवीय सद्भावना की संस्कृति हैं***' "[९३]

'वाङ्चू' कहानी से उद्धरत इन पंक्तियों में भीष्म साहनी जी ने बौद्ध धर्म का सद्भाव वाङ्चू, पात्र के माध्यम से प्रस्तुत किया है जिसमे वो अपने आपको बौद्ध धर्म का जिज्ञासु बता रहा है तथा साथ ही शान्ति और मानवीय संस्कृति की संवेदना भी व्यक्त की है।

धार्मिक सद्भावना -:3:- " पंडित जी ने एक रस्सी निकाली। उसका फंदा बनाकर मुर्दे के पैर में डाला और फंदे को कसकर खीच दिया। अभी कुछ-कुछ धुंधलका था। पंडित जी ने लाश को पकड़कर घसीटना शुरू किया और गांव के बाहर घसीट ले गए। वहाँ से आकर तुरंत स्नान किया, दुर्गापाठ पढ़ा और घर में गंगाजल छिड़का।"[९४]

धार्मिक सद्भावना के पुष्टि के लिए हमने सुविख्यात रचनाकार प्रेमचंद की रचना 'मानसरोवर भाग - 4' से इन पंक्तियों को लिया है जिसमे एक मृत शरीर के दाह संस्कार के पश्चात् जो कार्य किए जाते हैं वही कार्य अथवा रीति पंडित जी द्वारा एक मृत शरीर को गाँव से बाहर निकालने के पश्चात् किया जाता है जो कि हिन्दू धर्म की मान्यताओं को दर्शाता है।

<u>धार्मिक सद्भावना -:4:-</u>" घूमते-घूमते सांझ हो गई। वह थककर मंदिर के चबूतरे पर जा बैठा। मंदिर बहुत बड़ा था, ऊपर सुनहला कलश चमक रहा था। जगमोहन पर संगमरमर के चौके जड़े हुए थे, मगर आंगन में जगह-जगह गोबर और कूड़ा पड़ा था। जामिद को गंदगी से चिढ़ थी, देवालय की यह दशा देखकर उससे न रहा गया, इधर-उधर निगाह दौड़ाई कि कहीं झाड़ू मिल जाए, तो साफ़ कर दे, पर झाड़ू कहीं नज़र न आई। विवश होकर उसने दामन से चबूतरे को साफ़ करना शुरू कर दिया। "[९५]

धार्मिक सद्भावना की पुष्टि हेतु हमने प्रेमचंद जी की कहानी 'हिंसा परमो धर्मः' से इन पंक्तियों को लिया है जिसमे एक मुस्लिम पात्र द्वारा एक मंदिर की सफाई की जाती है तथा वहाँ के पुजारियों द्वारा जामिद को एक ऋषिमुनि बनाने के लिए उससे आग्रह करते हैं यहाँ हिन्दू एवं मुस्लिम धर्म को एक होता दर्शाया गया है। जो कि धार्मिक सद्भावना का द्योतक है।

अन्य कहानियों में साम्प्रदायिक सद्भावना

अन्य कहानियों में भी कई कहानीकारों ने साम्प्रदायिक सद्भावना को व्यक्त किया है जिसमे से कुछ साम्प्रदायिक सद्भाव की पुष्टि करते हुए पुष्टि तथ्य निम्नलिखित हैं :-

साम्प्रदायिक सद्भावना -:1:- वह भूल गया था कि वह एक हिन्दू के घर में बैठा यह बात कर रहा है। वृद्धा सन्न रह गई। हिन्दू भी किसी को मार सकते है ? उसे विश्वास न हुआ। उसका अविश्वास हामिद ने पढ़ लिया। बोला, "बड़ी बी, इंसान के बराबर शैतान कोई नहीं और देवता भी कोई नहीं। वे थे दंगे के दिन। हम लोग काँप-काँप उठते थे। दोनों तरफ खून-पर-खून हो रहे थे। एक दिन कुछ हिन्दू हथियार लिये हमारे मकान पर चढ़ आए। वालिद ने मुझे घास के के नीचे छिपा दिया और खुद उनके सामने चले गए। उन्होंने जिन्दगी की भीख माँगनी चाही पर जालिमों ने मौका ही न दिया। मैं जब खून से रँगी उनकी याद करता हूँ तो•••••कितना प्यारा चहरा था।"[१०७]

रामचंद्र तिवारी जी की कहानी 'पिशाची कारा' की ये पंक्तियाँ हमें साम्प्रदायिक सद्भावना से अवगत करवाती हैं। इन पंक्तियों में हिन्दू-मुस्लिम के बीच द्वेष भाव को लेखक ने प्रस्तुत किया है। जिससे दोनों धर्मों के बीच बड़े ही हृदय विदारक चित्र को प्रस्तुत किया गया है।

साम्प्रदायिक सद्भावना -:2:- " बुड्ढे मुसलमान ने बच्चे को देने के लिए जो पैसा निकाला था, वह वापस जेब में रख लिया। सिर से टोपी उतारकर उसने वहाँ थोड़ा खुजलाया और टोपी बगल में दबा ली। उसका गला खुश्क हो रहा था और घुटने जरा-जरा कांप रहे थे। उसने गली के बाहर की बन्द दुकान के तख्ते का सहारा ले लिया और टोपी फिर से सिर पर लगा ली। गली के सामने, जहाँ पहले ऊँचे-ऊँचे शहतीर रखे रहते थे, वहाँ अब तिमंजिला मकान खड़ा था। सामने बिजली के तार पर दो मोटी-मोटी चीलें बिल्कुल जड़ होकर बैठी थी। बिजली के खंभे के पास थोड़ी धूप थी। वह कई पल धूप में उड़ते हुए ज़र्रों को धूप में उड़ते हुए ज़र्रों को देखता रहा। फिर उसके मुंह से निकला या मालिक। "[१०८]

'मलबे का मालिक' कहानी मोहन राकेश जी द्वारा रचित है इस कहानी की इन पंक्तियों में एक बूढ़े मुसलमान के द्वारा एक हिन्दू बच्चे के प्रति सद्भाव को दर्शाया गया है जिसमे साम्प्रदायिक सद्भावना की पुष्टि होती हुई हमें प्रतीत होती है। जिसमें एक मुस्लिम पात्र के द्वारा इस भाव को लेखक ने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

साम्प्रदायिक सद्भावना -:3:- " अपने देश के विभाजन के समय बड़े क्रूर हिन्दू-मुसलमान दंगे हुए थे। सांप्रदायिकता का जहर हमारे समूचे सामाजिक जीवन में फैल गया था। मगर उस समय भी ज्यादातर लेखक, चाहे वे हिंदू हो या सिख या मुसलमान, सांप्रदायिक उन्माद के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद करते रहे थे। पंजाब में अमृता प्रीतम, मोहन राकेश हो या पाकिस्तान में शायद हसन मंटो, उनके लेखन का मुख्य विषय संप्रदायिक संबंध से ही था। आज भी, जब वही सांप्रदायिकता का जहर एक बार फिर फैल रहा है- यद्यपि इस बार वह एक बदले हुए रूप में, धार्मिक तत्ववाद के रूप में फैल रहा है- शायद ही कोई महत्वपूर्ण लेखक हुआ जिसने अपने ऊपर इस शहर का असर होने दिया हो।"[१०९]

भीष्म साहनी जी की कहानी 'अपनी बात' की इन पंक्तियों में हमें साम्प्रदायिक सद्भावना के पुष्टि तथ्य प्राप्त हुए हैं अर्थात् इस कहानी में देश-विभाजन के समय मे जो साम्प्रदायिकता हिन्दू-मुस्लिम के बीच। फैलाई गई थी उसका वर्णन इन पंक्तियों में किया गया है तथा कई रचनाकारों ने इस भवना के विरुद्ध अपनी आवाज भी उठाई तथा अपनी कृतियों में इस भावना को समाहित भी किया है।

साम्प्रदायिक सद्भावना -:4:- " काज़ी-- हो रहा है। जैसा तुम हमारे साथ करोगे वैसा ही हम तुम्हारे साथ करेंगे। फिर हम तो बे-आबरू नहीं करते, सिर्फ अपने मजहब में शामिल करते है। इस्लाम कबूल करने से आबरू बढ़ती है, घटती नहीं। हिन्दू कौम ने तो हमें मिटा देने का बीड़ा उठाया है। वह इस मुल्क से हमारा निशान मिटा देना चाहती है। धोखे से, लालच से, जब्र से, मुसलमानों को बे-दीन बनाया जा रहा है, तो मुसलमान बैठे मुँह ताकेंगे ? "[११०]

कथा - साहित्य के प्रसिद्ध रचनाकार प्रेमचंद जी द्वारा रचित कहानी 'हिंसा परमो धर्मः' की इन पंक्तियों में भी हमें साम्प्रदायिक सद्भावना प्राप्त हुई जिसमें एक मौलाना के द्वारा एक हिन्दू स्त्री को मुस्लिम धर्म अपनाने की बात व्यक्त की गई है तथा उस मौलाना की बात ना मानने पर वह उस स्त्री को जबरन मुस्लिम बनाने की बात कहता हुआ यहाँ प्रतीत होता है।

अन्य कहानियों में सांस्कृतिक सद्भावना

अन्य कहानियों में भी कई कहानीकारों ने सांस्कृतिक सद्भावना को व्यक्त किया है जिसमे से कुछ सांस्कृतिक सद्भाव की पुष्टि करते हुए पुष्टि तथ्य निम्नलिखित हैं :-

सांस्कृतिक सद्भावना -:1:- " सुनो वाङ्चू, भारत और चीन के बीच बन्द दरवाजे अब खुल रहे हैं। अब दोनों देशों के बीच संपर्क स्थापित हो रहे हैं। अध्ययन का जो काम तुम अभी तक अलग-थलग करते रहे हो, वही अब तुम अपने देश के मान्य प्रतिनिधि के रूप में कर सकते हो। तुम्हारी सरकार तुम्हारे अनुदान का प्रबंध करेगी। अब तुम्हें अलग-थलग पड़े नहीं रहना पड़ेगा। तुम पंद्रह साल से अधिक समय से भारत में रह रहे हो, अंग्रेजी और हिन्दी भाषाएँ जानते हो, बौद्ध ग्रंथों का अध्ययन करते रहे हो, तुम दोनों देशों के सांस्कृतिक संपर्क में एक बहुमूल्य कड़ी बन सकते हो....."[९६]

सांस्कृतिक सद्भावना की पुष्टि करती हुई ये पंक्तियाँ भीष्म साहनी जी की कहानी 'वाङ्चू' से है जिसमे वाङ्चू पात्र चीन का निवासी होते हुए भारत की भाषाएँ जान तथा बोल सकता है हिंदी भाषा के साथ अंग्रेजी भाषा तथा बौद्ध ग्रंथ का अध्ययन करता है जो कि भारत एवं चीन की कड़ी बन जाता है।

सांस्कृतिक सद्भावना -:2:- उदय प्रकाश जी की कहानियों में पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव देखा जा सकता है और इस संस्कृति का युवाओं पर पड़ रहे प्रभाव को बड़े ही सुंदरतम रूप में प्रस्तुत किया गया है। उपभोक्तावादी संस्कृति ने पूरे देश को अपने आप में समाहित कर लिया है आज कोई भी व्यक्ति इससे अछूता नहीं है। विशेषकर मध्यवर्ग इस बाजार की चपेट में पूर्ण रूप से आ चुका है। उदय प्रकाश जी ने इसी बाजार की महिमा का वर्णन 'पॉल गोमरा का स्कूटर' कहानी में व्यक्त किया है -- "बाजार अब सभी चीजों का विकल्प बन चुका था। शहर, गांव, कस्बे बड़ी तेजी से बाजार में बदल रहे थे, हर घर दुकान में तब्दील हो रहा था। बाप अपने बेटे को इसलिए घर से निकालकर भगा रहा था कि वह बाजार में कहीं फिट नहीं बैठ रहा था। पत्नियाँ अपने पतियों को छोड़-छोड़कर भाग रही थीं क्योंकि बाजार में उनके पतियों की कोई खास माँग नहीं थी। औरत बिकाऊ और मर्द कमाऊ का महान चकाचक युग आ गया था।"[९७]

सांस्कृतिक सद्भावना -:3:- उदय प्रकाश जी ने इस कहानी के माध्यम से उपभोक्तावादी संस्कृति को पूरी शिद्दत से अपने शब्दों के चमत्कारिक रूप के द्वारा प्रस्तुत किया है। आज 21वीं सदी की दहलीज पर खड़ा भारत एक नए रूप में दुनिया के सामने हमारे समक्ष प्रस्तुत है। इस समय मे हमारे भारत देश की सभ्यता एवं संस्कृति पूर्णरूप से लकवाग्रस्त हो चुकी है एवं मानवीय मूल्य पूर्ण रूप से विलुप्त हो चुके हैं। अब देश मे केवल स्वार्थ, हिंसा, बेईमानी, लूट-खसोट बचा है तथा ये सारे

मनुष्य के नकारात्मक तत्व मनुष्य की नस-नस में रक्त बनकर दौड़ रहे हैं। दुनिया की सम्पूर्ण शक्तियाँ इन्हीं बुराइयों को आश्रय देने में लगी हैं। तथा पूंजीवादी संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए पूरा का पूरा देश पूरी तरह भरसक प्रयास में लगा हुआ है -- "यही वह आदमी है -- खाऊ, तुंदियल, कामुक, लुच्चा, जालसाज और रईस जिसकी सेवा की खातिर इस व्यवस्था और सरकार का निर्माण किया गया है, इसी आदमी के सुख और भोग के लिए इतना बड़ा बाजार और इतनी सारी पुलिस और फौज है।"[९८]

<u>सांस्कृतिक सद्भावना -:4:-</u> सांस्कृतिक सद्भावना की पुष्टि करते हुए उदय प्रकाश जी ने 'वारेन हेस्टिंग्स का सांड़' कहानी के माध्यम से मध्यवर्गीय समाज की परिस्थिति को बडे ही यथार्थवादी रूप से व्याख्यायित करने का प्रयास किया है। आधुनिकता के नाम पर आज प्रत्येक मनुष्य ने सामाजिक एवं मानवीय मूल्यों को पूरी तरह से अस्त - व्यस्त कर दिया है। उदय प्रकाश रचित 'वारेन हेस्टिंग्स का सांड़' कहानी एक ऐसी ही कहानी है जिसमें उन्होंने लूट-खसोट, बेईमानी और चोरी - डकैती की ऐसी दास्तान व्यक्त की है जो आज नव-औपनिवेशिक मूल्य एक संकट के रूप में हमारे समाज और देश के सामने प्रत्यक्ष रूप में मौजूद है। उदय प्रकाश जी ने इस कहानी में प्लासी युद्ध (सन् 1757) में बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला को हराने वाले ईस्ट इंडिया कंपनी के लार्ड क्लाइव के मूल्यों के माध्यम से यह व्याख्या करते हैं कि लार्ड क्लाइव की तब की व्याख्या आज के दौर में उतनी ही प्रासंगिक सिद्ध होती है जितनी कि यह उस समय थी-- "मैं सिर्फ यही कहूँगा कि अराजकता का ऐसा दृश्य, ऐसा भ्रम, ऐसी घूसखोरी और बेईमानी, ऐसा भ्रष्टाचार और ऐसा लूट-खसोट जैसी हमारे राज में दिखाई दे रही है, वैसे किसी और देश में न सुनी गई, न देखी गई। अचानक धनाढ्यों की बेइंतहा दौलतपरस्ती ने विलासिता और भोग के भीषण रूप को चारों तरफ पैदा कर दिया है। इस बुराई से हर डिपार्टमेंट का हर सदस्य प्रभावित है। हर छोटा मुलाजिम ज्यादा से ज्यादा धन हड़पकर बड़े मुलाजिम या अधिकारी के बराबर हो जाना चाहता है। क्योंकि वह यह जानता है कि संपत्ति और ताकत ही उसे बड़ा बना रही है ...कोई ताज्जुब नहीं कि दौलत की इस हवस को पूरा करने वाले साधन इन लोगों के वे अधिकार हैं जो इन्हें उत्तरदायित्वपूर्ण ढंग से प्रशासन चलाने के लिए दिए गए हैं। विडंबना है कि ये 'साधन' सिर्फ रिश् वतखोरी जैसे भ्रष्ट आचरण के लिए ही नहीं लूट-खसोट, ठगी-जालसाजी के लिए भी इस्तेमाल हो रहे हैं। इसकी मिसालें ऊपर के पदों पर बैठे लोगों ने कायम की हैं तो भला नीचे के लोग उसका अनुसरण करने में नाकामयाब क्यों रहें? यह रोग सर्वव्यापी है। यह नागरिक, प्रशासन, पुलिस और फौज ही नहीं लेखकों, कलमनवीसों और व्यापारियों तक को अपनी चपेट में ले चुका है। और यही है वह बिंदु जहां ढाई सौ साल पहले की कहानी आज की कहानी बनती है। इतिहास फिर से निरंतरता हासिल करता है और इस सदी के एक महान कथाकार की पंक्तियां अमर हो जाती हैं कि सारे संसार में अनादिकाल से आज तक बस एक ही कहानी रची गई है और वही बार-बार दोहराई जाती है। उसका रूप, उसका कलेवर बदल सकता है, पर मूल कथा वही है।"[९९]

<u>सांस्कृतिक सद्भावना -:5:-</u> सांस्कृतिक सद्भावना की पुष्टि हेतु ये पंक्तियाँ उदय प्रकाश की कहानी 'दत्तात्रेय के दुख' से ली गई हैं। जिसमें उपभोक्तावादी संस्कृति और मध्यवर्ग का खास रिश्ता बतलाया गया है। अथवा अक्सर मध्यवर्ग पूंजीवादी लॉलीपॉप को देखकर ज्यादा उत्सुक प्रतीत होने लगता है, उसके मुँह में पानी आने लगता है, भले ही यह लॉलीपॉप स्वास्थ्य के लिए बुरा ही क्यों न हो। उदय प्रकाश जी 'दत्तात्रेय के दुख' रचना में इसी उपभोक्तावादी (संस्कृति) रूपी लॉलीपॉप का जिक्र करते हुए कहते है की -- "दिवाली की रात थी। बच्चों ने कुत्ते की पूंछ में पटाखे की लड़ी बांध दी और बत्ती को तिली दिखा दी थी। पटाखे धड़ा-धड़ फूट रहे थे और कुत्ता बदहवास, होशोहवास खोकर चीखता, भौंकता, रोता, गिरता-पड़ता भाग रहा था। कुत्ता जब विनायक दत्तात्रेय के पास से गुजरा तो उन्होंने कुत्ते के सामने हड्डी के टुकड़े फेंक दिए। एक तरफ लालच में कुत्ता हड्डी चबा रहा था, दूसरी तरफ पूंछ में बंधे पटाखे के लगातार फूटने की वजह से चीख-पुकार भी मचा रहा था। एक तरफ कुत्ते के मुंह से लार बह रही थी, दूसरी तरफ उसके गले से चीख निकल रही थी। एक अद्भुत ट्रैजिक-कॉमिक दृश्य था। विनायक दत्तात्रेय हँसे। लोगों ने पूछा -- आप क्यों हँस रहे हैं? तो उन्होंने जवाब दिया -- देखो इस कुत्ते को। यह बिल्कुल तीसरी दुनिया का उपभोक्तावादी मनुष्य लग रहा है। उत्तर-आधुनिक उपभोक्तावाद का दुर्दांत दृष्टांत।"[१००]

अन्य कहानियों में भाषाई सद्भावना

अन्य कहानियों में भी कई कहानीकारों ने भाषाई सद्भावना को व्यक्त किया है जिसमे से कुछ भाषाई सद्भाव की पुष्टि करते हुए पुष्टि तथ्य निम्नलिखित हैं :-

मंज़ूर एहतेशाम जी के अलावा अन्य कई साहित्यकारों ने अपनी कहानियों में भाषाई सद्भावना का समावेश किया है जिसमें भिन्न-भिन्न प्रकार की भाषाओं एवं उनकी शब्दावली का प्रयोग किया गया है कुछ अन्य कहानियों में भाषाई सद्भावना की पुष्टि करते हुए कुछ पुष्टि तथ्य इस प्रकार हैं :-

भाषाई सद्भावना -:1:- दोहानुमा भाषा शेर में यह लेखक ने भाषाई सद्भाव को इस प्रकार प्रकट किया है,

" जिद्दी को जिद्दी मिली मिला इश्क को हुस्न

बानो देखती रह गई देवी आई संग।"[१०१]

उपर्युक्त पंक्तियाँ मो. आरिफ की ' तार ' कहानी से ली गई हैं जिसमे भाषाई सद्भावना की पुष्टि की गई है इन पंक्तियों में दोहनुमा शेरोशायरी की शब्दावली का प्रयोग किया है जिसमे पाठक को भाषाई सद्भाव स्पष्ट रूप से प्रतीत होता है।

भाषाई सद्भावना -:2:- " -"जीजस सेड, आई एम द लाइट ऑफ द वर्ल्ड - ही दैट फालोएथ मी शैल नॉट वाक इन डार्कनेस, बट शैल हैव दा लाइट ऑफ लाइफ.....!" "[१०२]

निर्मल वर्मा जी की कहानी ' परिंदे ' में भाषाई सद्भावना को व्यक्त किय है इन्होंने इन पंक्तियों में अंग्रेजी भाषा की शब्दावली का प्रयोग बहुत ही उत्कृष्ट रूप में किया है तथा कई स्थानों पर सम्पूर्ण अंग्रेजी वाक्यों द्वारा इनके पात्र संवाद करते हुए प्रतीत होते हैं।

भाषाई सद्भावना -:3:- " पापा को इस बार हार्ट- अटैक हुआ है सो छुट्टियों में कहीं बाहर तो जा नहीं सकेंगे। हमने तो सारी छुट्टियाँ यहीं बोर होना है। मैं और ममी सप्ताह में एक पिक्चर तो देखते ही हैं, ईट्स ए मस्ट फ़ॉर अस। छुट्टियों में तो हमने दो देखनी हैं।"[१०३]

भाषाई सद्भावना की पुष्टि हेतु मनु भंडारी जी की 'एक प्लेट सैलाब' कहानी की पंक्तियाँ उपर्युक्त उल्लिखित हैं । इनकी इन पंक्तियों में पाश्चात्य भाषा का प्रयोग पात्रों के संवाद के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

भाषाई सद्भावना -:4:- " उस हालात में आते हुए देखकर मिसरानी भौजी दौड़ पड़ती हैं, " अरे भईया, ई का भावा ? ई का हाल बनाए रक्खा है ? कौनो साथे झगड़ा होइ गवा का ? हाय दैया ! मोहल्ले वालों को गालियाँ देती जाती हैं और हल्दी चुने का गरम लेप चोंटों पर लगती जाती है। अर्द्धमूर्छा की स्थिति में लगता है, जैसे अपने सब लोग खड़े - खड़े देख रहे हैं और मिसरानी भौजी अपनी कोमल उंगलियों से रग-रग सहलाए जा रही हैं।"[१०४]

रमेश उपाध्याय जी की कहानी 'गलत - गलत' की इन उपर्युक्त पंक्तियों में प्रश्नवाचक शब्दावली का प्रयोग किया गया है तथा भोजपुरी का प्रयोग पात्रों के संवाद में हमें दिखलाई पड़ता है। जिसके आधार पर यहाँ भाषाई सद्भावना की पुष्टि स्पष्ट हो रही है।

भाषाई सद्भावना -:5:- " वज़ोरसिंघ ने त्यौरी चढ़ाकर कहा- " क्या मरने-मारने की बात लगाई ? मरें जर्मनी और तुरक ! हाँ भाइयों, कैसे-"

दिल्ली शहर तें पिशौर नूँ जाँ दिए,

कर लेणा लौंगां दा बपार मडीए;

कर लेणा नाड़े दा सौदा आडिए-

ओए लाणा चटका कदुएनुँ।

कद्दू बणया वे मजेदार गोरिये,

हुण लाणा चटाका कदुए नूँ।।

कौन जानता था कि दाढ़ियों वाला घर-बारी सिख ऐसा लुच्चों का गीत गायंगे, पर सारी खन्दक इस गीत से गूँज उठी और सिपाही फिर ताजे हो गए, मानो चार दिन से सोते और मौज ही करते रहे हों।"[१०५]

चंद्रधर शर्मा गुलेरी जी द्वारा रचित कहानी' उसने कहा था ' की उपर्युक्त पंक्तियों में भाषाई सद्भावना स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रही है। इस कहानी में गुलेरी जी ने पंजाबी भाषा की शब्दावली का बहुत ही सुंदरतम रूप प्रस्तुत किया है। जिसमें वाज़ोरसिंघ द्वारा पंजाबी भाषा का प्रयोग किया गया है।

<u>भाषाई सद्भावना -:6:-</u> राजेन्द्र यादव कहीं- कहीं रोमन लिपि में ही सम्पूर्ण वाक्य को अंग्रेजी में व्यक्त कर देते हैं----

" I shall depart, steamer with swaying

Masts, raise anchor exotic

Landscapes, sea breeze - Mallarme"[१०६]

उपर्युक्त वाक्यों में राजेंद्र यादव जी ने भाषाई सद्भाव को अंग्रेजी भाषा के शब्दों एवं वाक्यों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। उनकी यह लेखनशैली हमें एक प्रकार की नवीनतम शैली का अनुभव कराती है। इनकी यह लेखन शैली हमें हिंदी कथा-साहित्य में भाषाई सद्भावना की एक अलग ही स्तर की अनुभूति करवाती है।जिसमें रोमन लिपि के शब्दों का बहुत ही सुंदर प्रयोग इन्होंने किया है।

अन्य कहानियों में राष्ट्र के प्रति सद्भावना

अन्य कहानियों में भी कई कहानीकारों ने राष्ट्र के प्रति सद्भावना को व्यक्त किया है जिसमें से कुछ राष्ट्र के प्रति सद्भाव की पुष्टि करते हुए पुष्टि तथ्य निम्नलिखित हैं :-

राष्ट्र के प्रति सद्भावना -:1:- "अभी पिछले ही महीने यही मुकाम था जब मैं एक शाम उनके साथ बैठा लॉटरी की टिकटों के बारे में सोच रहा था। जब मैंने उन्हें यह सुझाव दिया तो वह भी सोचने लगे। फिर मैंने उन्हें एक नाम भी सुझाया भारत माता लॉटरी केंद्र या फिर हिंदुस्तान लॉटरी सेंटर जैसा कुछ रख ले.... नहीं तो गांधी या नेहरू के नाम पर...। वे हंसते हुए पूछे मोर छाप लॉटरी सेंटर नहीं चलेगा क्या ? मोर तो हमारा राष्ट्रीय पक्षी है। मैंने संजीदगी से कहा, देखिए एक बार बदनामी हो जाने के बाद....। वे और जोर से हँसने लगे फिर बोले नाम के बारे में मुझे सोचने दो।"[१११]

मो. आरिफ जी ने 'तार' कहानी में राष्ट्र के प्रति सद्भाव को बहुत ही आकर्षक रूप से व्यक्त किया है इनकी इन पंक्तियों में राष्ट्रीय भावों को पात्रों के माध्यम से लॉटरी की कंपनी के नाम के द्वारा व्यक्त किया गया है। जैसा कि 'भारत माता लॉटरी' या 'हिंदुस्तान लॉटरी सेंटर' में परिलक्षित होता है।

राष्ट्र के प्रति सद्भावना -:2:- " आज होली है; मगर आजादी के मतवालों के लिए न होली है न बसन्त। हाशिम की दूकान पर आज भी पिकेटिंग हो रही है, और तमाशाई आज भी जमा हैं। आज के स्वयंसेवकों में अमरकान्त भी खड़े पिकेटिंग कर रहे हैं। उनकी देह पर खद्दर का कुरता है और खद्दर की धोती। हाथ में तिरंगा झण्डा लिये हैं। "[११२]

प्रेमचंद जी ने 'होली का उपहार' कहानी में राष्ट्र के प्रति सद्भाव को बहुत ही हृदयग्राही रूप से यहाँ वर्णित किया है इनकी इन पंक्तियों में वंदे मातरम की ध्वनि से ही राष्ट्रीय भावना का हमें पता लग जाता है एवं होली के पावन अवसर पर अमरकांत के सहयोगी राष्ट्र के प्रति सद्भाव को बार-बार वंदे मातरम की ध्वनि करके देश प्रेम के भाव को व्यक्त कर रहे हैं तथा उपर्युक्त पंक्तियों में अमरकांत की देंह पर खद्दर की धोती एवं खद्दर का कुर्ता है एवं हाथ में हिंदुस्तान का तिरंगा झंडा जो कि अपने आप में ही अमरकांत का राष्ट्र के प्रति प्रेम-भाव को दर्शा रहे हैं।

राष्ट्र के प्रति सद्भावना -:3:-" यह मेरा वतन है। मेरा वतन है। देखता हूँ कौन मुझे जीने से रोकता है? हिम्मत है तो आओ, निकालो। एक- एक का सिर फोडूंगा।"११३

नासिरा शर्मा जी ने 'सरहद के पार' कहानी में राष्ट्र के प्रति सद्भाव को बहुत ही आकर्षक रूप से व्यक्त किया है इनकी इन पंक्तियों में मुख्य पात्र के राष्ट्रीय भावों को व्यक्त किया गया है। जैसा कि यहाँ अपनी राष्ट्रीयता सिद्ध करने के लिए वह पात्र विरोध कर्ता है और अपने वतन में रहने की भावना को व्यक्त करता है।

राष्ट्र के प्रति सद्भावना -:4:- " 'वन्दे मातरम् ' की ध्वनि हुई। तमाशाइयों में कुछ हलचल हुई। लोग दो-दो कदम और आगे बढ़ आये। स्वयंसेवकों ने दर्शकों को प्रणाम किया और मुस्कराते हुए लारी में जा बैठे। अमरकान्त सबसे आगे थे। लारी चलना ही चाहती थी, कि सुखदा किसी तरफ से दौड़ी हुई आ गयी। उसके हाथ में एक पुष्पमाला थी, लारी का द्वार खुला था। उसने ऊपर चढक़र वह अमरकान्त के गले में डाल दी। आँखों से स्नेह और गर्व की दो बूँदें टपक पड़ीं। लारी चली गयी। यही होली थी, यही होली का आनन्द-मिलन था। उसी वक्त सुखदा दूकान पर खड़ी होकर बोली- विलायती कपड़े खरीदना और पहनना देशद्रोह है! "[११४]

प्रेमचंद जी ने 'होली का उपहार' कहानी में राष्ट्र के प्रति सद्भाव को बहुत ही हृदयग्राही रूप से यहाँ प्रस्तुत किया है इनकी इन पंक्तियों में वंदे मातरम की ध्वनि से ही राष्ट्रीय भावना का हमें पता लग जाता है एवं होली के पावन अवसर पर अमरकांत के सहयोगी राष्ट्र के प्रति सद्भाव को बार- बार वंदे मातरम की ध्वनि करके देश प्रेम के भाव को व्यक्त कर रहे हैं।

राष्ट्र के प्रति सद्भावना -:5:- " मिस्टर पुरी ने एक बार फिर आँखें खोली। वे धीमें स्वर में फुसफुसाये- 'मैं यहाँ क्यों आया। मैं यहाँ से जा ही कहाँ सकता हूँ ? यह मेरा वतन है, हसन ! मेरा वतन.......!'"[११५]

विष्णु प्रभाकर की 'मेरा वतन' कहानी की उपर्युक्त पंक्तियों में पुरी जब हसन से अपने अंदर की वतन परस्त की भावना को व्यक्त करता है वहाँ उसकी राष्ट्र के प्रति सद्भाव को हम देख सकते हैं तथा पुरी कहते हैं कि यह मेरा वतन है मैं इसे छोड़ कहाँ जाऊँगा?

उपर्युक्त पुष्टि तथ्यों के आधार पर हमने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि जिस प्रकार मंज़ूर एहतेशाम जी की कहानियों में हमे पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, साम्प्रदायिक, सांस्कृतिक, भाषाई, राष्ट्र के प्रति सद्भावनाएँ देखने को मिल जाती हैं वैसे ही अन्य कई रचनाकार हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं में उपर्युक्त सद्भावनाओं का समावेश किया है।

निष्कर्ष:- अंततः हम इस निष्कर्ष पर पहुचे हैं कि मंज़ूर जी की कहानियाँ सद्भावना की सफल रचनाएँ हैं जो कि हिंदी कथा-साहित्य के परिवेश में अपना विशेष स्थान बनाए हुए हैं। मंज़ूर एहतेशाम जी की कहानियों में पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, साम्प्रदायिक, सांस्कृतिक, भाषाई, राष्ट्र के प्रति सद्भावनाएँ पाठक को भरपूर मिलती हैं। जिसकी पुष्टि हमने उपर्युक्त पुष्टि तथ्यों में की है। इनके साथ-साथ हिंदी कथा-साहित्य के अन्य कई लेखक हुए हैं जिन्होंने पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, साम्प्रदायिक, सांस्कृतिक, भाषाई, राष्ट्र के प्रति सद्भावनाओं का सफल प्रयोग अपनी रचनाओं में किया है। जिसकी तुलना में एहतेशाम जी की सद्भावना के पुष्टि तथ्य अधिक सटीक प्रतीत होते हैं। जो स्वयं के अनुभव के साथ इन्होंने रची है।

-: सन्दर्भ सूची :-

१:-मंज़ूर एहतेशाम, रमजान में मौत, सम्पूर्ण कहानियाँ, पृष्ठ संख्या - १७

२:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ,कहानी -खेल, पृष्ठ संख्या - २७

३:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी -छोटी - छोटी चीजें, पृष्ठ संख्या - ३३

४:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - बशीर खाँ, मालिक मॉडर्न केनिंग आर्ट, पृष्ठ संख्या - ५५

५:- एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - स. हरिश्चंद्र के जीवन की वह शाम, पृष्ठ संख्या - ६३

६:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - अंधेरे में, पृष्ठ संख्या - ७६-७७

७:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - घेरा, पृष्ठ संख्या - ८९

८:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - घेरा, पृष्ठ संख्या - ९२

९:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - उदास चाँदनी, पृष्ठ संख्या - १००

१०:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - उदास चाँदनी, पृष्ठ संख्या - १०६

११:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - धरती पर, पृष्ठ संख्या - १२१

१२:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - लड़ाई,, पृष्ठ संख्या - १२५

१३:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - क़ौम, पृष्ठ संख्या - १४१

१४:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - एक परंपरिक समस्या- प्रधान कहानी, पृष्ठ संख्या - १६३

१५:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - एक पारम्परिक- समस्या प्रधान कहानी पृष्ठ संख्या - १६६

१६:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - तलाफी, पृष्ठ संख्या - २०२

१७:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - तलाफी पृष्ठ संख्या - २११

१८:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - तमाशा, पृष्ठ संख्या - २५२

१९:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - तमाशा, पृष्ठ संख्या - २५७

२०:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - तसबीह, पृष्ठ संख्या - २८६

२१:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - ठंडे बस्ते, पृष्ठ संख्या - ३३०

२२ :- महात्मा गांधी, www.wikipedia.com, Date : १२-०६-२०१८

२३:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - खेल, पृष्ठ संख्या - २५

२४:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - बावड़ी, पृष्ठ संख्या - ४४

२५:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - बावड़ी, पृष्ठ संख्या - ४८

२६:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - बशीर खां मालिक मॉडर्न केनिंग आर्ट, पृष्ठ संख्या - ५३

२७:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - बशीर खां मालिक मॉडर्न केनिंग आर्ट, पृष्ठ संख्या - ५३

२८:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - स. हरिश्चंद्र के जीवन की वह शाम, पृष्ठ संख्या - ६४

२९ :- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - घेरा, पृष्ठ संख्या - ८६

३०:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - एक पारम्परिक समस्या- प्रधान कहानी, पृष्ठ संख्या - १६३

३१:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - एक पारम्परिक समस्या- प्रधान कहानी, पृष्ठ संख्या - १७९

३२:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी -बाकी सारी गाड़ियां, पृष्ठ संख्या - २२९

३३:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - कड़ी, पृष्ठ संख्या - २३५-२३६

३४:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - कड़ी, पृष्ठ संख्या - २४२

३५:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - तमाशा, पृष्ठ संख्या - २५६

३६:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - शादी के बहाने, पृष्ठ संख्या - २६७

३७:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - चंदा, पृष्ठ संख्या - २७८

३८:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - कला पुल, पृष्ठ संख्या - ३०१-३०२

३९:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - ठंडे बस्ते, पृष्ठ संख्या - ३१३

४०:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - रमज़ान में मौत, पृष्ठ संख्या - ९-१०

४१:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - बशीर खाँ, मालिक मॉर्डन केनिंग आर्ट , पृष्ठ संख्या - ५१

४२:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - बशीर खाँ, मालिक मॉर्डन केनिंग आर्ट , पृष्ठ संख्या - ५७

४३:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - अंधेरे में , पृष्ठ संख्या - ७९

४४:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - रिहाई , पृष्ठ संख्या - १३४

४५:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - क़ौम , पृष्ठ संख्या - १५०

४६:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - कड़ी , पृष्ठ संख्या - २३९

४७:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - तमाशा, पृष्ठ संख्या - २५१

४८:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - तसबीह , पृष्ठ संख्या - 281

४९:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - तसबीह , पृष्ठ संख्या - २८६

५०:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - चन्दा, पृष्ठ संख्या - २७८

५१मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - चन्दा, पृष्ठ संख्या - २७८

५२:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - तसबीह, पृष्ठ संख्या - २८७

५३:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - स. हरिश्चंद्र के जीवन की वह शाम, पृष्ठ संख्या - ६६

५४:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - एक फिल्म पोस्टर के हवाले से, पृष्ठ संख्या - ७३-७४

५५:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - उदास चाँँदनी, पृष्ठ संख्या - ९७

५६:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - रिहाई, पृष्ठ संख्या - १३५

५७:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - एक पारंपरिक - समस्या प्रधान कहानी, पृष्ठ संख्या - १६२-१६३

५८:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - तलाफी, पृष्ठ संख्या - २०१

५९:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - कड़ी, पृष्ठ संख्या - २४४-२४५

६०:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - तमाशा, पृष्ठ संख्या - २४९

६१:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - तसबीह, पृष्ठ संख्या - २८०

६२:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - तसबीह, पृष्ठ संख्या - २९१

६३:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - ठंडे बस्ते, पृष्ठ संख्या - ३१७

६४:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - छोटी - छोटी चीजें, पृष्ठ संख्या - ३२

६५ :- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - पुल पुख्ता, पृष्ठ संख्या - ४०

६६:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - बशीर खाँँ, मालिक माडर्न कनिंग आर्ट, पृष्ठ संख्या - ५७

६७:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - स. हरिश्चंद्र के जीवन की वह शाम, पृष्ठ संख्या-६३

६८:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - एक फिल्म पोस्टर के हवाले से, पृष्ठ संख्या -७३

६९:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - जश्न, पृष्ठ संख्या - ८२

७०:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - लौटते हुए, पृष्ठ संख्या - ११३

७१:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - कड़ी, पृष्ठ संख्या - २३५

७२:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - चन्दा, पृष्ठ संख्या - २७५

७३:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - चन्दा, पृष्ठ संख्या - २७९

७४:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - तसबीह, पृष्ठ संख्या - २८९

७५: मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - काला पुल, पृष्ठ संख्या - २९९

७६:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - रिहाई, पृष्ठ संख्या - १३४

७७:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - क़ौम, पृष्ठ संख्या - १३९

७८:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - रिश्ता, पृष्ठ संख्या - २१६-२१७

७९:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - भोपाल का बेगम - दरबार, पृष्ठ संख्या - २६४

८०:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - लड़ाई,, पृष्ठ संख्या - २६५

८१:- मंज़ूर एहतेशाम, सम्पूर्ण कहानियाँ, कहानी - ठंडे बस्ते, पृष्ठ संख्या - ३२८

८२:- संजय कुंदन, श्रेष्ठ हिंदी कहानियाँ, कहानी - बॉस की पार्टी, पृष्ठ संख्या - ४८

८३:- अमरकांत, श्रेष्ठ हिंदी कहानियाँ, कहानी - डिप्टी-कलेक्टरी, पृष्ठ संख्या - २२

८४:- कृष्णा सोबती, श्रेष्ठ हिंदी कहानियाँ, कहानी - दादी -अम्मा, पृष्ठ संख्या - ४६

८५:- श्री जैन महिला भूषण ब्रिजबलादेवी जैन, कहानी संग्रह भाग तीसरा, कहानी - लक्ष्मी, पृष्ठ संख्या - ११

८६:- मोहन राकेश, हिंदी कहानी संग्रह- भीष्म साहनी, कहानी - मलबे के मालिक, पृष्ठ संख्या-३९

८७:- श्री भगवती प्रसाद वाजपई, कहानी : नई - पुरानी, कहानी- मिठाई वाला, पृष्ठ संख्या - ८९-९०

८८:- मोहन राकेश, हिंदी कहानी संग्रह- भीष्म साहनी, कहानी - मलबे के मालिक, पृष्ठ संख्या-४२

८९:- http://gadyakosh.org/gk/एक_जीवी,_एक_रत्नी,_एक_सपना_/_अमृता_प्रीतम

९०:-
http://gadyakosh.org/gk/%E0%A4%AB%E0%A5%8D%E0%A4%B2%E0%A4%BE%E0%A4%88%E0%A4%9F_%E0%A4%86%E0%A4%A0_%E0%A4%B8%E0%A5%8C_%E0%A4%A6%E0%A4%B8_/_%E0%A4%95%E0%A4%AE%E0%A4%B2

९१:-
http://gadyakosh.org/gk/%E0%A4%9C%E0%A4%BF%E0%A4%BC%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E2%80%8D%E0%A4%A6%E0%A4%97%E0%A5%80_%E0%A

4%94%E0%A4%B0_%E0%A4%9C%E0%A5%8B%E0%A4%82%E0%A4%95_/_%E0%A4%85%E0%A4%AE%E0%A4%B0%E0%A4%95%E0%A4%BE%E0%A4%82%E0%A4%A4

९२:- श्रीमती कमला चौधरी, कहानी : नई - पुरानी, कहानी- अधूरा चित्र, पृष्ठ संख्या-१८१

९३:- भीष्म साहनी, हिंदी कहानी संग्रह, कहानी - वाङ्चू, पृष्ठ संख्या-९६

९४:- प्रेमचंद, मानसरोवर भाग-4, पृष्ठ संख्या- २६

९५:-

http://gadyakosh.org/gk/%E0%A4%B9%E0%A4%BF%E0%A4%82%E0%A4%B8%E0%A4%BE_%E0%A4%AA%E0%A4%B0%E0%A4%AE%E0%A5%8B_%E0%A4%A7%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%AE:_/_%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A5%87%E0%A4%AE%E0%A4%9A%E0%A4%82%E0%A4%A6

९६:- भीष्म साहनी, श्रेष्ठ हिंदी कहानीयाँ, कहानी - वाङ्चू, पृष्ठ संख्या - १३४

९७:- उदय प्रकाश, कहानी - पॉल गोमरा का स्कूटर, पृष्ठ संख्या -- ३७

९८:- उदय प्रकाश, कहानी - 'पीली छतरी वाली लड़की', पृष्ठ संख्या -- ११

९९:- उदय प्रकाश, कहानी - 'वारेन हेस्टिंग्स का सांड़', पृष्ठ संख्या – १०५

१००:- उदय प्रकाश, कहानी- दत्तात्रेय के दुख, पृष्ठ संख्या -- ४२

१०१:- मो. आरिफ, श्रेष्ठ हिंदी कहानियाँ, कहानी - तार पृष्ठ संख्या - ०६

१०२:- निर्मल वर्मा, श्रेष्ठ हिंदी कहानियाँ, कहानी - परिंदे, पृष्ठ संख्या - ७४

१०३:- मन्नू भण्डारी, श्रेष्ठ हिंदी कहानियाँ, कहानी - एक प्लेट सैलाब, पृष्ठ संख्या - ०६

१०४:-रमेश उपाध्याय, श्रेष्ठ हिंदी कहानियाँ, कहानी - ग़लत-ग़लत कहानी, पृष्ठ संख्या - ९३

१०५:- श्री चंद्रधर शर्मा गुलेरी, कहानी नई पुरानी, कहानी - उसने कहा था कहानी, पृष्ठ संख्या - ३९-४०

१०६:- राजेन्द्र यादव,ढोल और अपने पर संग्रह, कहानी-अभिमन्यु की आत्महत्या,पृष्ठ संख्या - १५९

१०७:- श्री रामचन्द्र तिवारी, कहानी : नई-पुरानी, कहानी - पिशाची कारा कहानी, पृष्ठ संख्या - १६६

१०८:- मोहन राकेश, हिंदी कहानी संग्रह, भीष्म साहनी, कहानी - मलबे का मालिक, पृष्ठ संख्या-३६

१०९:- भीष्म साहनी, कहानी - अपनी बात, पृष्ठ संख्या -१३४

११०:-
http://gadyakosh.org/gk/%E0%A4%B9%E0%A4%BF%E0%A4%82%E0%A4%B8%E0%A4%BE_%E0%A4%AA%E0%A4%B0%E0%A4%AE%E0%A5%8B_%E0%A4%A7%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%AE:_/_%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A5%87%E0%A4%AE%E0%A4%9A%E0%A4%82%E0%A4%A6

१११:- मो. आरिफ, श्रेष्ठ हिंदी कहानियाँ, कहानी - तार, पृष्ठ संख्या - ९

११२:-
http://gadyakosh.org/gk/%E0%A4%B9%E0%A5%8B%E0%A4%B2%E0%A5%80_%E0%A4%95%E0%A4%BE_%E0%A4%89%E0%A4%AA%E0%A4%B9%E0%A4%BE%E0%A4%B0_/_%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A5%87%E0%A4%AE%E0%A4%9A%E0%A4%82%E0%A4%A6

११३:- नासिरा शर्मा, पत्थर गली कहानी संग्रह, कहानी - सरहद के पार, पृष्ठ संख्या - ३०

११४:-
http://gadyakosh.org/gk/%E0%A4%B9%E0%A5%8B%E0%A4%B2%E0%A5%80_%E0%A4%95%E0%A4%BE_%E0%A4%89%E0%A4%AA%E0%A4%B9%E0%A4%BE%E0%A4%B0_/_%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A5%87%E0%A4%AE%E0%A4%9A%E0%A4%82%E0%A4%A6

११५:- श्री विष्णु प्रभाकर, कहानी : नई-पुरानी, कहानी - मेरा वतन कहानी पृष्ठ संख्या - १८०

-:छायाचित्र:-

छायाचित्र-:१:- शोधार्थी द्वारा प्रत्यक्ष रूप में एहतेशाम जी से भेंट-वार्ता के दौरान लिया गया छायाचित्र, दिनाँक-१०-०२-२०१६।

छायाचित्र-:२:- शोधार्थी द्वारा स्वयं लिया गया छायाचित्र।